RNI No. UPHIN/2000/3766
ISSN No. 2581-3528 ₹:20

केशव संवाद

आषाढ़-श्रावण, विक्रम सम्वत् 2079 (जुलाई-2022)

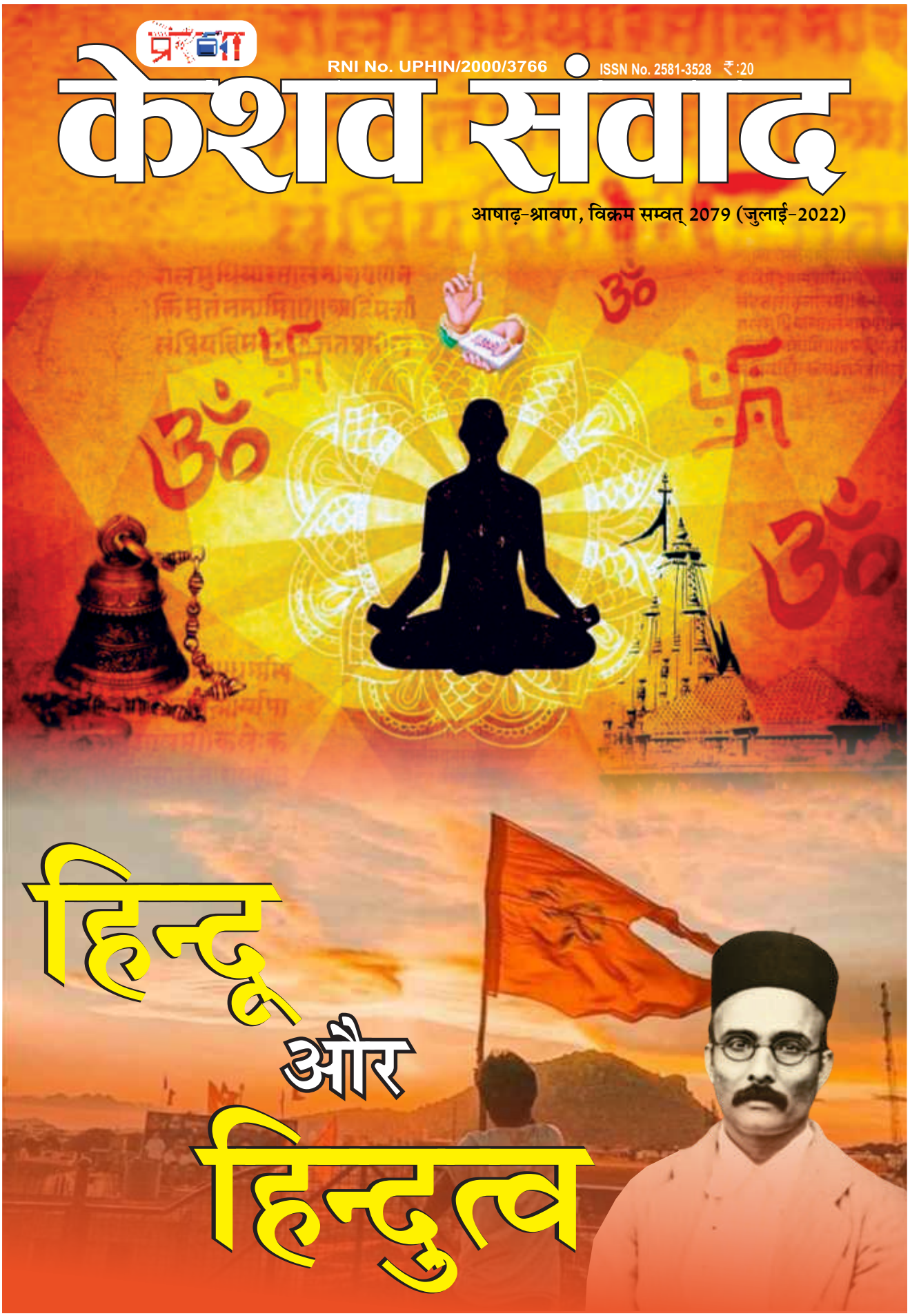

हिन्दू और हिन्दुत्व

जुलाई 2022, आषाढ़-श्रावण विक्रम सम्वत् 2079 हिन्दी पंचांग

रविवार		चतुर्थी (शुक्ल) 4 3	एकादशी (शुक्ल) 11 10	चतुर्थी (कृष्ण) 4 17	एकादशी (कृष्ण) 11 24	तृतीया (शुक्ल) 3 31
सोमवार		पंचमी (शुक्ल) 5 4	द्वादशी (शुक्ल) 12 11	पंचमी (कृष्ण) 5 18	द्वादशी (कृष्ण) 12 25	
मंगलवार		षष्ठी (शुक्ल) 6 5	त्रयोदशी (शुक्ल) 13,14 12	षष्ठी (कृष्ण) 6 19	त्रयोदशी (कृष्ण) 13 26	
बुधवार		सप्तमी (शुक्ल) 7 6	○ पूर्णिमा 15 13	सप्तमी (कृष्ण) 7 20	चतुर्दशी (कृष्ण) 14 27	
गुरुवार		अष्टमी (शुक्ल) 8 7	प्रतिपदा (कृष्ण) 1 14	अष्टमी (कृष्ण) 8 21	● अमावस्या 15 28	
शुक्रवार	द्वितीया (शुक्ल) 2 1	नवमी (शुक्ल) 9 8	द्वितीया (कृष्ण) 2 15	नवमी (कृष्ण) 9 22	प्रतिपदा (शुक्ल) 1 29	
शनिवार	तृतीया (शुक्ल) 3 2	दशमी (शुक्ल) 10 9	तृतीया (कृष्ण) 3 16	दशमी (कृष्ण) 10 23	द्वितीया (शुक्ल) 2 30	

जुलाई 2022 त्यौहार

01 शुक्रवार — जगन्नाथ रथयात्रा	10 रविवार — देवशयनी एकादशी	11 सोमवार — प्रदोष व्रत
12 मंगलवार — जयापार्वती व्रत प्रारम्भ	13 बुधवार — कोकिला व्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, आषाढ़ पूर्णिमा, अन्वाधान	14 गुरुवार — इष्टि
16 शनिवार — जयापार्वती व्रत समाप्त, कर्क संक्रान्ति, गजानन संकष्टी चतुर्थी	24 रविवार — कामिका एकादशी	25 सोमवार — प्रदोष व्रत
28 गुरुवार — दर्श अमावस्या, अन्वाधान, श्रावण अमावस्या	29 शुक्रवार — इष्टि	30 शनिवार — चन्द्र दर्शन
	31 रविवार — हरियाली तीज	

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

जुलाई, 2022
वर्ष : 22 अंक : 07

अणंज कुमार त्यागी
अध्यक्ष
प्रे. शो. सं. न्यास

संपादक
कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

संपादक मंडल
डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. अखिलेश मिश्र,
डॉ. नीलम कुमारी, रामकुमार शर्मा
डॉ. मनमोहन सिंह, अनीता चौधरी
अनुपमा अग्रवाल, अमित शर्मा

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन न. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से
मुद्रक/प्रकाशक सुखवीर प्रकाश द्वारा
चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि.
नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन
105, आर्यनगर सूरजकुंड रोड
मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

हिन्दु, हिन्दुत्व व हिंदुवाद	- रतन शारदा.....05
दंगे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति पर कुठाराघात	- प्रो. अनिल निगम.....06
विश्व में हिंदुत्व की गूंज	- डॉ. आनंद मधुकर.....08
विश्व पटल पर हिन्दुत्व का बदलता स्वरूप	- डॉ. वेद प्रकाश शर्मा..10
हिन्दुत्व और ज्योतिष	- अमित शर्मा.....12
हिन्दुत्व और हिन्दुइज्म : धर्म और पंथ में अंतर	- डॉ. सुनीता शर्मा.....13
वैश्विक स्तर पर पनप रहे आतंकवाद का हल...	- प्रहलाद सबनानी.....14
भारत का छुपा हुआ तथ्यपरक इतिहास	- प्रो. बी. एस. राजपूत..16
अनुपम स्थापत्य कला की विरासत रामप्पा मंदिर	- प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह...18
संचार तन्त्र की विवशता	- नरेन्द्र भदौरिया.....20
गुरु पूर्णिमा	- राम कुमार शर्मा.....21
कानून नहीं, जागरूकता से ही दूर होगा बालश्रम...	- स्वाति सिंह.....22
'प्रेम सदा मन राखिये, मानवता हो धर्म'	- अनुपमा अग्रवाल.....23
भारत की पहली महिला पत्रकार हेमन्त कुमारी...	- डॉ. नीलम कुमारी.....24
पुस्तक समीक्षा- रामराज्य (RAM RAJYA)	- डॉ. मनमोहन सिंह.....26
कैसी होनी चाहिए भविष्य के भारत की शिक्षा	- मोनिका चौहान.....28
देश में लापता हुए 100 से ज्यादा ऐतिहासिक...	- प्रतीक खरे.....29
कैसे खेलन जाबो सावन में कजरिया बदरिया...	- नीलम भागी.....30
राष्ट्रीय बनाम नकली विमर्श	- पंकज जयस्वाल 32
उत्तर प्रदेश में अब बहेगी धार्मिक और...	- मृत्युंजय दीक्षित.....33
पत्रिका के जून अंक की समीक्षा	- डेस्क.....34

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

भारत की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुआ शब्द 'हिन्दू' अपने आप में भारत की सांस्कृतिक विरासत व सहिष्णुता को परिलक्षित करता है। सदियों से भारत में आस्था, सम्मान व स्वस्थ संवाद की प्रमुखता ने हिन्दू धर्म के ध्वज को सुदृढ़ता प्रदान की है। जिसके कारण विश्व में हिन्दू धर्म के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव है। आज भारतीय जीवन दर्शन या यूं कहे हिन्दू जीवन पद्धति (हिन्दू सनातन संस्कृति) एक आदर्श के रूप में उपस्थित है जो वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः व सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की मूल अवधारणा से ओतप्रोत है। धर्म, ज्ञान, विज्ञान व आयुर्वेद को समाहित करता हुआ हिन्दू धर्म सर्वपंथ समभाव को प्राथमिकता देता है। वही योग ने जीवन दर्शन के रूप में विश्व को अनमोल उपहार देकर जनमानस की शारीरिक व आध्यात्मिक प्रवृत्तियों को दृढ़ व स्वस्थ बनाया। आज इसी का अनुसरण व अनुसंधान कर स्वस्थ मन व स्वस्थ शरीर से लोग लाभान्वित हो रहे।

यह सत्य है व सर्वविदित है कि बलपूर्वक जीतने और विजय स्थापित करने का मूल्य शून्य होता है जबकि स्नेह व सद्आचरण से किसी के हृदय पर विजय प्राप्त करना अमूल्य है। ऐसे कई उदाहरण उपस्थित है जिसने इन बातों को चरितार्थ किया है और हिन्दुत्व को गौरवान्वित किया है। अगर ध्यान से समझा जाये तो हिन्दू धर्म मानवता का धर्म है जहां द्वेष, विद्रोह, हिंसा का कोई स्थान नहीं। हिन्दू धर्म के अनुयायियों ने तो अपने मंदिरों को तोड़े जाने या धर्म परिवर्तन जैसे अमानवीय कृत्यों पर कभी भी आक्रामक प्रतिक्रिया नहीं की। उनकी इस उदारता व सहिष्णुता को कमजोरी मानकर उन्हें उनके अधिकारों से भी वंचित रखा गया। आज जब परिस्थितियां बदली है और वह अपने अधिकारों के लिए सजग व मुखर हो रहे हैं तो अलोकतांत्रिक वाह्य व आंतिरक शक्तियां अलग-अलग हथकंडे अपना रही है। सांप्रदायिक परिवेश को खण्डित व दूषित करने की मंशा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। भारत एक मजबूत लोकतांत्रिक देश है जहां सभी को अपनी बाते रखने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। फिर इस प्रकार की हिंसा क्यों? निश्चित रूप से ऐसा उग्र प्रदर्शन व तोड़फोड़ सामान्य तो नहीं दिखता और न ही अपने अधिकारों के प्रति सजगता को दर्शाता है। आप किसी विचार के प्रति सहमत या असहमत हो सकते है लेकिन आप ही सही हैं यह मान लेना तो उपयुक्त नहीं। किसी भी समस्या का निवारण केवल संवाद से ही सम्भव है। फिर संवाद अंत में क्यों? प्राथमिकता के आधार पर होना चाहिए। राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए अपनी सोच को इतना सुदृढ़ बनाइये कि कोई बाहरी उसमें हस्तक्षेप न कर पायें। केशव संवाद का यह अंक समसामयिक विषयों पर केन्द्रित है। आशा है यह अंक सुधी पाठकों की आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

हिन्दु, हिन्दुत्व व हिंदुवाद

रतन शारदा

उपरोक्त दो शब्दों – हिन्दु एवं हिन्दुत्व पर व्यापक चर्चाएं, वाद एवं लेखन हो चुका है। उसे इस छोटे लेख में रखना कुछ कठिन है। हिंदुवाद अब एक नया शब्द वाद–विवाद के लिए खड़ा किया गया है। पहले तो हम इसे अपनी चर्चा से निकाल दें तो विषय अधिक स्पष्टता से रखा जा सकता है। हिन्दु विचार या दर्शन साम्यवाद या पूंजीवाद या इस्लाम की भांति ठहर चुका विचार नहीं है। यह सरोवर नहीं, एक बहता हुआ प्रवाह है, जो समय के अनुसार अपनी धारा को नया रूप देता है, परंतु अपनी मानव कल्याण की दिशा नहीं बदलता।

हिन्दुत्व का अर्थ तो स्पष्ट ही है। हिन्दु दर्शन का तत्व या सार। हिन्दु दर्शन इतना विस्तृत है। जिस प्रकार बरगद के पेड़ की शाखाएं धरती में फिर प्रवेश करती हैं और धीरे धीरे कालांतर में पता ही नहीं चलता कि तना कौन सा है और शाखा कौन सी है; उसी तरह हिन्दु दर्शन से विस्तृत हुए पंथ और विचारों को गिनना और समझना इसके लिए एक व्यक्ति या एक जन्म काफी नहीं है। परंतु इसके कुछ तत्व सर्वव्यापी हैं जो हर दार्शनिक और पंथ मानते हैं।

आपको अपनी मुक्ति या निर्वाण या शून्य प्राप्ति के लिए कौन से मार्ग को चुनना है, यह आपकी प्रकृति या वृत्ती पर निर्भर है। यह हिन्दु होने का पहला और सबसे विशेष अद्‌भुत लक्षण है। आप अपना मार्ग स्वयं चुन सकते हैं। एकम सत विप्रा बहुधा वदन्ति इसी मार्ग चुनने की छूट है। यह हिन्दुत्व है। इसी तरह सर्वंखलविदं ब्रह्म – यह सब ब्रह्म है, अर्थात् सभी में ईश्वर का वास है अतः आप किसी को ऊंच नीच या पराया मान नहीं सकते। आप जब किसी की सेवा करते हैं तो ईश्वर की ही सेवा करते है। मेरी नियति मेरे कर्म फल पर आधारित है और अपने कर्मों द्वारा मैं अपनी नियति को बदल सकता हूँ। आत्मा अमर है, शरीर क्षरित होता है, और अपने कर्म के आधार पर पुनर्जन्म ले सकता हूँ या मुक्ति पा सकता हूँ।

प्रकृति को पूजना यह कर्म कांड नहीं है। यह प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता है, क्योंकि हम जानते हैं कि प्रकृति है तो हम हैं। पेड़, पौधे, जल, अन्य प्राणी हैं तो हम हैं। सूर्य की ऊष्मा है, इसलिए प्रकृति और हम हैं। इसलिए प्रकृति का संवर्धन करना हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है। यह पूजा इस भाव को बल देती है। ईश्वर की दृष्टि सभी जीवित प्राणियों को पृथ्वी और उसकी प्रकृति को भोगने का अधिकार है। इसलिए हमारा शांति मंत्र यह स्मरण करवाता है। पृथ्वी केवल मानव के भोग के लिए नहीं बनी। इसलिए 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' का मंत्र दिया।

जो इन तत्वों को मानता है, वह हिन्दु है। इन दार्शनिक तत्वों के अलावा भी सांस्कृतिक और भौगोलिक मानक और गुण हैं जो हिन्दु परिभाषित करते हैं। हिन्दु शब्द वास्तव में अपेक्षाकृत नया है। भारत और हिन्दू पर्यायवाची मान सकते हैं। हम ऐसे राष्ट्र के वासी हैं जो शायद एक मात्र भूगोल द्वारा परिभाषित राष्ट्र है। ऐसा राष्ट्र जिसका वर्णन चाणक्य ने किया, महाकवि कालिदास ने किया और विष्णु पुराण इत्यादि ने किया है। भौगोलिक दृष्टि से स्वतंत्र सुरक्षित समृद्ध और संतुष्ट जीवन जीने वाले यहाँ के रहने वाले लोगों के गुण भी विश्व से अलग और सार्थक थे। यही लोग हिन्दू या भारतीय कहलाये। इनकी संस्कृति भी विश्व को मार्ग दिखाने वाली।

अतिथि देवो भवः भी इसी संस्कृति का एक गुण है। चाहे कुछ हिंदुओं ने परिस्थितिवश पंथ या पूजा पद्धति बदल ली हो, इस प्रकार के गुण नहीं बदले। हमने संगीत और नृत्य को भी प्रभु तक पहुँचने का मार्ग माना। इसलिए हर पंथ का कलाकार मंच पर जाता है तो उसे झुक कर प्रणाम करता है। हमारे व्यापारी ने व्यापार की गद्दी को भी पूजन योग्य माना। इसलिए कोई व्यक्ति मालिक की गद्दी पर नहीं बैठता और यदि उसे कोई बिठाता है तो इसे सबसे उच्च मान माना जाता है। वह अपने तराजू और कैंची इत्यादि की भी पूजा करता है। वह लाभ नहीं 'शुभ लाभ' कमाना चाहता है। धर्म कांटा किसी पंथ या जाती का कांटा नहीं है। वह ईमानदारी का कांटा या तराजू है। भारतीय खेल भी चरित्र को उच्चता की ओर ले जाते हैं। मोक्षपट (आज का सांप सीढ़ी) पुण्य और पाप, सही गलत क्या है, यह सिखलाता है। कबड्डी और खो–खो एकमात्र ऐसे खेल हैं, जिनमें पुनर्जन्म की परिकल्पना है। यहाँ दुकानदार तौलने के बाद कुछ ऊपर से डालता है, यह धर्म आधारित भारतीय या हिन्दू सोच है, किसी पंथ की सोच नहीं।

भारत की भौगोलिक कल्पना कितनी प्राचीन है यह कहना कठिन है। चाहे वह कुम्भ हो, चाहे चार धाम हों, बारह ज्योतिर्लिंग हों, या बावन शक्ति पीठ हों। सबके पीछे, सारा भारतवर्ष एक है, और उसका विस्तार कहाँ तक है, यह भाव है।

यह संस्कृति और गुण ही हिन्दुत्व है। जो इस संस्कृति और इसके इतिहास को अपना मानता है वह हिन्दू है।

(लेखक आरएसएस के विचारक एवं लेखक हैं)

ISSN No. 2581-3528

दंगे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संस्कृति पर कुठाराघात

प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार निगम

पैगम्बर मुहम्मद पर कथित तौर पर विवादित टिप्पणी के खिलाफ देश के विभिन्न हिस्सों में पत्थरबाजी से भड़की हिंसा के पीछे सुनियोजित षड्यंत्र था। इसके पीछे होने वाली साजिश की परतें लगातार अनावृत हो रही हैं। लेकिन इस आलेख में मंथन का विषय यह नहीं है। बल्कि मुझे विश्लेंषण इस तथ्य का करना है कि इस हिंसा का राष्ट्र और देश के विकास पर कितना प्रतिकूल असर पड़ने वाला है। 10 जून को जुमे की नवाज के बाद देश के विभिन्न हिस्सों में प्रदर्शन और फिर पत्थरबाजी शुरू हो जाती है। देखते ही देखते देश भर में आगजनी, तोड़फोड़ और हिंसक झड़पें होने लगती हैं।

इस प्रकार की होने वाली हिंसा से भारतीय संस्कृति के मूल वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संस्कृति को गहरा आघात पहुंचता है। कानपुर में 3 जून को हुई हिंसा के पीछे मुख्य मकसद केवल चंद्रेश्वर हाता से हिंदुओं को भगाना नहीं था, यह एक इरादतन बड़ी साजिश थी। एसआइटी (विशेष जांच दल) ने हयात जफर एंड कंपनी के रिमांड के लिए अदालत में दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि उपद्रव के पीछे भारत को बदनाम करने की मंशा थी और आरोपित इसमें सफल भी हुए।

तोड़फोड़, आगजनी और हिंसा की घटनाओं से सार्वजनिक एवं निजी संपत्ति की हानि होती है। कर्फ्यू लग जाता है, बाजारों में सन्नाटा पसर जाता है। अशांति के माहौल में कोई निवेशक निवेश करना उचित नहीं समझता। इस तरह की स्थिति देश विदेश के निवेशकर्ताओं के दिलोदिमाग में यह भावना पैदा कर रही है कि देश के विभिन्न हिस्सों में कानून और व्यंवस्था की स्थिति बेहद खराब है। इसलिए वे भारत में निवेश करने से दूरी बना सकते हैं।

इसी तरह प्रयागराज के अटाला में हुए बवाल के मास्टरमाइंड जावेद पंप के घर में मिले एक पर्चे में दर्ज अपील से भी ऐसे ही संकेत मिले हैं। पर्चे में लिखा है– 'सुनो साथियो, 10 जून को जुमा के दिन अटाला पहुंचना होगा। वहां इकट्ठा होना है। जो भी अड़चन बनेगा, उस पर वार करना होगा। हमें अदालत पर विश्वास नहीं है।' पुलिस ने यहां 59 आरोपितों का पोस्टर जारी कर पहचान शुरू की।

कानपुर से हिंसा की शुरुआत की वजह उस दिन राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कानपुर में मौजूदगी थी। उस दिन जुमे का दिन भी था। उपद्रवियों को पता था कि इस दिन हिंसा हुई तो विवादास्पद बयान का मामला तत्काल तूल पकड़ लेगा और भारत की बदनामी होगी।

उपद्रव की साजिश रचने वालों की यह योजना सफल भी हुई, क्योंकि 3 जून के बाद अचानक से यह मुद्दा इतना बड़ा हो गया कि खाड़ी देशों के अलावा अलकायदा जैसा आतंकी संगठन भी विवाद में कूद पड़ा। इससे

ISSN No. 2581-3528

स्पष्ट है कि यह साजिश कानपुर से बाहर रची गई, जिसमें हयात जफर की बाजार बंदी के आह्वान को आगे रखकर अंजाम दिया गया।

3 जून और 10 जून की हिंसा के बाद देश विदेश में ऐसा माहौल बनने लगता है कि भारत में धार्मिक असहिष्णुता के कारण माहौल अशांत हो गया है। इस पर कई देश के नेताओं की भारत के खिलाफ बयानबाजी भी आई है। इन सबका सीधा असर देश के आर्थिक विकास पर पड़ने वाला है। धार्मिक कट्टरता से व्यक्तियों में विद्वेष पैदा होता है, जो राष्ट्र के निर्माण और देश के विकास में बहुत बड़ा रोड़ा है। भारतीय संविधान में भी स्वधर्म पालन की सभी को स्वतंत्रता है, लेकिन इसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं है। धर्म निजी आस्था एवं मान्यता है, जिसका अनुसरण लोग अपने अपने तरीके से कर सकते हैं लेकिन घर से बाहर सब भारतीय हैं।

उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, झारखंड सहित विभिन्न स्थानों पर हुई हिंसा के बाद पुलिस जांच में पता चला कि तीन दिन से युवाओं को इंटरनेट मीडिया के माध्यम से सड़कों पर उतरने के लिए उकसाया जा रहा था। इसके लिए यू–ट्यूब व वाट्सएप ग्रुप पर वीडियो भेजे गए थे। उत्तर प्रदेश में तो पूरे सूबे में दंगे कराने का कुचक्र रचा गया था। इसका खुलासा सहारनपुर, प्रयागराज और कानपुर में पकड़े गए आरोपियों ने भी किया। आरोपियों ने बताया कि उन्हें वाट्सएप ग्रुप पर एक वीडियो का लिंक भेजा गया था जिसमें व्यक्ति जो खुद को मौलवी बता रहा था, वह युवाओं को वीडियो के जरिए भड़का रहा था। वीडियो देखने के बाद ही उन्होंने सड़कों पर उतरकर बवाल किया था।

गौरतलब है कि दिल्ली के मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट पुरुषोत्तम पाठक ने पूर्व दिल्ली में 24 फरवरी को नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोध में भड़के दंगों के बारे में कहा था कि दंगे दंगाइयों की सुनियोजित साजिश का नतीजा थे। इन दंगों में दिल्ली पुलिस के एक हेड कांस्टेबल की जान चली गयी थी। अदालत ने कहा, 'गवाहों के बयानों और आरोप पत्र से प्रथम दृष्टया सामने आया कि 24 फरवरी को हुए दंगे आरोपियों की सुनियोजित साजिश का परिणाम थे। इसमें एक पुलिस अधिकारी की हत्या कर दी गयी, कई पुलिस अधिकारी और आम लोग घायल हो गए तथा कई संपत्तियों को आग के हवाले कर तबाह कर दिया गया। उसने कहा कि उन्होंने दंगों को अंजाम देने, हत्या करने तथा अन्य कथित अपराधों के तरीकों का षड्यंत्र रचा और वे चांद बाग में समान मंशा तथा गैरकानूनी मकसद के साथ एक दूसरे के साथ साजिश रचते हुए गैरकानूनी तरीके से भीड़ को जमा करने में शामिल थे।

पुलिस की जांच में मिले साक्ष्य और अदालत की टिप्पणी दोनों ही इस बात के सबूत हैं कि साजिशकर्ता नागरिकों के बीच धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समरसता एवं भाईचारे को खत्म कर देना चाहते हैं। इससे आम जन को और देश की आर्थिक व्यवस्था को नुकसान होता है। तोड़फोड़, आगजनी और हिंसा की घटनाओं से सार्वजनिक एवं निजी संपत्ति की हानि होती है। कर्फ्यू लग जाता है, बाजारों में सन्नाटा पसर जाता है। अशांति के माहौल में कोई निवेशक निवेश करना उचित नहीं समझता। इस तरह की स्थिति देश विदेश के निवेशकर्ताओं के दिलोदिमाग में यह भावना पैदा कर रही है कि देश के विभिन्नि हिस्सों में कानून और व्यवस्था की स्थिति बेहद खराब है। इसलिए वे भारत में निवेश करने से दूरी बना सकते हैं।

हमारे समक्ष कई वैश्विक उदाहरण भी मौजूद हैं कि जिन भी देशों में धार्मिक कट्टरता अधिक बरती गई और सामाजिक समरसता समाप्त हुई है, वहां उसके विकास में प्रतिकूल असर पड़ा है। तालिबान, अल कायदा, जैश–ए–मोहम्मद और आइएसआइएस जैसे संगठन धार्मिक कट्टरता की ही देन हैं। इसी वजह से सीरिया, इराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और नाइजीरिया जैसे देश धार्मिक कट्टरता की राह पकड़कर पतन की राह पर चल पड़े हैं।

जिस तरीके से देश में सामाजिक समरसता को साजिशन चोट पहुंचाई जा रही है, वह राष्ट्र के निर्माण और विकास में बहुत बड़ी अड़चन है। भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति है। इसलिए सभी समुदायों के लोगों को 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया' की परिकल्पंना को साकार करने के लिए पूरी शुचिता और प्रतिबद्धता के साथ काम करते हुए एक सशक्त व समृद्ध समाज एवं राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रतिबद्धता और कर्तव्यपरायणता के साथ निरंतर काम करना चाहिए।

(लेखक आईएमएस, गाजियाबाद में पत्रकारिता एवं जनसंचार संकाय के चेयरपर्सन हैं)

केशव संवाद मासिक पत्रिका के डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ें एवं केशव संवाद को सोशल मीडिया पर **FOLLOW** करें।

केशव संवाद

FACEBOOK

Keshav Samvad @keshavsamvad @KeshavSamvad samvadkeshav

ISSN No. 2581-3528

विश्व में हिंदुत्व की गूंज

डॉ. आनंद मधुकर

सर्वप्रथम हमें हिंदुत्व को जानने और समझने के लिए हिंदू शब्द को समझना आवश्यक है। हिंदू शब्द उन व्यक्ति समूहों से संबंधित है जो आर्य कहे जाते हैं और जिस समूह का फैलाव संपूर्ण आर्यावर्त अर्थात् हिमालय से लेकर समुद्र तक था। हिमालय पर्वत श्रृंखलाएं इराक, ईरान, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, तिब्बत, वर्मा और चीन तक फैली हैं अर्थात् इस समस्त भूखंड पर रहने वाला मानव समूह आर्य था। कालांतर में भौगोलिक संघर्षों के बीच यह आर्यावर्त सिकुड़ता चला गया और साथ में इसका नाम भी बदलता रहा। कभी इसे भारत, कभी हिंदुस्तान अर्थात् हिंदुओं का निवास स्थान, कभी सिंधु नदी के पूर्व का भूभाग सिंधु/इन्दु और अंत में इंडिया कहा गया, और इसमें निवास करने वाले सभी लोग हिंदू कहलाये।

इस हिंदू जाति की जीवन जीने की एक विशेष पद्धति है। हमारे ऋषियों द्वारा लंबी तपस्या के बाद जीवन का लक्ष्य क्या है, मनुष्य का नैतिक आचरण कैसा हो, मनुष्य व विश्व का सम्बन्ध और विश्व का स्वरूप क्या है, सत्य क्या है, ज्ञान की पद्धति कैसी हो इत्यादि की खोज की गई, जो हिंदू जाति का धर्म कहलाया। हिंदू धर्म जड़ या स्थिर नहीं है और ना ही इसकी घोषणा किसी देवदूत ने की है। यहाँ धर्म का अर्थ रिलिजन (religion) से भी नहीं है, बल्कि यह तो एक जीवन पद्धति और विचारों का समूह है जो लम्बे समय काल में विकसित हुए हैं। ऋषियों व मुनियों ने हजारों वर्ष की खोज के परिणाम स्वरुप पाया कि प्रकृति विभिन्न नियमों से संचालित होती है जैसे अग्नि का कार्य ताप देना, वायु का जीवन शक्ति देना, जल का कार्य बहना है। पौधे से कली बनना, कली से फूल, फूल से बीज बनना और बीज से पुनः पौधे का जन्म होना इत्यादि यह सभी कार्य प्रकृति नियमबद्ध और समयबद्ध तरीके से करती है।

व्यक्ति की विशेषता उसका व्यक्तित्व होता है। समाज अथवा सामाजिक जीवन में किसी व्यक्ति को नहीं, व्यक्तित्व को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। व्यक्ति अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण ही महान कहलाता है और इतिहास में अमर हो जाता है। व्यक्तित्व, व्यक्ति के विचार व उसके कार्यों से बनता है। निश्चित ही व्यक्ति के बिना व्यक्तित्व का निर्माण संभव नहीं है। जिस प्रकार व्यक्ति से व्यक्तित्व का निर्माण होता है, ठीक उसी प्रकार हिंदू से हिंदुत्व का निर्माण हुआ है। हिंदू देह है तो हिंदुत्व उसकी आत्मा है।

हिंदुत्व विश्व की सबसे प्राचीन परंतु विकसित सभ्यता एवं संस्कृति है। हिंदुत्व कोई धर्म नहीं है, बल्कि यह तो एक जीवन पद्धति है, विचार है, दर्शन है जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को लक्ष्य मानकर व्यक्ति व समाज को नैतिक, भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति का अवसर प्रदान करती है। साथ ही समस्त विश्व के कल्याण व उत्थान का चिंतन करना, किसी से किसी भी प्रकार का भेद न करना, सभी में ईश्वर के अंश का दर्शन करना इसकी मूलभूत विशेषताएं हैं। आत्मा के विकास के विभिन्न सोपान, योग, ध्यान, जप, तप, उपासना की विधियों के द्वारा सत्य की खोज करना भी यह जीवन पद्धति सिखाती है।

हिंदुत्व एक ऐसा संपूर्ण विचार है जहां पर साधना द्वारा स्वयं को जानना और कार्य की प्रधानता स्वीकार की गई है। हिंदुत्व सभी उत्कृष्ट व मानव उपयोगी विचारों को समान रूप से स्वीकार करता है, परन्तु वह किसी भी प्रकार के अन्यायपूर्ण भेदभाव, ऊंच–नीच के विचार को अस्वीकार करता है। हिंदुत्व में सभी में परमात्मा का अंश है। सभी अपने गुणों व कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करते हैं। कर्म की प्रधानता अर्थात् कर्म के अनुसार सृष्टि का चक्र चलता रहता है। व्यक्ति के कर्म ही यह तय करते हैं कि आपको कौन से मार्ग पर जाना है और उसका कर्म ही उसकी नियति है। मनुष्य को अपने आत्मीय विकास के साथ साथ प्रकृति को अधिक से अधिक वापस करने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए, जो उसने प्रकृति से ही प्राप्त किया है।

समय के साथ आधुनिक विश्व में विभिन्न धर्मों और नवीन विचारधाराओं का उदय हुआ। सैन्य व आर्थिक शक्ति के आधार पर विभिन्न साम्राज्य भी स्थापित हुए। मैं ही श्रेष्ठ व्यक्ति व श्रेष्ठ समाज हूं, मेरी विचारधारा से भिन्न सभी गलत पथ पर हैं जिन्हें या तो सही पथ पर लाया जाना चाहिए अथवा समाप्त कर देना चाहिए – ऐसा विचार भी बलवती हुआ। व्यक्तिवादी, उपभोक्तावादी, भौतिकवादी, साम्यवादी इत्यादि विचारधाराओं का प्रभाव बढ़ा। इस सब के परिणामस्वरूप विश्व अशांति व असंतुलन के मार्ग पर चल पड़ा।

आज विश्व समुदाय अनेक शक्ति गुटों में विभाजित है और नाभिकीय हथियारों की होड़ जारी है। तथाकथित विकास व सभ्यता के आधुनिक युग में भी रूस यूक्रेन जैसे विनाशकारी युद्ध हो रहे हैं। दूसरी ओर, प्रकृति के अंधाधुंध दोहन व हस्तक्षेप से जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएं मानव अस्तित्व के लिए खतरा बन रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आज विश्व की बड़ी मानव संख्या डिप्रेशन या मानसिक अवसाद का शिकार है। विश्व में आत्महत्या के मामलों में वृद्धि हुई है। इस परिस्थिति में व्यक्ति, समाज और प्रकृति के स्वस्थ संबंधों का यक्ष प्रश्न सामने आ खड़ा हुआ है।

मनुष्य की उत्पत्ति केवल पृथ्वी पर माता–पिता के द्वारा जन्म देने से नहीं हुई है और न ही व्यक्ति का जन्म प्रकृति का उपभोग करने के लिए हुआ है। मनुष्य की उत्पत्ति पांच भूतों आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी जैसे कारकों के एक साथ उपलब्ध होने के कारण हुई है। ब्रह्मांड में हजारों गैलेक्सी में से यह कारक पृथ्वी पर मौजूद हैं इसलिए केवल पृथ्वी पर ही जीवन संभव है। इन कारकों में से किसी भी एक कारक का असंतुलन हो जाने से पृथ्वी पर जीवन समाप्त होने में अधिक समय नहीं लगेगा। विश्व में जीवन चलता रहे, इसके लिए तथाकथित आधुनिक विकसित भौतिकवादी उपभोक्तावादी सभ्यताओं पर कोई विचार अथवा समाधान नहीं है। वहीं दूसरी ओर पृथ्वी पर शांतिपूर्ण जीवन के लिए प्रत्येक जीवधारी, वनस्पति, जल, वायु, अग्नि आदि का संतुलन उचित प्रकार बना रहे यह विचार केवल हिंदुत्व के पास है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।

ISSN No. 2581-3528

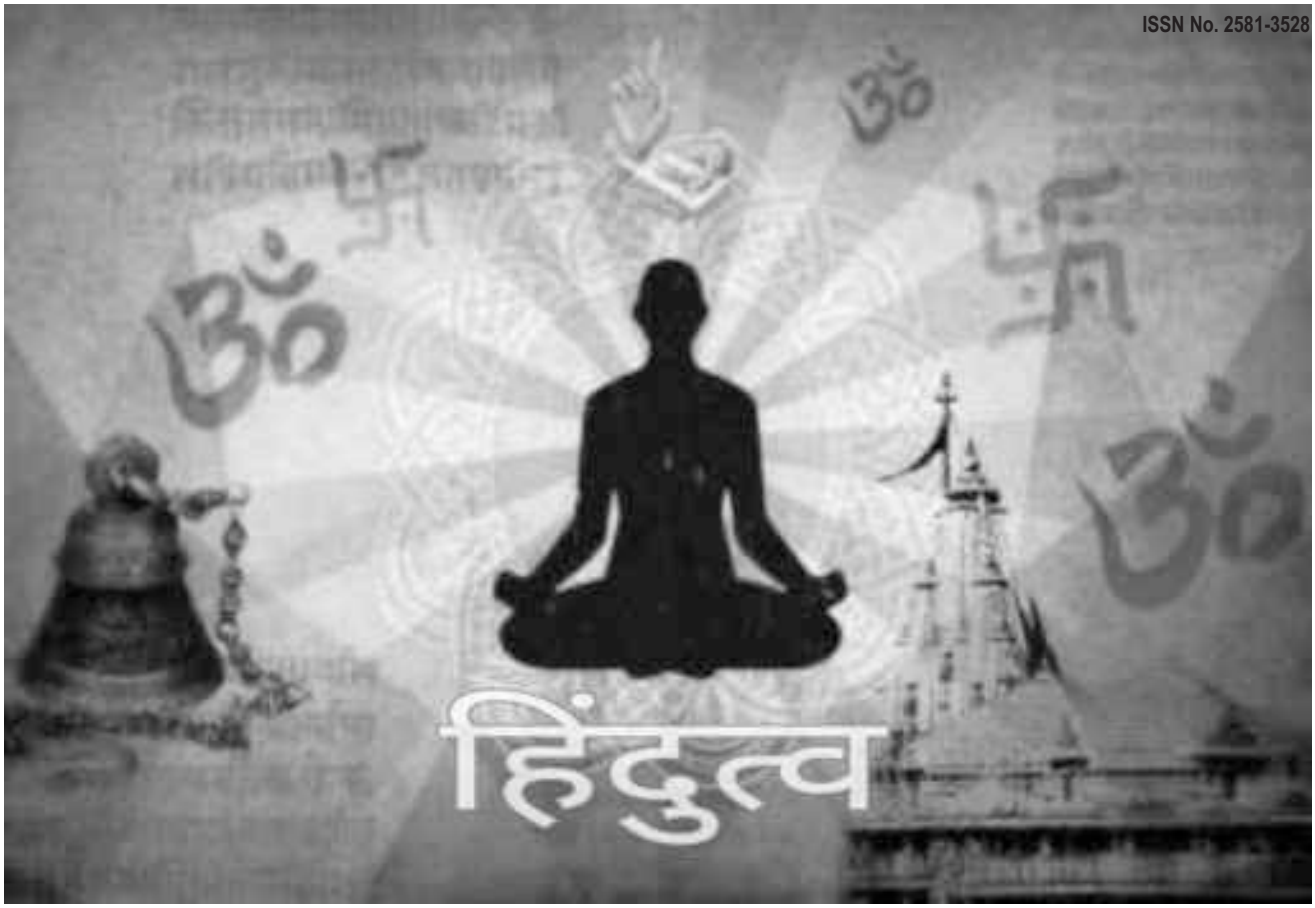

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।

मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्

☞ अर्थात सभी सुखी हों, सभी का कल्याण हो, सभी निरोगी हों, ऐसी विचारधारा हिंदुत्व की है। वसुधैव कुटुंबकम (पूरा विश्व मेरा परिवार है) और जियो और जीने दो जैसे विचार भी हिंदुत्व के ही हैं। वर्तमान विश्व की समस्याओं का संपूर्ण समाधान केवल हिंदुत्व ही दे सकता है। हिंदुत्व में–

☞ समस्त जीव जगत में ईश्वर के अंश की अनुभूति करना,

☞ पेड़–पौधों का संरक्षण, पशु–पक्षी का भी ध्यान रखना, वायु–जल को प्रदूषित न करना, प्रकृति को समृद्ध करने के लिए यज्ञ व हवन करना, विभिन्न रूपों में प्राकृतिक शक्तियों की आराधना करना,

☞ निरोगी रहने हेतु योग–साधना करना,

☞ पृथ्वी व आकाश तत्व का संवर्धन करना और उनको माता (पृथ्वी) तथा पिता (आकाश) के रूप में देखना

☞ नारी की पूजा करना (यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता), माता–पिता, स्वजन, पड़ोसी, और सारे समाज की चिंता, सेवा व सम्मान करना, एक दूसरे के सुख–दुःख में भागीदार होना, समाज के साथ त्यौहार को मनाना,

☞ प्रत्येक धार्मिक कार्य के बाद विश्व में शांति की कामना करना, सभी के निरोगी होने की कामना करना, समाज में सहिष्णुता का भाव पैदा करना

जैसी अनंत विशेषताएं इसे स्पष्ट करती हैं। सभी सुखी हों, सम्पूर्ण जगत समृद्ध हो, प्राणियों में समरसता हो, सभी जगह शांति हो, का पाठ केवल हिंदुत्व में है, अन्य में नहीं।

विश्व की कुल जनसंख्या में हिंदुत्व की विचारधारा को मानने वाले 15–16 प्रतिशत लोग हैं जो विश्व के लगभग 96 देशों में निवास करते हैं। नेपाल में लगभग 81 प्रतिशत, भारत में 80 प्रतिशत, मॉरीशस में 48 प्रतिशत हिंदू जनसंख्या निवास करती है। 21वीं सदी की विश्व की समस्याओं का समाधान केवल हिंदुत्व विचारधारा में निहित है। वैश्विक समस्याओं के समाधान का अवसर भी केवल इसी पीढ़ी के पास है। अतः अब शीघ्रता से संपूर्ण विश्व समुदाय को हिंदुत्व विचारधारा की विभिन्न विशेषताओं को आत्मसात कर आगे बढ़ना होगा, तभी विश्व की समस्याओं का समाधान संभव होगा। यही कारण है कि अब हिंदुत्व की गूंज पूरे विश्व में चारों ओर सुनाई दे रही है। आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है। पूरा विश्व 21 जून को योग दिवस मना रहा है। विश्व में आयुर्वेद का विस्तार हुआ है और पूरी दुनिया की समझ में आया है कि आयुर्वेद व योग का पालन कर निरोगी रहा जा सकता है। पर्यावरण को बचाने के लिए पर्यावरण दिवस, नारी के सशक्तिकरण हेतु अंतर्राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण दिवस मनाया जा रहा है। मातृ दिवस, पितृ दिवस, जल संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण आदि विषयों पर भारतीय दृष्टि से वैश्विक चिंतन हो रहा है। अन्य धर्मावलंबी भी हिंदुत्व के विचार से प्रभावित हो रहे हैं। इसका उदाहरण अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में योग शिविर का संपन्न होना है, जिसमें मुस्लिम छात्रों ने भी बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया है।

कटु सत्य है कि मानव, विश्व, व प्रकृति का अस्तित्व हिंदुत्व पर चलकर ही बचा रह सकेगा। अतः जितनी शीघ्रता से संपूर्ण विश्व समुदाय इस विचार को समझ कर आगे बढ़ेगा, तो ही विश्व की सभी समस्याओं का अंत होकर विश्व शांति, समृद्धि व सतत समावेशित विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

(लेखक आई.आई.टी. दिल्ली में प्रिंसिपल साइंटिस्ट हैं)

ISSN No. 2581-3528

विश्व पटल पर हिन्दुत्व का बदलता स्वरूप

डॉ. वेद प्रकाश शर्मा

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास' पुस्तक में इस्लाम और ईसाई मतों के अनेकों वर्ष पूर्व सम्पूर्ण विश्व में वैदिक सनातन हिंदू धर्म ही एक मात्र ऐसा धर्म था जिसके साक्ष्य आज भी संपूर्ण विश्व में इतिहास अध्येताओं को बहुतायत में मिल रहे हैं। परंतु आक्रमक और छलवादी मतों के कारण सत्य पर आधारित वैदिक सनातन हिन्दू धर्म सिमटता चला गया। जिसके अनेकों अन्य कारण भी थे, पर उन कारणों पर चर्चा का यहां अवकाश नहीं है। परंतु जब इतिहास अध्येताओं और चिंतकों ने तथा अनुसंधानकर्ताओं ने खुले मन और निष्पक्ष न्यायिकर पथ तथा वैज्ञानिक दृष्टि से जब वैदिक सनातन हिन्दू धर्म का स्वरूचिपूर्ण अध्ययन किया तो उनकी आंखें खुली की खुली रह गई। अब उन्होंने प्राचीन वैदिक यज्ञ प्रणाली पर अनुसंधान कर के आश्चर्यजनक प्रमाण प्राप्त किए तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। जब अग्निहोत्र हवन से उन्होंने विषाणु नाशक वायु को प्राप्त किया तो उनको अद्‌भुत आश्चर्य हुआ। इसी प्रकार गायत्री मंत्र उच्चारण के शारीरिक प्रभाव शंख ध्वनि, घंटा ध्वनि, तुलसी पत्र व बिल्व पत्र के चमत्कारी औषधीय गुणों को पाकर वे रोमांचित हो उठे, जो विश्व के प्राणी मात्र के स्वास्थ्य के लिए तो बहु उपयोगी है ही, पर जिस तरह भारतीय जनों के लिए वे आदि भौतिक के साथ–साथ आदि दैविक भी हैं तो उनके लिए यह आदि दैविक भाव अभी दूर की चीज थी।

परन्तु समय सदा एक सा नहीं रहता है। भारत से जब महान संत महाभाग स्वामी विवेकानंद ने जब हिंदू धर्म का जयघोष संपूर्ण विश्व के सामने किया तो संपूर्ण विश्व की आंखें खुली और पूर्व विदेशी यात्रियों की भांति विश्व पटल के चिंतक विचारक आध्यात्मिक जनों ने फिर से उन गड़रियों के गीतों और सपेरों की बीनों में अपने कल्याण की खोज प्रारम्भ की। इसके साथ–साथ हिन्दू धर्म के अनेक मतावलम्बी जब धन उपार्जन और जीवकोपार्जन के लिए विदेश गये तो उन्होंने वहां भी हिंदू धर्म की ध्वजा को सहजता और सुदृढ़ता से स्थापित करने का कार्य किया। यह कार्य इतने बड़े स्तर पर किया कि आज विदेशों में अनेकानेक विशाल भव्य देव स्थानों के साथ–साथ हिन्दू धर्म विषयक अनुसंधान भी हो रहे हैं। जिन्हें देखकर प्रत्येक हिन्दू धर्मावलंबी को हर्ष व आनंद की अनुभूति होने लगती है।

मॉरीशस फिजी आदि देश तो भारत की उपशाखाएं पहले से ही प्रतीत होती हैं। इन्हीं के साथ–साथ इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा आदि देश भी जो पूर्व से ही भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के प्रति आस्थावान हैं और अब भारत सरकार व हिन्दू मतावलम्बियों के प्रयासों से दुबई जैसे देश में भी हिन्दू धर्म ध्वजा, सुंदरता और सुदृढ़ता से लहराने लगी है। ऐसे ही महाभाग अभय चरण प्रभुपाद द्वारा स्थापित भक्तिवेदांत संस्था जिसे इसकॉन के नाम से जाना जाता है उसका स्मरण करना भी मैं अपना पुण्य कर्म समझता हूं। जब हम भारतीय हिन्दू अपने शिखा सूत्र आदि अन्य प्रतीकों को आधुनिकता के नाम पर त्याग रहे हैं तो आप भी मत की धरती पर शिखा सूत्रधारी विशुद्ध निरामिष भोज्य पदार्थ ग्रहण करने वाले सन्त तुल्य आंग्लजन यानि अंग्रेज आपको स्थान–स्थान पर दिख जाएंगे। यह

ISSN No. 2581-3528

हिन्दू धर्म का वैश्विक रूप बहुत तीव्रता से उभर रहा है। विचार करें तब आपको कैसा लगेगा जब आप आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न की व्यस्ततम बर्क स्ट्रीट पर नाचते गाते कहीं से हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।। नाम का उच्चारण कीर्तन करते भजन संकीर्तन के साथ नृत्य करते हुए दिख जाएंगे तो आपको कैसा रोमांच होगा। पर हम भारतीय हिन्दुओं को एक जो नई बीमारी लगी है वह मोबाइल से चित्रांकन करके की। बस हम क्या करेंगे उनका चित्र उतारने लगते हैं। परंतु हम उस संकीर्तन में सम्मिलित होने में लज्जा का अनुभव करते हैं, जबकि विदेशी गौरांग जन प्रभु भक्ति में निमग्न होकर भक्ति रस से सराबोर होकर स्वयं को भी भूल जाते हैं। ऐसे ही एक आंग्लजन को जब आप मेलबॉर्न के उत्सवों के केन्द्र फेडरेशन स्क्वेर पर लोगों को योग सिखा रहा हो तो आप को कैसा लगेगा और इतना ही नहीं वह विदेशी योगाचार्य अपनी योग कक्षा प्रारम्भ करने पर सब को साथ जोड़ कर नमस्कार करता हो और वहां योग कर रहे सभीजन से पास बैठे व्यक्ति को नमस्कार करने को कह रहा हो तो क्या यह हिन्दू धर्म का विश्व पटल पर प्रसार नहीं है। ऐसे ही एक बार मेलबोर्न में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा का उत्सव हो रहा था तो विदेशी कृष्ण भक्तों के साथ–साथ भारतीय प्रवासी बंधु भी इसमें सहभागी हो रहे थे तो मैंने अन्य लोगों की ही तरह एक भारतीय जन को भी भगवान जगन्नाथ के रथ की रज्जू को छूने के लिए उतावला देखा और जब वह कुछ दूर तक रज्जू को खींचते हुए कुछ दूर चला तो इस भक्ति रस के अलौकिक आनन्द को मैंने उसके चेहरे पर अनुभव किया और साथ ही यह कहते हुए भी सुना कि भारत में तो शायद ही यह अवसर मुझे मिलता जो यहां अंग्रेज कृष्ण भक्तों के कारण मुझे मिल सका है।

ऐसे ही अनेक उदाहरण हैं योग के साथ–साथ हिन्दू धर्म के विभिन्न मतों के अनुयायियों ने विदेशों में हिन्दू धर्म की ध्वजा सुदृढ़ता से स्थापित की है। केवल ऑस्ट्रेलिया ही नहीं अमेरिका के रेलवे स्टेशन पर जब गाड़ी को चलने में देर होगी तो वहां के श्रीकृष्ण भक्त अपनी मृदंग और मंजीरों की धुन में भक्ति रस में डूबते देखे जा सकते हैं।

ऐसे ही एक मेरे इंडोनेशियाई मित्र ने मुझे अपने घर आमंत्रित किया और अपने घर में स्थापित भगवान बुद्ध की प्रतिमा का दर्शन करवाया तथा विशुद्ध शाकाहारी भोजन करवाया, जिसमें प्याज तथा लहसुन जैसे पदार्थों का कहीं दूर तक भी उनके घर में नाम निशान नहीं था। वे ब्रेड भी बाजार से लेने के बजाय घर पर ही शुद्धता से बनते हैं और जब भोजन के उपरांत वार्तालाप हुई तो उसने शाक्य मुनि के विषय में मुझ से बातें की व शरीर के स्थित चक्रों के विषय में शाक्य मुनि के विचार बताए। जब मैंने उन्हें अपने घर भोजन पर आमंत्रित किया तो वे बोले हम प्याज भी भोजन में ग्रहण नहीं करते हैं तो आप इस बात का अवश्य ख्याल रखिए। हम पूर्ण रूपेण शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करते हैं। वे लोग खान–पान में ही नहीं अपने दैनिक व्यवहार में भी इन बातों का सहजता से पालन करते हैं। आज विश्वस्तर पर लोग संस्कृत सीख रहे हैं और वैदिक ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि उन्हें पता है कि हिन्दू धर्म ही विश्व शांति का संवाहक हो सकता है क्योंकि कोई अन्य मत ऐसा है ही नहीं जो हिन्दू धर्म की भांति सबके कल्याण की कामना करता हो।

भारत से जब महान संत महाभाग स्वामी विवेकानंद ने जब हिंदू धर्म का जयघोष संपूर्ण विश्व के सामने किया तो संपूर्ण विश्व की आंखें खुली और पूर्व विदेशी यात्रियों की भांति विश्व पटल के चिंतक विचारक आध्यात्मिक जनों ने फिर से उन गड़रियों के गीतों और सपेरों की बीनों में अपने कल्याण की खोज प्रारम्भ की। इसके साथ-साथ हिन्दू धर्म के अनेक मतावलम्बी जब धन उपार्जन और जीवकोपार्जन के लिए विदेश गये तो उन्होंने वहां भी हिंदू धर्म की ध्वजा को सहजता और सुदृढ़ता से स्थापित करने का कार्य किया। यह कार्य इतने बड़े स्तर पर किया कि आज विदेशों में अनेकानेक विशाल भव्य देव स्थानों के साथ-साथ हिन्दू धर्म विषयक अनुसंधान भी हो रहे हैं।

इन्हीं कारणों से हिन्दू धर्म के प्रति विश्व पटल पर आज जिज्ञासा तथा श्रद्धा का भाव है। आज विश्व का जन मानस भारतीय दर्शन को न केवल जानना चाहता है अपितु उस पर अनुसंधान करना चाहता है। जानकर वह केवल इतने से ही संतुष्ट नहीं हैं अपितु उसे पूर्णता से अपना भी रहा है, और हिन्दू धर्म के प्रति समर्पित होकर हिन्दू जीवन पद्धति को अपनाकर अपने को धन्य मान रहा हैं। बेशक उनका कट्टरपंथियों ने घोर विरोध किया पर वह हिन्दू धर्म के प्रति श्रद्धा भाव अपना रहे हैं। परंतु हमें इन उपलब्धियों पर हर्षित होने के साथ–साथ सावधान भी रहना पड़ेगा और हम सब का दायित्व है कि हम हिन्दू धर्म के प्रचार–प्रसार में निजी रूप से कितने सहभागी हो सकते हैं। हमें उस पर भी अवश्य विचार करना चाहिए और यदि हम चूके तो हम ही नहीं सदियां और आने वाली अनेकों पीढ़ियां ऐसे हिन्दू या मानव धर्म से वंचित रह जाएंगी जो विश्व का कल्याण चाहता है।

विदेशियों से पहले हम भारतीयों को भी हिन्दू धर्म के विषय में जानना और समझना होगा। परन्तु यहां तो हम धर्म और मत का अंतर भी साधारण हिन्दू को नही समझा पाए हैं और न ही हम उसे हिन्दू धर्म की उन विशेषताओं को बता पाए हैं जिन पर हम गर्व करते हैं। पर जब विदेशी हमें हिन्दू जीवन पद्धति पर अनुसन्धान करके विश्व स्तर पर हिन्दू धर्म की विशेषता को प्रकाश में लाते हैं तो हम अपने धर्म पर नहीं अपितु विदेशियों पर लटटू होने लगते हैं। परन्तु मंदिरों में बैठे पुजारियों, मंहतों, कथावाचकों व बुद्धिजीवियों का भी दायित्व है कि वे हिन्दू धर्म की विशेषताओं को हर सम्भव रीति से जन सामान्य तक पहुंचाए। धर्म केवल धन कमाने का साधन नही है। वह विश्व कल्याण के साथ–साथ मानव कल्याण को भी प्रश्रय देता है। क्योंकि केवल हिन्दू धर्म की जीवन पद्धति ही विश्व कल्याण की कामना करती है। अस्तु हम सब इस ईश्वरीय कार्य में सहभागी बनें।

(लेखक साहित्यकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

हिन्दुत्व और ज्योतिष

अमित शर्मा

हिन्दुत्व को धर्म नहीं जीवन पद्धति माना जाता है। ऐसी पद्धति जो जीवन की गूढ़ता को समझ कर सही अर्थों में उसे जीने का मार्ग दिखाती है। हमारे धर्म–ग्रंथों में ज्ञान का अथाह सागर भरा पड़ा है। मगर समय की धूल अक्सर इस ज्ञान के मर्म को समझने से हमें रोक देती है। हम इन्हें धार्मिक कर्मकांड भर मानने लगते हैं। जबकि वास्तविकता में ये जीवन को प्रकाशित करने वाले ज्ञान–पुंज हैं। इसीलिए इन्हें जीवन–ग्रंथ कहें तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी।

ज्योतिष भी हमारी सनातन संस्कृति का अंग है। वेद हमारे सबसे पुराने ग्रंथ हैं। इन्हें सनातन संस्कृति का आधार माना जाता है। वेद ही सबसे प्राचीन माने जाते हैं, इनसे प्राचीन कुछ भी नहीं। उस काल में सारा ज्ञान श्रुति और स्मृति पर आधारित था। हमारे ऋषि–मुनियों ने वेदों की ऋचाओं में ब्रहांड के रहस्य को जानने की कोशिश की। जीवन का मर्म समझने और समझाने का प्रयास किया। वेदों को भली–भांति समझने के लिए वेदांगों की रचना की गयी। कुल छह वेदांग हैं – शिक्षा (Phonetics), कल्प (Rituals), व्याकरण (Grammar), निरूक्त (Etymology), छंद (Poesy) और ज्योतिष (Astrology)। वेदांगों को शास्त्र भी कहा जाता है। ज्योतिष को वेदों का नेत्र कहा गया है।

भारतीय ज्ञान–विज्ञान की परंपरा में वेद ही सर्वविद्या का मूल माने गए हैं। वेदों के इसी चक्षुरूपी अंग को हमारे मनीषियों ने ज्योतिषशास्त्र की संज्ञा प्रदान की है। वेदों में वर्णित ज्ञान को समझने में ज्योतिष नेत्र की तरह अपनी भूमिका निभाता है।

आचार्य भास्कराचार्य ने स्वग्रंथ सिद्धांतशिरोमणि में ज्योतिष को परिभाषित किया है:

वेदस्य निर्मलं चक्षुः ज्योतिषशास्त्रमकल्मषम्।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्त्तं कर्म न सिद्ध्यति।।

अर्थात् ज्योतिष वेद का निर्मल चक्षु हैं, जो अकल्मष यानि दोषरहित है और इसके ज्ञानाभाव में वेदप्रतिपाद्य विषय यथा – श्रौतं, स्मार्त्तं, यज्ञादि क्रिया की सिद्धि नहीं हो सकती।

हमारे त्रिकालदर्शी महर्षियों ने अपने दिव्य ज्ञान से जिन शास्त्रों का निर्माण किया, उनमें ज्योतिषशास्त्र का स्थान अग्रणी है। ज्योतिष शास्त्र खगोलीय पिंडों के अध्ययन का विज्ञान है। ये समय और स्थान की गणना पर आधारित हैं। ज्योतिषशास्त्र आकाशीय पिंडों यथा ग्रह,नक्षत्रों आदि के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का विज्ञान है। वैदिक ज्योतिष की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जाता है कि जिस विधि से वैदिक ज्योतिष में खगोलीय पिंडो की गति की गणना की जाती है, वही विधि अमेरिका की स्पेस रिसर्च संस्था नासा भी अपनी गणना के लिए अपनाता है।

ज्योतिष के साथ समस्या ये है कि अक्सर इसे अंधविश्वास से जोड़ दिया जाता है। इसे सिर्फ भविष्यवाणी करने वाला शास्त्र माना जाता है। जबकि वास्तविकता ये है कि ज्योतिषशास्त्र का विषय सिर्फ भविष्यवाणी करना ही नहीं है। भविष्य में घटने वाली घटनाओं का अध्ययन करने वाला फलित ज्योतिष इस शास्त्र का एक हिस्सा मात्र है। परंतु ये बात सही है कि ज्योतिष को बाजार ने कमाई का एक जरिया जरुर बना लिया है। आज गली–गली में ज्योतिषशास्त्र के नाम पर दुकान खोल कर बैठे लोग आपको मिल जाएंगे। ये दरअसल नीम हकीम खतरे जान जैसे ही हैं। लेकिन जब कोई चिकित्सक गलत चिकित्सा करता है तो उस चिकित्सक की गलती मानी जाती है। चिकित्सा विज्ञान को दोष नहीं दिया जाता। मगर ज्योतिषशास्त्र के साथ विडंबना ये है कि अज्ञानियों के दोष की वजह से इस पूरे शास्त्र को ही बहुत से लोग गलत मानने लगते हैं।

ज्योतिष दरअसल एक अत्यंत गूढ़ विषय है। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करने वाले लोग जानते हैं कि ज्योतिष ज्ञान का अथाह सागर है। ये जीवन भर की तपस्या ढूंढता है। यहीं कारण है कि ज्योतिष के सही जानकार कम ही मिल पाते हैं। दूसरी तरफ यह भी सत्य है कि प्राचीन काल के इस उन्नत विज्ञान को बाद के कालक्रम में उपेक्षा का सामना करना पड़ा। मध्यकाल में ज्योतिषशास्त्र के विद्वानों को काफी प्रताडना भी झेलनी पड़ी। अक्रांताओं ने हमारे बहुमूल्य ग्रंथों को नष्ट कर दिया। असंख्य पुस्तकें और विद्या–भंडार जला दिए गए। जिस भूमि पर ज्ञान का सूर्य हमेशा प्रखर रहता था, उसी में पश्चिमी सभ्यता के प्रचार–प्रसार ने भी ज्योतिष को नुक्सान पहुंचाने का कार्य किया। जो ज्योतिषीय ग्रंथ बच भी गए थे, उनके महत्व को नहीं समझा गया। अयोग्य संतानों ने उन ग्रंथों को कीड़ों से चटवा दिया।

ज्योतिष शास्त्र के मूल ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध हैं। परंतु जैसे–जैसे संस्कृत भाषा का लोप हुआ, आमजन को इस शास्त्र को समझने में भी दिक्कतें आने लगी। लेकिन इन विपरित परिस्थितियों में भी ये ज्ञान अपनी आत्मा को बचाए रखने में सफल रहा है। धीरे–धीरे ही सही, ज्योतिष शास्त्र की ओर लोगों की रुचि और समझ बढ़ी है। साथ ही इसकी वैज्ञानिकता को भी समझा गया है। कई विश्वविद्यालयों में अब ज्योतिष की पढ़ाई शुरु की गयी है। इग्नू ने भी जून 2021 में ज्योतिषशास्त्र में स्नातोकोत्तर की डिग्री देने के लिए इसकी पढ़ाई शुरु कर दी है। ज्योतिष शास्त्र के सुव्यवस्थित अध्ययन से इस शास्त्र को समझने वाले लोगों की संख्या बढ़ेगी और समाज में व्याप्त भ्रांति दूर होने में मदद मिलेगी।

27 नक्षत्रों, 12 राशियों और 9 ग्रहों की गति, युति, प्रतियुति, इनके दृष्टि संयोग के गणितीय विवेचन से हम मानव जीवन पर इनके प्रभावों की व्याख्या कर पाते हैं। गूढ़ विज्ञान होने की वजह से इसके लिए गहन अध्ययन–मनन की आवश्यकता पड़ती है। हमारा वैदिक ज्योतिष कर्म के सिद्धांत पर आधारित है। ये सिखाता है कि हमें अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। ऐसे में मानव मात्र को सुकर्मों की ओर प्रेरित करना ही इसका सबसे बड़ा उद्देश्य होता है।

(लेखक महाराजा अग्रसेन इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़, इंद्रप्रस्थ विवि., दिल्ली में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं)

ISSN No. 2581-3528

हिन्दुत्व और हिन्दुइज्म : धर्म और पंथ में अंतर

डॉ. सुनीता शर्मा

धर्म, रिलीजन, पंथ और मजहब एक हैं ही नहीं। पंथ, मजहब और रिलीजन विश्वास हैं! सबके एक दिव्य पुरुष देवपुरुष हैं। उनके कथनानुसार व्यक्ति को जीवन जीना चाहिए। उनके बताए आदर्शों का पालन करना चाहिए। तर्क– कुतर्कों से उपर उठकर उन पवित्र ग्रन्थों में जो कुछ भी कहा गया है वह परम सत्य है जिसपर विचार करना, चर्चा करना अमान्य है। लेकिन जब हम धर्म की व्याख्या करते हैं तो पाते हैं कि धर्म अनेक अर्थों को समाहित किए हुए है। भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म शब्द के कई अर्थ हैं जैसे स्वभाव, गुण, कानून, कर्तव्य इत्यादि। भिन्न–भिन्न स्थितियों में अपेक्षित आदर्श व्यवहार को ही धर्म कहा गया है।

सत्य, अहिंसा आदि धर्म के मूल हैं लेकिन अधर्म का विरोध करने के लिये यदि हिंसा आवश्यक हो तो वह भी धर्म बन जाती है जैसे अर्जुन को प्रेरित किया गया और महाभारत में ही अन्यत्र कहा गया–

अहिंसा परमो धर्मः धर्म हिंसा तथैव च।

अतः सत्य की खोज और उसका अनुसरण तथा कर्तव्य परायण होना धर्म है।

आजकल हिन्दू ,जैन, बौद्ध, सिक्ख, पारसी, ईसाई, इस्लाम को भी धर्म कहा जाने लगा है तथा सभी धर्मो को समान कहने का रिवाज चल पड़ा है। मत, पंथ, मजहब तथा धर्म को पर्यायवाची के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है। यदि उपर्युक्त को धर्म भी कहा जाए तो हिंदू धर्म सनातन धर्म है जो भारतीय सभ्यता के विकास के साथ–साथ विकसित हुआ है तथा समय के साथ–साथ अनगिनत मनीषियों और महापुरुषों ने इसे सींचा है।

सत्य की खोज में बौद्धिक स्वतंत्रता तथा जिज्ञासा को जीवित रखने की परंपरा इसकी विशेषता है। सनातन धर्म वेदों से लेकर आधुनिक युग तक ऋषियों ,संतों और विद्वानों के दर्शन चिंतन और अनुभव से पोषित होता आया है। कालांतर में इसे हिंदू धर्म कहा जाने लगा है।

राजनीति में आजकल हिन्दुत्व की भर्त्सना का नया रिवाज चला है। हिन्दू होने के गुण या स्वभाव को हिन्दुत्व कहा जा सकता है। हिन्दू अनेक विचारों, पूजा पद्धतियों, पंथों का सम्मान करता है। यदि हिन्दू अच्छा है तो हिन्दू होने का गुण बुरा कैसे हो सकता है ?

हिन्दू परम्पराओं, संस्कृति, महापुरुषों और प्रतीकों का सम्मान करना अपने मतावलंबियों को धर्म परिवर्तन का विरोध करना या भारत को एक राष्ट्र बनाने वाले देशव्यापी तत्वों को सशक्त करने का प्रयत्न करना बुरा कैसे हो सकता है। हिंदुइज्म जैसी कोई चीज नहीं हो सकती क्योंकि यह पूंजीवाद या मार्क्सवाद की तरह कोई राजनीतिक विचारधारा नहीं है। इस्लाम और ईसाइयत के अनुसार स्वर्ग केवल मुसलमानों और ईसाइयों के लिए है। इन मजहबों के पैगंबरों और पुस्तकों में विश्वास ही सबसे बड़ी चीज है।

लाखों लोगों की हत्याएं करके, पूजा स्थलों को गिराकर और हिंदुओं को प्रताड़ित करके इस्लाम फैलाने वाले गजनबी और औरंगजेब को सम्मान से गाजी कहा जाता है और गोवा में हिंदुओं और ईसाइयों को प्रताड़ित करने के लिए 'इनक्विजिशन कमीशन' की स्थापना का आग्रह करने वाले जेवियर को संत की उपाधि दी जाती है। अली ब्रदर्स में से एक ने कहा था कि उच्चतम चरित्र वाले गांधी के मुकाबले मुझे एक चरित्रहीन और नीच प्रकृति का मुसलमान अधिक प्रिय है।

किसी भी भारतीय पंथ में ऐसी स्वार्थपरक सोच नहीं मिलती बल्कि सत्य, अहिंसा, सार्वभौमिक प्रेम और निस्वार्थ सेवा पर ही जोर दिया जाता है जबकि आजकल की सेकुलर वादी सोच के लोग गैर भारतीय मजहबों के पक्ष में खड़े होकर हिंदुत्व को सांप्रदायिक यहां तक कि आतंकवादी तक कहने से परहेज नहीं करते। स्पष्ट है कि ऐसी मानसिकता न केवल विकृत है बल्कि भारतीय धर्म, परंपरा और संस्कृति के लिए भी घातक है। इन्हीं दोनों मजहबों के अनुयायियों ने ग्रीक, मिश्र, रोमन, ईरान इत्यादि सभी पुरानी सभ्यता–संस्कृतियों को धरती से मिटा दिया और बाकी की दुनिया में भी अपने वर्चस्व के लिए धन, बल, छल, हिंसा इत्यादि सभी तरह के हथकंडे अपनाए हैं। सर्व धर्म समभाव की भावना का निर्वहन करने का दायित्व केवल हिन्दुओं पर है?

हिंदुत्व उस सनातन परंपरा का गुण है जो विश्व की प्राचीनतम और महानतम सभ्यता और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने के साथ अपने से इतर सभ्यताओं का भी सम्मान करती है और उसी सम्मान की अधिकारिणी भी है। इस परंपरा में ना कोई काफिर है, ना इनफाइडर, ना जिहाद है, ना क्रूसेड।

हिंदुत्व सार्वभौमिक प्रेम और हर जीव को ब्रह्म के रूप में देखने की दृष्टि का नाम है। हिंदुत्व को सांप्रदायिक कहना न केवल भाषा के साथ अन्याय हैं बल्कि महान सनातन संस्कृति का भी अपमान है।

लोक तन्त्र में वैचारिक स्वतंत्रता, सभी नागरिकों तथा मत पंथों का सम्मान आवश्यक है। ये सभी गुण सनातन संस्कृति और हिन्दुत्व में नैसर्गिक रूप से पाए जाते हैं। सभी जीवों पर दया तथा 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' जैसे नियम प्रकृति तथा पर्यावरण के संरक्षण में सहायक हैं। इसके विपरीत केवल अपने मत और मतावलम्बियों को हो सही समझने वाले तथा पृथ्वी के जीवों और पदार्थों को मनुष्य के उपयोग के लिये बनाई वस्तु मानने वाले अब्राहमी मजहबों की मान्यताएं लोकतंत्र और प्रकृति दोनों के प्रतिकूल हैं।

(लेखिका राष्ट्र सेविका समिति दिल्ली प्रांत की प्रचार प्रमुख हैं)

ISSN No. 2581-3528

वैश्विक स्तर पर पनप रहे आतंकवाद का हल केवल हिन्दू सनातन संस्कृति में ही निहित है

प्रहलाद सबनानी

हाल ही के समय में न केवल भारत बल्कि विश्व के कई देशों यथा, स्वीडन, ब्रिटेन, फ्रांस, नार्वे, भारत, अमेरिका आदि में, आतंकवाद की समस्या ने सीधे तौर पर इन देशों के आम नागरिकों को और कुछ हद तक इन देशों की अर्थव्यवस्था को विपरीत रूप से प्रभावित किया है। आतंकवाद के पीछे धार्मिक कट्टरता को मुख्य कारण बताया जा रहा है और आश्चर्य होता है कि पूरे विश्व में ही आतंकवाद फैलाने में एक मजहब विशेष के लोगों का अधिकतम योगदान नजर आ रहा है। इस मजहब विशेष की एक किताब में ही यह बताया गया है कि इन्हें इस्लाम के अलावा अन्य कोई धर्म बिल्कुल स्वीकार नहीं है और इस्लाम को नहीं मानने वाले लोगों को इस पृथ्वी पर रहने का कोई अधिकार नहीं है। अभी हाल ही में भारत के कई नगरों में रामनवमी एवं हनुमान जयंती पर हिन्दू नागरिकों द्वारा निकाले गए देवी देवताओं के जुलूस पर पत्थरबाजी की गई है। इसकी शुरुआत राजस्थान के करौली से हुई फिर मध्य प्रदेश के खरगोन, कर्नाटक के हुबली, आंध्र प्रदेश के कुरनूल के होलागुंडा, पश्चिम बंगाल के बांकुरा आदि शहरों तक फैल गई। इन नगरों की पुलिस भी हालत को नियंत्रित करने में एक तरह से असफल रही है। इसी प्रकार स्वीडन में भी हमलावर भीड़ (मुस्लिम शरणार्थियों) द्वारा पुलिस वाहनों पर हमला कर दिया गया एवं पुलिस की कई गाड़ियों को जला दिया गया। अत्यधिक सूचना तंत्र और हथियारों से लैस पुलिस भी हालत को नियंत्रित करने में असफल रही। स्वीडन के साथ ही यूरोप के कई देशों में मुस्लिम शरणार्थी वहां की कानून व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती बन गए हैं।

उक्त कुछ घटनाओं का वर्णन तो केवल उदाहरण के तौर पर किया गया है अन्यथा आतंकवाद की स्थिति तो पूरे विश्व में ही बद से बदतर होती जा रही है एवं अब तो इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं को भी प्रभावित कर रही है। इन देशों में एक मजहब विशेष के लोगों द्वारा देश की सम्पत्ति को नुकसान तो पहुंचाया ही जाता है साथ ही पुलिस एवं आम नागरिकों पर भी हमले किए जाते हैं जिससे कई बार तो इन हमलों में पुलिस एवं आम नागरिक अपनी जान भी गंवा देते हैं। इस प्रकार की लगातार बढ़ रही घटनाओं के चलते अब विश्व के आम नागरिक इन घटनाओं के कारणों को समझने लगे हैं एवं आतंकवादियों की धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध एक होने लगे हैं। जैसे बताया जा रहा है कि अभी हाल ही में सूडान ने अपने देश में इस्लाम के अनुपालन पर प्रतिबंध लगा दिया है। यूरोप के कई देशों में वहां के नागरिक इस्लाम धर्म को त्याग कर अब ईसाई धर्म अपना रहे हैं। जापान ने भी इस्लाम धर्म का

ISSN No. 2581-3528

पालन करने वाले लोगों के लिए कड़े कानून लागू कर दिए हैं। चीन द्वारा मुस्लिम समाज पर लगातार किए जा रहे अत्याचारों से तो अब पूरा विश्व भी परिचित हो गया है। एक समाचार के अनुसार नार्वे ने एक बड़ी संख्या में इस्लाम मजहब को मानने वाले लोगों को अपने देश से निकाल दिया है। इस कदम को उठाने के बाद नार्वे में अपराध की दर में 72 प्रतिशत तक की कमी आ गई है एवं वहां की जेलें 50 प्रतिशत तक खाली हो गई हैं तथा पुलिस अब नार्वे के मूल नागरिकों के हितों के कार्यों में अपने आप को व्यस्त कर पा रही है। विश्व के कई अन्य देशों ने भी इसी प्रकार के कठोर निर्णय लिए हैं। कुछ अन्य देशों में तो वहां के नागरिकों द्वारा "मैं पूर्व मुस्लिम" नाम से आंदोलन ही चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत ये लोग घोषणा करने लगे हैं कि अब मैंने इस्लाम मजहब का परित्याग कर दिया है।

भारत वैसे तो हिन्दू सनातन संस्कृति को मानने वाले लोगों का देश है और इसे राम और कृष्ण का देश भी माना जाता है। इसलिए यहां हिन्दू परिवारों में बचपन से ही "वसुधैव कुटुम्बकम", "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एवं "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" की भावना जागृत की जाती है। इसी के चलते भारत ने अन्य देशों में हिन्दू धर्म को स्थापित करने अथवा उनकी जमीन हड़पने के उद्देश्य से कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है। भारत में तो जीव, जंतुओं एवं प्रकृति को भी देवता का दर्जा दिया जाता है। परंतु हाल ही के समय में भारत में भी इस्लाम के अनुयायियों की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। विशेष रूप से वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से तो भारत में हिन्दुओं की स्थिति लगातार दयनीय होती जा रही है। आज भारत के 9 प्रांतों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए हैं एवं इस्लामी/ईसाई मतावलंबी बहुमत में आ गए हैं। जैसे, नागालैंड में 8 प्रतिशत, मिजोरम में 2.7 प्रतिशत, मेघालय में 11.5 प्रतिशत, अरुणाचल प्रदेश में 29 प्रतिशत, मणिपुर में 41.4 प्रतिशत, पंजाब में 39 प्रतिशत, केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू–कश्मीर में 32 प्रतिशत, लक्षद्वीप में 2 प्रतिशत, लदाख में 2 प्रतिशत आबादी हिन्दुओं की रह गई है। कुछ राज्यों में तो हिन्दुओं की आबादी विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई है। कई क्षेत्रों, जिलों तथा प्रदेशों में हिन्दुओं द्वारा निकाले जाने वाले धार्मिक जुलूसों पर पत्थरों से आक्रमण किया जाता है एवं हिन्दुओं को हत्तोत्साहित किया जाता है ताकि वे अपने धार्मिक आयोजनों को न कर पाएं।

भारत के हाल ही के इतिहास पर यदि नजर डालें तो आभास होता है कि जब–जब देश के कुछ इलाकों में हिन्दुओं की संख्या कम हुई है तब–तब या तो देश का विभाजन हुआ है अथवा उन इलाकों में शेष बचे हिन्दुओं को या तो मार दिया गया है या हिन्दुओं को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया गया है अथवा उन इलाकों से हिन्दुओं को भगा दिया गया है। जैसे वर्ष 1947 में पाकिस्तान, 1971 में बंगलादेश, वर्ष 1990 में जम्मू एवं कश्मीर में इस प्रकार की दुर्घटनाएं हिन्दुओं के साथ घट चुकी हैं। इसके बाद भी मामला यहां तक रुका नहीं है बल्कि गोधरा, मुंबई, अक्षरधाम, नंदीग्राम, दिल्ली आदि शहरों में भी आतंकवादी

अभी हाल ही में भारत के कई नगरों में रामनवमी एवं हनुमान जयंती पर हिन्दू नागरिकों द्वारा निकाले गए देवी देवताओं के जुलूस पर पत्थरबाजी की गई है। इसकी शुरुआत राजस्थान के करौली से हुई फिर मध्य प्रदेश के खरगोन, कर्नाटक के हुबली, आंध्र प्रदेश के कुरनूल के होलागुंडा, पश्चिम बंगाल के बांकुरा आदि शहरों तक फैल गई। इन नगरों में पुलिस भी हालत को नियंत्रित करने में एक तरह से असफल रही है।

हमले किए गए हैं। आज केरल, बंगाल, उत्तर प्रदेश के कुछ जिले, दिल्ली के कुछ इलाके इसी आग में जल रहे हैं। जबकि हमें स्मरण रखना चाहिए कि बर्मा, श्रीलंका, अफगानिस्तान आदि भी कभी भारत के ही भाग रहे हैं। भारत के अलावा भी अन्य देशों में ईसाई, बौध, हिन्दू धर्म के अनुयायियों पर लगातार हमले करके इन देशों को इस्लामी राष्ट्र में परिवर्तित कर दिया गया है जैसे, अफगानिस्तान, ईरान, लेबनान, सिल्क रूट के लगभग सभी देश, तुर्की, मध्य पूर्व, मिश्र, उत्तरी अफ्रीका और बाकी अफ्रीका। इस प्रकार आज पूरे विश्व में इस्लाम को मानने वाले देशों की संख्या 57 हो गई है।

भारतीय चिंतन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार स्तंभों पर स्थापित है। इस दृष्टि से चाहे व्यक्ति हो, परिवार हो, देश हो अथवा विश्व हो, किसी के भी विषय में चिंतन का आधार एकांगी न मानकर एकात्म माना जाता है। भारत के उपनिषदों, वेदों, ग्रंथों में भी यह बताया गया है कि मनुष्य का जीवन अच्छे कर्मों को करने के लिए मिलता है एवं देवता भी मनुष्य जीवन को प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। अच्छे कर्म कर मनुष्य अपना उद्धार कर सकता है इसीलिए भारत भूमि को कर्मभूमि माना गया है जबकि अन्य धराओं को भोगभूमि कहा गया है। साथ ही वर्णाश्रम व्यवस्था हिन्दू सनातन संस्कृति का मूल बताया जाता है। हमारे शास्त्रों में यह भी वर्णन मिलता है कि सभी वर्णों तथा आश्रमों में पूर्णतः प्रतिष्ठित व्यक्ति जीवन के सर्वोत्तम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है। अन्य धर्म, भोग को बढ़ावा देते हैं जबकि हिन्दू सनातन संस्कृति योग को बढ़ावा देती है। इस प्रकार हिन्दू धर्म के शास्त्रों, पुराणों एवं वेदों में किसी भी जीव के दिल को दुखाने अथवा उसकी हत्या को निषिद्ध बताया गया है जबकि अन्य धर्म के शास्त्रों में इस प्रकार की बातों का वर्णन नहीं मिलता है। इसी कारण हिन्दू धर्म के अनुयायी बहुत कोमल स्वभाव एवं पूरे विश्व में निवास कर रहे प्राणियों को अपने कुटुंब का सदस्य मानने वाले होते हैं। बचपन में ही इस प्रकार की शिक्षाएं हमारे बुजुर्गों द्वारा प्रदान की जाती हैं। इसका प्रमाण भी इस रूप में दिया जा सकता है कि पूरे विश्व में केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां इस्लाम मजहब को मानने वाले लगभग सभी फिरके पाए जाते हैं। ईरान में मूल रूप से पारसी निवास करते थे, आज ईरान में केवल इस्लाम के अनुयायी ही पाए जाते हैं। पारसी उनके मूल देश में ही निवासरत नहीं है जबकि भारत में पारसी अच्छी संख्या में निवास कर रहे हैं। इसी प्रकार जब इजराईल पर इस्लाम के अनुयायियों का हमला हुआ था, तब वहां के मूल निवासी यहूदी भी भारत में आश्रय लेने के उद्देश्य से आए थे और आज भारत में यहूदी भी बिना किसी भेदभाव के आनंद पूर्वक अपना जीवन यापन कर रहे हैं। विश्व के लगभग सभी धर्मों के विभिन्न फिरकों के अनुयायी भारत में भाईचारा निभाते हुए प्रसन्नता पूर्वक निवास कर रहे हैं। इसी कारण से अब वैश्विक स्तर पर यह सोच बलवती होती जा रही है कि विश्व में तेजी से फैल रहे आतंकवाद का हल केवल हिन्दू सनातन संस्कृति को अपनाकर ही संभव है।

(लेखक भारतीय स्टेट बैंक के उप महाप्रबंधक पद से सेवा निवृत्त हैं)

ISSN No. 2581-3528

भारत का छुपा हुआ तथ्यपरक इतिहास

प्रो. बी.एस. राजपूत

ऋषिकेश तथा मायानगरी (हरिद्वार) के बीच में जहां खरखड़ी एवम् मुनि की रेती का विशाल क्षेत्र है जिसमें अनेक साधकों एवम् संतो ने आध्यात्मिक/सांस्कृतिक आश्रम तथा अखाड़े बनाए हुए है वहां पर सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी में एक बहुत संपन्न, गौरवमय तथा पूर्णतः स्वायतशासित राज्य था जिसके प्रतापी राजाओं ने किसी भी मुग़ल शासक की अधीनता स्वीकार नहीं की थी। इस राज्य का नाम कनेरी कला था। आक्रमणकारी मुग़ल शासक बाबर तथा उसके सभी वंशजों ने भारत के मूल निवासी हिंदुओ पर जघन्य अत्याचार किए थे तथा उन्हें अपमानित करने के लिए अयोध्या में श्री राम जन्म भूमि, मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि तथा काशी में श्री विश्वनाथ के मंदिर में तोड़फोड़ की और पूरे देश में हजारों भव्य मंदिर तोड़े थे एवम् देवी देवताओं की मूर्तियों को खंडित एवम् अपमानित किया था। इन विदेशी आक्रांताओं का कुत्सित उद्देश्य भारत की सनातन संस्कृति के प्रतीकों को मिटाकर हिंदुओ के मनोबल को सदा के लिए समाप्त कर देना था। उन अनाचारी विदेशी आक्रांताओं के शासन काल में भी देवभूमि उत्तराखंड के चारों धाम पूर्णतः सुरक्षित रहे थे तथा वहां के किसी अन्य मंदिर में भी किसी प्रकार की कोई तोड़फोड़ नहीं हुई थी और ना ही कोई मुग़ल सेना कभी हरिद्वार पार करके पर्वतीय क्षेत्र में प्रवेश कर पाई थी। इसका कारण कनेरी कला राज्य के नेतृत्व में बना उत्तरी भारत के छोटे स्वतंत्र राजपूत राज्यों (मालिन, रवाशा, खोह, तथा गंगा नदियों के बीच का क्षेत्र) मद्रेपुर (मंडावर), पथरगढ (राजगढ़ तथा बाद में मानगढ़), नहटोर, शेरकोट, हल्डोर, कटेहर, तथा सरसावा का अति प्रबल संगठन था जिनमें से कभी भी किसी ने मुग़ल साम्राज्य की अधीनता स्वीकार नहीं की थी और ना ही कभी मुग़ल सेना को इनमें से किसी राज्य में प्रवेश करने दिया था। इन्हीं राज्यों की सम्मिलित शक्ति के कारण ही कभी भी मुग़ल सेना हरिद्वार तथा देवभूमि में प्रवेश नहीं कर पाई थी जिससे इनके तथा देव भूमि उत्तराखंड के सभी भव्य मंदिर सुरक्षित रह सके थे।

इसी कनेरी कला राज्य में विक्रमी संवत (वि स) 1699 (1642 ईसवी) के फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष में राजपूतों के सिसोदिया कुल एवम् सूर्यवंश के राजा ब्रजपाल सिंह के घर अति तेजस्वी बालक अनिरुद्ध सिंह का जन्म हुआ था जिसकी शिक्षा दीक्षा दिव्य संत महर्षि आनंद मूर्ति की देख रेख में उनके भव्य शिक्षा केंद्र बियासी के आश्रम (ऋषिकेश तथा देवप्रयाग के बीच में) हुई थी। इस आश्रम के कुलपति महर्षि आनंदमूर्ति के मार्गदर्शन में राजकुमार अनिरुद्ध सिंह ने दस वर्ष की अल्प अवधि में ही चारों वेदों, चारों उप वेदों (धनुर्वेद, आयुर्वेद,स्थापत्य वेद तथा गंधर्व वेद), छवो वैदिक दर्शन (सांख्य, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, योग एवम् वेदांत, चार अवैदिक दर्शनों (चार्वाक, जैन, बौद्ध तथा तंत्र) एवं सभी उपनिषदों का ज्ञानप्राप्त कर लिया था और आश्रम के शारीरिक एवम् युद्ध विद्या विशारद आचार्यों से धनुर्वेद, शस्त्र परिचालन, अश्वारोहण, रथ परिचालन एवम् सभी प्रकार की सैन्य व्यूह रचना की शिक्षा ग्रहण कर ली थी। इस थोड़ी अवधि में ही उसने आश्रम के सर्वश्रेष्ठ छात्र के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली थी तथा सदगुरु महर्षि आनंदमूर्ति का असीम स्नेह एवम् कृपा प्राप्त कर ली थी जबकि इस महर्षि के चरणों में उतरी भारत के सभी राजाओं के राज मुकुट झुके रहते थे तथा प्रत्येक राजा आश्रम के द्वार पर ही वाहन को छोड़कर आश्रम में प्रवेश करता था।

मुगल सेनापति भूरे खान ने कनेरी कला राज्य की पूर्वी सीमा पर दक्षिणी गंगा द्वार पर धोखे से षडयंत्र करके राजा ब्रजपाल की हत्या कर दी और जब इसकी सूचना आश्रम पहुंची तो राजकुमार अनिरुद्ध सिंह को बहुत क्रोध आया और वह युद्ध में भूरे खान का सर काटने को उतावला हो गया तो सदगुरु ने उसे एक साल तक उसके पिता की बरसी तक किसी भी प्रकार की हिंसा से विरत रहने की और उस अवधि के बाद भूरे खान को दंडित करने का निर्देश दिया। उक्त अवधि के पूर्ण होने पर अनिरुद्ध ने रवासा और मालिन नदियों के बीच वाले क्षेत्र के निकट वीर और अपने आश्रम के मित्र विशाल सिंह (रवा राजपूत योद्धा) की मदद से भूरे खान के अधीन की समस्त मुग़ल सेना को सम्मुख युद्ध में काट कर भूरे खान का वध करके अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया, पत्थरगढ़ के किले को उसके आतंक से मुक्त करके उसे राजा मानसिंह के पोते विजय सिंह (विशाल सिंह के अनुज) को सौंपा और सरसावा के विशाल राज्य को मुग़ल साम्राज्य की दासता से मुक्त करा कर उसे उसकी वास्तविक उत्तराधिकारी राजकुमारी ऋचा (जिसका पालन पोषण उसके पिता राजा जसवंत सिंह की मुग़लो के षडयंत्र से उनके सेनापति हरनाम सिंह द्वारा हत्या होने पर महर्षि आनन्द मूर्ति के आश्रम में हुआ था) को सौंप दिया था जिसे उसने उसके मुंहबोले भाई विशाल सिंह को दे दिया था। ये ही राजकुमारी महर्षि आनन्द मूर्ति के आशीर्वाद से योगी नरेश अनिरुद्ध सिंह की पत्नी बनी थी। अनिरुद्ध और विशाल सिंह की वीरता, सैन्य कुशलता, प्रबंधन क्षमता, संगठन क्षमता और दूरदर्शिता ने सुदूर उतरी भारत के सभी स्वतंत्र राज्यों का एक विशाल संगठन अनिरुद्ध सिंह के नेतृत्व में संगठित कर लिया जिसकी प्रबल सम्मिलित शक्ति के कारण ही कोई मुगल सेना कभी भी देवभूमि उत्तराखंड में प्रवेश नहीं कर सकी थी और वहां के सभी दिव्य मंदिर सुरक्षित रह सके थे।

जब मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र कुंवर रामसिंह की मदद से वीर शिवाजी महाराज वि. स. 1723 के भाद्रपद की एकादशी, (17 अगस्त, 1666) को मुगल बादशाह औरंगजेब की आगरा स्थित कारागार से छिपकर चतुराई से निकल कर अपने पुत्र शंभाजी, एवम् मंत्रियो त्रियंबक पंत तथा हीरोजी के साथ मथुरा की ओर गेरुए वस्त्रधारी संन्यासियों के वेश में तीव्र गति से चले तो उनका पीछा मुगल सेना नायक फौलाद खान ने पांच हजार हब्शियो की सेना के साथ किया तो कुंवर शंभा जी को मथुरा में सुरक्षित स्थान पर छोड़ कर शिवाजी महाराज के मार्ग की सभी सैनिक बाधाओं को निर्मूल करते हुए जिन श्वेत वस्त्रधारी आठ संन्यासियों ने फौलाद खान की पूरी सेना को नष्ट करके शिवाजी महाराज को डेढ़ हजार मील दूर रायगढ़ तक सुरक्षित पहुंचाया उनके नाम थे–

कनेरी कला नरेश वीर अनिरुद्ध सिंह, सरसावा नरेश योद्धा विशाल सिंह, बुंदेलखंड के वीर राजकुमार छत्रसाल, कनेरी कला के सेनापति नवरंग सिंह, सरसावा के सेनापति बादल सिंह, पथेरगढ़ के सेनापति अमर सिंह तथा मेवाड़ नरेश महाराणा राज सिंह (महाराणा प्रताप के प्रपौत्र) के वीर सेना नायक अजय रावल तथा दुर्जय चूड़ावंत। इन सन्यासी वेश

ISSN No. 2581-3528

धारी वीरों ने योगी नरेश अनिरुद्ध सिंह के नेतृत्व में फौलाद सिंह जैसे दुर्दांत और उसकी हब्शी सेना को समूल नष्ट करके शिवाजी महाराज की आगरा से रायगढ़ तक की उस यात्रा को निष्कंटक बना दिया था जिसके सम्पूर्ण पथ के क्षेत्रों में मुगल साम्राज्य का ही शासन था।

मेवाड़ के आदर्श वीर दुर्गादास राठौड़, वीर रानी सारांधा एवम् वीर चम्पावत का वि.स.1760 के ज्येष्ठ माह (4जी मई 1649) में जन्मा वीर पुत्र छत्रसाल बुंदेलखंड का नरेश एक महान योद्धा था। इन दोनों वीरों दुर्गादास राठौड़ तथा छत्रसाल ने मेवाड़ के वीर महाराणा राजसिंह एवं कनेरी कला के वीर नरेश अनिरुद्ध के सहयोग से मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी थी। अनेक मंदिरो एवं देव प्रतिमाओं को मुगलशासन के अत्याचार से बचाया था तथा दो बार के युद्ध में मुग़ल सेना को पराजित करके स्वयं औरंगजेब को जीवन दान दिया था। दुर्गादास राठौड़ ने मेवाड़ नरेश महाराणा राजसिंह की मदद से मुगल सेना को कई बार पराजित करके मारवाड़ के शिशु राजकुमार अजीत सिंह के प्राणों की रक्षा की थी और एक युद्ध में तो वीर दुर्गादास स्वयं औरंगजेब को पराजित करके उसका शिरोच्छेद करने ही वाले थे परन्तु उन्हें महाराणा राज सिंह ने रोक दिया था। मारवाड़ को जोधपुर के रूप में स्वतंत्र एवम् स्वशासित (मुग़लसाम्राज्य से पूर्णतः मुक्त) राज्य के रूप में स्थापित करके वीर दुर्गादास कथाओं के योद्धा के रूप में विख्यात हो गए थे जिसके कारण मुगल शासक औरंगजेब स्वप्न में भी दुर्गादास को देखकर भय से कांपता देखा जाता था। इसी प्रकार बुंदेलखंड शासक छत्रपाल ने मुग़ल साम्राज्य की सेना के विरुद्ध अस्सी युद्ध किए और वे हर युद्ध में विजयी हुए थे। सन् 1689 ई में औरंगजेब ने छत्रपति शिवाजी महाराज के वीर पुत्र छत्रपति शंभाजी को छल पूर्वक बंदी कराकर उन्हें बहुत भयंकर अमानवीय यातनाएं देकर उनका वध कराकर उनके सात वर्ष के पुत्र शाहूजी एवम् उनकी (शम्भाजी जी की) पत्नी येशुबाई को अहमद नगर के कारागार में बंदी बना लिया था। जिसके कारण उत्पन्न मराठों के आक्रोश को दबाने के प्रयास में औरंगजेब को लगभग डेढ़ दशक तक अहमद नगर में रहना पड़ा था। इस अवधि में उतरी भारत के वीर राजपूत राजाओं अनिरुद्ध सिंह, महाराणा राज सिंह, छत्रसाल, सवाई राजा जयसिंह तथा वीर दुर्गादास राठौड़ की सम्मिलित शक्ति से औरंगजेब बहुत भयभीत रहने लगा था और उन्हें मुग़ल साम्राज्य के लिए बहुत बड़ा खतरा मानने लगा था। इसलिए उसने अफगानिस्तान से कुख्यात खूंखार दाउद खान को निमंत्रित करके कटेहर का राज्य उसे सौंप दिया ताकि वो उत्तरी भारत के स्वतंत्र तथा स्वशासित राज्यों कनेरीकला, सरसावा, शेरकोट, हल्दौर, सहारण, पथरगढ़ एवम् जगादरी की शक्तियों पर अंकुश लगा सके। परन्तु वीर अनिरुद्ध सिंह के नेतृत्व में इन राज्यों की सम्मिलित शक्ति के सामने मुगल सेना तथा बर्बर दाउद खान की एक भी ना चल सकी तथा मुगल सेना इनमें से किसी भी राज्य की सीमा को लांघ कर देवभूमि उत्तराखंड में प्रवेश न कर सकी। इन राज्यों की सम्मिलित शक्ति ने कनेरी कला के ध्वज के नेतृत्व में परम योद्धा मिर्जा राजा जयसिंह के नेतृत्व में विशाल मुगल सेना एवम् दाउद खान की सम्मिलित सेना को विदुर कुटी के गंगा घाट पर परास्त करके पूर्णतः छिन्न–भिन्न कर दिया था जिससे औरंगजेब पूरी तरह भयभीत हो गया था और बौखला गया था। उसी कुंठा में उसने षडयंत्र करके मिर्जा राजा जयसिंह को बहरामपुर में विष दिलवाकर मरवा दिया था। वीर अनिरुद्ध सिंह, सवाई राजा जयसिंह तथा वीर छत्रसाल की मदद से ही वीर मराठे औरंगजेब को छत्रपति शंभाजी की निर्मम हत्या के अपराध के लिए दंडित करने और अहमद नगर के कारागार से मराठा युवराज शाहूजी को मुक्त कराने तथा उन्हें 3 मार्च 1707 में छत्रपति बनाने में सफल हुए थे। इन सभी घटनाओं के नायकों वीर अनिरुद्ध सिंह, अद्भुत संगठन कर्ता विशाल सिंह, महापराक्रमी महारानी ऋचा, पथरगढ़ के शासक वीर विजय सिंह, बुंदेलखंड नरेश अद्भुत वीर छत्रसाल, वीर दुर्गादास राठौड़ आदि अनेक अद्भुत राजपूत वीरों का कोई भी उल्लेख उस इतिहास में नहीं है जो ब्रिटिश काल तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हमारे स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है। ये इतिहास अंग्रेजों के द्वारा बाबरनामा, अकबरनामा, आयीने अकबरी, जहांगीरी इंसाफ, तथा औरंगजेब के अनेक तथ्य रहित दस्तावेजों के आधार पर लिखा गया है जिसे इरफान हबीब तथा रोमिला थापर जैसे कई वामपंथी इतिहासकारों ने अनेक प्रकार से प्रदूषित तथा कलुषित बना दिया है जिससे भारत की महान प्राचीन संस्कृति तथा गौरव शाली अतीत से छात्रों को अनभिज्ञ बनाए रखा जा सके। इन सभी वामपंथी इतिहासकारों के कुत्सित प्रयासों और स्वतंत्र भारत के मौलाना आज़ाद, मोहम्मद करीन छागला, तथा नुरुल हसन जैसे शिक्षा मंत्रियो की भारतीय संस्कृति के प्रति उदासीनता ने दो सौ वर्षो के मुगल साम्राज्य को भारत का मुख्य इतिहास बना दिया है और ऐसा भ्रमजाल फैला दिया है जिससे लगता है कि भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य से पहले कोई यशस्वी सम्राट नहीं हुआ था। इन धूर्त मान्धाता संवत के बाद राम संवत और उसके बाद युधिष्ठिर संवत तथा विक्रमी संवत के उल्लेख अनेक बार हुए है। श्री राम से पहले भी सूर्यवंश में 66 प्रतापी तथा यशस्वी नरेश हो चुके थे तथा उनके बाद भी इस वंश में महाभारत काल तक 31 वीर राजा हुए थे जिनमे से 31वे नरेश ब्रहथबल का बध महाभारत युद्ध में अभिमन्यु के हाथों हुआ था। महाभारत के बाद युधिष्ठिर संवत 2905 में इस वंश में सुमित नाम के राजा हुए थे जो अयोध्या के अंतिम सूर्यवंशी नरेश थे और इस प्रकार श्री राम के बाद भी अयोध्या में लगभग पांच हजार वर्षो तक यशस्वी तथा उज्ज्वल सूर्यवंश का शासन रहा था। महाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर संवत 3000 तक चंद्रवंश में भी अनेक प्रतापी तथा यशस्वी सम्राट हुए थे। उसी समय पर अवंती तथा मगध में 138 वर्षो तक प्रद्योत साम्राज्य तथा 150 वर्षो तक हरायंका साम्राज्य (जिसमें बिंबसार तथा अजातशत्रु जैसे सूर्यवंशी प्रतापी सम्राट हुए) रहा।उसके बाद शिशुनाग साम्राज्य और नंद साम्राज्य रहा और बाद में सूर्यवंशी यशस्वी मौर्य साम्राज्य रहा। युधिष्ठिर संवत् 3139 (3082 ईशा पूर्व) में अग्नि वंशी महा प्रतापी सम्राट परमवीर विक्रमादित्य हुए जिन्होंने कालगणना के लिए विक्रमी संवत् चलाया था जो अभी भी भारतीय काल गणना में प्रयोग किया जाता है। उनके वंश के 800 वर्षो के शासन के बाद सातवाहन राजवंश ने 200 वर्षो तक अबाध रूप से शासन किया। इस प्रकार रामायण काल से सम्राट अशोक तक के लगभग पांच हजार वर्षों के अत्यंत गौरवशाली इतिहास का तथा मुगल काल के उक्त प्रतापी राजपूत राजाओं का उस इतिहास मे कहीं भी उल्लेख नहीं है जिसे हमारे देश मे पढ़ाया जाता है। जबकि केवल दो सौ वर्षो के विदेशी आक्रमणकारी मुगलसाम्राज्य को बहुत महिमा मंडित किया गया है। इन तथ्यों के प्रकाश में ये परम आवश्यक है कि भारत के गौरवशाली इतिहास का पुनर्लेखन किया जाए। उसी प्रयास में मैंने 'प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक धरोहर' शीर्षक की एक पुस्तक का लेखन गत पांच वर्षो में अपने अशरीरी चिरंतन सदगुरु महर्षि आनंदमूर्ति द्वारा प्रदत्त परम सत्य ज्ञान (जिसमें वर्णित सभी घटनाओं का पूर्ण वैज्ञानिक परीक्षण करके प्रमाणित किया गया है) के आधार पर किया है जो शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी।

(लेखक कुमाऊँ विवि., नैनीताल के पूर्व कुलपति हैं)

ISSN No. 2581-3528

अनुपम स्थापत्य कला की विरासत रुद्रेश्वर रामप्पा मंदिर

प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

दक्षिण भारत के प्राचीन और भव्य मंदिरों में काकतीय मूर्तिकला और वास्तुकला के सबसे बेहतरीन और प्राचीन उदाहरणों और सबसे प्रमुख विरासतों में से एक रामप्पा मंदिर भारत में ही नहीं अपितु ऐसा कहा जाता है कि यह सम्पूर्ण विश्व में एक मात्र ऐसा मंदिर है, जिसका नाम भगवान के नाम पर न होकर मंदिर निर्माण करने वाले उसके शिल्पकार रामप्पा के नाम पर है। यहां पर भगवान रामलिंगेश्वर की पूजा की जाती है, अतः इसे 'रामलिंगेश्वर स्वामी मंदिर' भी कहते हैं। साथ ही साथ शिव मंदिर होने के कारण इसे 'रूद्रेश्वर मंदिर' भी कहा जाता है। कहा जाता है कि इस मंदिर में विराजित भगवान रुद्रेश्वर महादेव का शिवलिंग स्वयंभू है। इस मंदिर में एक हजार स्तंभ हैं, इसलिए इसे 'हजार स्तंभों वाला मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है। आमतौर पर मंदिरों में देखा जाता है कि भगवान शिव और विष्णु के साथ ब्रह्मा जी की प्रतिमा होती है, परन्तु यहां एक ही छत के नीचे भगवान शिव और विष्णु के साथ सूर्य देव की मूर्ति है, इसलिए इसे 'त्रिकुटल्यम' भी कहते हैं। इसमें भगवान शिव का मंदिर पूर्व दिशा में है, जबकि अन्य दो मंदिर दक्षिण और पश्चिम दिशा की ओर हैं। भगवान विष्णु और भगवान सूर्य के मंदिर चौकोर आकार के सभा मंडप के माध्यम से भगवान शिव के मुख्य मंदिर से जुड़े हुए हैं। यह एकमात्र ऐसा मंदिर है जो एक तारे के आकार का है।

तेलंगाना राज्य के वारंगल से 66 किमी, मुलुगुसे से 15 किमी और हैदराबाद से 209 किमी की दूरी पर हनमकोंडा की पहाड़ी पर मुलुगु जिले के वेंकटपुर मंडल के पालमपेट गाँव की घाटी में स्थित इस रामप्पा मंदिर के परिसर में स्थित एक शिलालेख के अनुसार इसका निर्माण वर्ष 1213 ईस्वी में काकतीय शासक गणपति देव के शासनकाल के दौरान उनके एक सेनापति रेचारला रुद्र देव ने करवाया था। बताते हैं कि राजा गणपति देव ने ऐसा मंदिर बनाने की बात कही, जो कि वर्षो तक टिका रहे। शिल्पकार रामप्पा ने अपनी शिल्पकला का अद्भुत परिचय देते हुए इस मंदिर का निर्माण किया, शिल्पकार की अद्भुत कला से सम्मोहित होकर राजा गणपति देव ने इस मंदिर का नाम शिल्पकार रामप्पा के नाम पर ही रामप्पा मंदिर रख दिया। मंदिर से जुड़े कुछ अन्य तथ्य यह भी बताते हैं कि मूलरूप से यहां एक अति प्राचीन काल से रुद्रेश्वर मंदिर था जिसका जीर्णोद्धार करवा कर राजा रुद्रदेव ने इसको नया आकार और विस्तार दिया था। अतः इसको रुद्रेश्वर रामप्पा मंदिर के नाम से भी पुकारा जाता है।

यह मंदिर अभियांत्रिकी विशेषताओं को दर्शाता हुआ शिल्प और कला की अनूठी विरासत है। प्रमुख बात यह है कि इस दौर में बने ज्यादातर मंदिर खंडहरों में परिवर्तित हो चुके हैं, लेकिन कई प्राकृतिक आपदाओं के बाद भी इस मंदिर को कोई विशेष क्षति नहीं पहुंची है। इसके निर्माण में जिन पत्थरों का उपयोग हुआ है वह पानी में भी नहीं डूबते। इसकी नींव में बालू भरी हुई है, जो इसके भूकंपरोधी होने का प्रमाण है।

काकतीय वंश के शासन के दौरान की जाने वाली बेहतरीन नक्काशी और स्थापत्य कला की बारीकियों को सुन्दर रूप से दर्शाता रामप्पा मंदिर पूर्ण रूप से दक्षिण भारतीय चालुक्य शैली में बना है। मंदिर तीन अलग–अलग रंग के पत्थरों (लाल, सफेद और भूरे) के साथ बनाया गया है, जिसमें एक ही पत्थर पर रंगों का विलय किया गया है। मंदिर की मुख्य संरचना का निर्माण तो लाल बलुआ पत्थर से किया गया है, लेकिन बाहर के स्तंभों को लौह, मैग्नीशियम और सिलिका से समृद्ध काले

बेसाल्ट के बड़े पत्थरों से बनाया गया है। मंदिर पर पौराणिक जानवरों और महिला नर्तकियों या संगीतकारों की आकृतियों को उकेरा गया है, और यह काकतीय कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं, जो अपनी महीन नक्काशी, कामुक मुद्राओं और लम्बे शरीर और सिर के लिए विख्यात हैं। मंदिर के गर्भगृह के सामने के कक्ष में कई नक्काशीदार स्तंभ हैं जिनकी संरचना इस प्रकार की गई है कि यह मिलकर प्रकाश और अंतरिक्ष को अद्भुत रूप से जोड़ने का प्रभाव उत्पन्न करते हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों पर 526 हाथी भी उकेरे गये हैं, जिनका मुख दक्षिणावर्त है। एक नक्काशी इस प्रकार की भी है कि जिसमें बीच में तीन नर्तकी हैं लेकिन केवल चार पैर दिखाई देते हैं। यदि मध्य नर्तकी के शरीर को बंद करते हैं, तो दो नर्तकियों को नाचते हुए देखा जा सकता है, लेकिन जब दोनों तरफ नर्तकियों के शरीर को बंद करते हैं, तो बीच की टांगें बीच वाली नर्तकी की टांगें बन जाती हैं।

यह मंदिर 6 फीट ऊंचे आधार पर खड़ा है और दीवारों पर रामायण और महाभारत की कहानी को नक्काशियों के जरिए उकेरा गया है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर स्थित काले पत्थर को तराश कर बनायीं गयी भगवान शिव के प्रिय नंदी की विशाल प्रतिमा स्थापित है जो कि बहुत ही भव्य और शोभायमान प्रतीत होती हैं। इसे काले पत्थर को तराश कर बनाया गया है। ऐसा लगता है कि नंदी बस चलने ही वाला है। इतना ही नहीं, इस मूर्ति में नंदी की आंखें ऐसी हैं कि आप किसी भी दिशा से उसे देखें आपको लगेगा कि वो आपको ही देख रहा है।

मंदिर में स्तंभों पर बहुत ही बारीक वास्तुकला है। इसमें सुई से भी बारीक छेद हैं। मंदिर में लगे पत्थरों को तराश कर उनमें फूलों की बेलाओं को कुछ इस तरह से तराशा गया है कि आज भी फूल और पत्थर के बीच की उन दरारों में से किसी भी पतली वस्तु को आर–पार निकाला जा सकता है। इस मंदिर की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि इस में विराजमान देवों को मंदिर के किसी भी कोने से देखने पर कोई स्तंभ बीच में नहीं आता है। इसमें पांच फुट ऊंची भगवान गणेश की भी एक प्रतिमा है।

सैंड–बॉक्स तकनीक से निर्मित इस मंदिर के मंदिर शिखर या गोपुरम के निर्माण में उपयोग की जाने वाली ईंटों का वजन 0.85 से 0.9 ग्राम/ सीसी है जो पानी के घनत्व (1 ग्राम/सीसी) से कम होता है। एक स्तंभ पर की गयी नक्काशी में भगवान कृष्ण की मूर्ति है, उन्हें गोपिका वस्त्रहरण की पौराणिक कथा को दर्शाते हुए अपनी बांसुरी बजाते हुए एक पेड़ पर बैठे दिखाया गया है। संगीत में प्रयुक्त सप्त स्वर, (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) को भगवान की मूर्ति को टैप करके सुना जा सकता है। एक खंभे पर बारीक नक्काशी की गई है जो चूड़ी के आकार की है। इसमें 13 छेद हैं, जो पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव की त्रयोदशी को इंगित करते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव ने अन्य ऋषियों को बचाने के लिए त्रयोदशी पर राक्षसों को हराया था। पत्थर के खंभों के बीच 13 पतले धागे वाले छेद काकतीय राजाओं की वास्तुकला की समृद्धि को दर्शाते हैं। मूर्तिकला के छिद्रों से केवल एक छोटा धागा या सुई ही गुजर सकती है। मंदिर के खंभों के ऊपर नृत्य करते हुए नर्तकियों की 12 काले पत्थर की मूर्तियाँ हैं। प्रत्येक आकृति की एक अलग विशेषता है, जिसका नाम रागिनी है, जो ऊँची एड़ी के जूते पहने हुए है। काम इतना जटिल है कि एक नर्तकी पर, उसके द्वारा पहने गए हार की छाया है जो प्राकृतिक दिखती है लेकिन वास्तव में खुदी हुई है। सूरज का कोण कुछ भी हो, लेकिन उसके शरीर पर छाया दिखाई देती है।

मध्यकालीन यात्रियों का राजकुमार की उपाधि प्राप्त वेनिस निवासी इतालवी यात्री मार्कोपोलो द्वारा इस रामप्पा मंदिर को ''दक्कन के मध्ययुगीन मंदिरों की आकाशगंगा का सबसे चमकीला तारा'' कहा गया है। इस मंदिर की उत्कृष्ट तकनीक को इसी बात से समझा जा सकता है कि 17 वीं सदी में जब इस इलाके में 7.7 से 8.2 रिक्टर स्केल का भीषण भूकंप आया तो इस मंदिर के आसपास की लगभग सभी इमारतें ध्वस्त हो गई थीं, परन्तु इस मंदिर को कोई क्षति नहीं हुई थी।

जब तक काकतीय वंश का शासन रहा तब तक यह मंदिर अपनी उत्कृष्टतम स्थिति में रहा, जैसे ही काकतीय वंश टूटकर बिखरा, तो इसका लाभ ले कर इस संपूर्ण दक्खन क्षेत्र पर विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमणों का दौर शुरू हो गया और 14वीं शताब्दी के आते–आते यहां के अधिकांश भाग पर मुहम्मद बिन तुगलक का अधिकार हो गया। तुगलक वंश के शासकों द्वारा यहां के अन्य कई छोटे–बड़े मंदिरों की तरह ही इस मंदिर पर भी भीषण प्रहार किया गया और इसे अपवित्र कर उसमें से कीमती आभूषण और रत्न–जवाहरात आदि लूटने के बाद इसकी मुख्य संरचना को ढहाने का घ्रणित कार्य गया। लेकिन, जब इस मजबूत संरचना को नष्ट करने में तुगलक वंश के पसीने छूटने लगे तो उन लोगों ने इसके स्तंभों पर बनी तमाम मूर्तियों को खंडित करना शुरू कर दिया और जितना हो सकता था इस मंदिर को खंडित किया।

रामप्पा मंदिर के स्तम्भों में जिनका विनाश तुगलक वंश ने डेक्कन आक्रमण के दौरान कर दिया गया था, इनमें एक हजार स्तम्भ (अर्थात खम्भे) प्रमुख रूप से थे। तुगलक वंश के आक्रमण के दौरान इस मंदिर को भारी क्षति पहुंची। वर्ष 2004 में भारत सरकार ने इस मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया, तथा नष्ट हुए स्तंभों को पुनर्निर्माण के समय हटा दिया गया। अब यहां पर लगभग 300 से कुछ अधिक स्तम्भ ही शेष बचे हैं और मूर्तियाँ खंडित अवस्था में हैं। परन्तु आज भी इन मूर्तियों की चमक सुरक्षित है।

दुर्भाग्य से, इस रामप्पा मंदिर के हर एक हिस्सों में की गई जितनी भी मूर्तियों की नक्काशी ऊभरी हुई थीं वे सभी आक्रान्ताओं द्वारा तोड़ी जा चुकी हैं। मंदिर के मुख्य द्वार के ठीक सामने बिना किसी जोड़ के एक ही काले पत्थर में उकेर कर बनायी गयी नंदी की मूर्ति के भी ज्यादातर अंग अब खंडित अवस्था में ही देखने को मिलते है। जबकि इस नंदी के उपर की गई नक्काशी आज भी उतनी ही आकर्षक और मनमोहक है।

इतिहासकारों का कहना है कि अगर हम उन उभरी हुई नक्काशियों को, आज देख पाते तो वर्तमान में दुनिया का ये एकमात्र ऐसा मंदिर होता जिसके आगे विश्व के सातों आश्चर्य एक साथ विफल हो जाते। लेकिन, आज भी यहां जो नक्काशियां देखने को मिल रहीं हैं वे भी उन सातों आश्चर्यों से बढ़ कर हैं।

वर्ष 2021 में इस मंदिर को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर में भारत की 39 वीं विरासत के रूप में सम्मिलित किया गया है जो इस बात का प्रमाण है कि भारत की सनातन संस्कृति की चमक विश्व पटल पर अपना प्रकाश एवं वर्चस्व आज भी रखे हुये है।

(लेखक सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री' विभूषित ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक, प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिन्तक हैं)

ISSN No. 2581-3528

संचार तन्त्र की विवशता

नरेन्द्र भदौरिया

भारत में दंगों के वास्तविक अपराधियों को बचाने की संचार माध्यमों की विवशता स्वयं की ओढ़ी हुई नहीं है। स्वतन्त्रता के पहले और बाद के लगभग 60 वर्षों तक इसके लिए समाचार पत्रों और आकाशवाणी रेडियो के लिए सरकार की ओर से यह निर्देश रहते थे कि दंगों के उत्तरदायी समुदाय और उनके लोगों को चिन्हित नहीं किया जाए। स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास को देखें तो 1920–25 तक सब ठीक चलता रहा। आन्दोलन के पुरोधाओं को यह प्रतीत होने लगा कि अब भारत की दासता की बेड़ियां कटने में अधिक देर नहीं है। पर इसके बाद देश के बहुसंख्य हिन्दू समाज के प्रति मुसलमानों को खड़ा करने में अंग्रेज सफल होने लगे। देश के हर राज्य के छोटे–बड़े शहरों में ब्रिटिश सरकार के अधिकारी साम्प्रदायिकता की आग भड़काने में सफल होने लगे।

सरदार भगत सिंह ने 23 मार्च 1931 को फांसी पर चढ़ाये जाने से पहले एक लेख लिखा था जिसमें यह दुःख व्यक्त किया था कि हिन्दुओं के विरुद्ध कई मुस्लिम संगठनों के नेता अंग्रेजों के उकसाने पर आक्रामक हो उठते हैं। इससे स्वतंत्रता के आन्दोलन को बहुत क्षति हो रही है। इनकी पीड़ा यह भी थी कि हिन्दुओं के कई नेता जो अपने प्रभाव से भेद की यह आग बुझा सकने में समर्थ होते हैं वह या तो मौन होकर बैठ जाते हैं या फिर स्वयं दूसरे पक्ष की पीठ का सहारा लेने लग जाते हैं। सरदार भगत सिंह का यह पत्र उस समय लाहौर के एक छोटे हिन्दी पत्र में छपा था। वीर भगत सिह ने बड़े दुःख से लिखा था कि भारत की जनता के स्वातन्त्र्य के अधिकार को सम्प्रदायिक उन्माद की यह आग और आगे धकेल ले जाएगी। यह भी सम्भव है कि भारत की स्वतन्त्रता के निर्मल आन्दोलन को रक्त के यह छींटे बहुत कलंकित कर दें।

उन्होंने अन्त में लिखा था कि यह काले बादल छंटने की आशा की किरण बहुत पतली अवश्य है तथापि भारत के युवकों की समझ पवित्र है। वही जन समुदाय को इस आंच से बचा सकते हैं। सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को अंग्रेजों ने न्यायालय की ओर से नियत तिथि से 11 घण्टे पहले फांसी दे दी थी। सरदार भगत सिंह सहित तीनों वीरों को नियोजित ढंग से दुर्भावनावश 23 मार्च 1931 की शाम लगभग 07 बजे फांसी दी गयी थी। यह फांसी लाहौर की जेल में दी गयी थी। सरदार भगत सिंह उस समय के विधान से परिचित थे।

उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों से पूछा था कि नियत तिथि से पहले उन्हें मृत्यु दण्ड क्यों दिया जा रहा है। वह नीच अधिकारी अपना मुंह उनके बार–बार कहने पर भी कैसे खोलते। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को यह भी पता था कि उस समय उनकी फांसी देने का क्रूर दण्ड बदलने के लिए ब्रिटिश सरकार से कहने की सलाह मोहनदास करम चन्द गांधी और नेहरू की टोली ने नहीं मानी थी। इसलिए असमय मृत्यु का वरण करना उनकी विवशता हो चुकी थी। भारत के स्वातन्त्र्य आन्दोलन के महानायक गांधी जी विभाजन के पक्षधर नहीं बन सकते यह भरोसा पूरे देश के हिन्दू समाज को था। किन्तु मुस्लिम लीग ने सीधे हिन्दुओं का नरसंहार करना शुरू कर दिया। हिन्दू समाज को प्रतिकार नहीं तो बचाव करना भी न आ सका। वह अपने नेताओं के अहिंसा के मन्त्र का जाप करते रहे। रक्त से भारत माता का आंचल गीला हो गया। स्वयं गांधी ने नोवाखाली के नरसंहार से व्यथित होकर लिखा था हिन्दू कायर हैं, जबकि मुस्लिम समाज के बुली यानि सांड़ या गुण्डे निरीह लोगों का रक्त बहाते हैं। वर्तमान बांग्लादेश और बंगाल में नरसंहार के वास्तविक आंकड़ों के लिए इतिहास आज तक तरस रहा है। कोई कहता है तो बस यही कि यह संहार उस सदी से लेकर अब तक सबसे भयानक था। तभी से प्रेस को यह विवशता ओढ़ना सिखा दिया गया कि दंगों का दोषी भले एक पक्ष हो पर दोनों पक्षों पर इसे मढ़ दीजिए। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस की सरकारों का दबाव प्रत्यक्ष होने लगा कि मुसलमानों को दंगा करने का दोष मत दो। हिंसा की अगुवाई किसने की और कौन बचाव करने भर का दोषी है, किसने युद्ध की रीति से तैयारी करके हिंसा की, यह बातें जानते हुए प्रेस ने मौन रखकर रीति निभायी। मुंह पर ताला डाले भारत के पत्रकार अपना धर्म निभा रहे हैं यानि असत्य की ओट में सच्ची पत्रकारिता का कलावा बांधे फिरने को विवश हैं। मुस्लिम समाज बदली हुई परिस्थिति को पढ़ना नहीं चाहता। वह यह मानने की स्थिति में नहीं है कि उसको बुली समझ कर हिन्दुओं की ग्रीवा अब नहीं लटकेगी। भीड़ के हिंसा बल का भरोसा शान्त चित से सोचने नहीं देता। यही प्रत्यक्ष कारण है जिससे भारत और सभी देशों के मुसलमानों का रक्त बात–बात पर उबल पड़ता है। तनिक उकसावे की बात उनको अपना बल दिखाने का बढ़िया अवसर लगती है।

(लेखक राष्ट्रवादी विचारक एवं लेखक हैं)

ISSN No. 2581-3528

गुरु–पूर्णिमा

राम कुमार शर्मा

महर्षि वेदव्यास जी का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा को लगभग 3000 ई. पूर्व में हुआ था। उनके सम्मान में ही हर वर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। कहा जाता है कि इसी दिन व्यास जी ने शिष्यों एवं मुनियों को सर्वप्रथम श्री भागवत पुराण का ज्ञान दिया था। अतः यह शुभ दिन व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है।

गुरु के बिना न तो जीवन की सार्थकता है और न ही ज्ञान प्राप्ति सम्भव है। जिस तरह हमारी प्रथम गुरु मां हमें जीवन देती है और सांसारिक मूल्यों से हमारा परिचय कराती है, ठीक उसी तरह ज्ञान और भगवान की प्राप्ति का मार्ग केवल एक गुरु ही दिखा सकता है। ऐसा कहें कि गुरु के बिना कुछ भी संभव नहीं है। शायद यही वजह रही होगी कि गुरु पूजा की शुरुआत की गई। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आषाढ़ माह में ही गुरु पूर्णिमा क्यों पड़ती है और आखिर किसने यह परम्परा शुरू की ?

शास्त्रों में 'गु' का अर्थ बताया गया है– अंधकार और 'रु' का अर्थ – प्रकाश उसका निरोधक। गुरु को गुरु इसलिए कहा जाता है कि वह अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाता है। प्राचीनकाल में शिष्य जब गुरु के आश्रम में निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करते थे तो इसी दिन पूर्णश्रद्धा से अपने गुरु की पूजा का आयोजन करते थे।

सनातन संस्कृति में गुरु देवता तुल्य माना गया है। गुरु को हमेशा से ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूज्य माना गया है। वेद, उपनिषद और पुराणों का प्रणयन करने वाले वेदव्यास जी को समस्त मानव जाति का गुरु माना जाता है। इसी दिन वेदव्यास के अनेक शिष्यों में से पांच शिष्यों ने गुरु पूजा की परम्परा प्रारम्भ की। पुष्प मंडप में उच्चासन पर गुरु यानी व्यास जी को बिठाकर पुष्पमालायें अर्पित की, आरती की तथा अपने ग्रन्थ अर्पित किए थे। इसी कारण से प्रतिवर्ष इस दिन लोग व्यास जी के चित्र का पूजन और उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं। कई मठों और आश्रमों में लोग ब्रह्मलीन संतों की मूर्ति या समाधि की पूजा करते हैं।

भारतवर्ष में सभी ऋतुओं का अपना महत्व है। गुरु पूर्णिमा खास तौर पर वर्षा ऋतु में मनाने के पीछे भी एक कारण है। क्योंकि इन चार माह में न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी होती है। यह समय अध्ययन और अध्यापन के लिए अनुकूल व सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए गुरु चरण में उपस्थित होकर शिष्य ज्ञान, शांति, भक्ति और योग शास्त्र को प्राप्त करने हेतु समय का चयन करते हैं।

वैसे तो हर दिन गुरु की सेवा करनी चाहिए लेकिन इस दिन हर शिष्य को अपने गुरु की पूजा कर अपने जीवन को सार्थक करना चाहिए।

वर्ष की अन्य सभी पूर्णिमाओं में इस पूर्णिमा का महत्व सबसे ज्यादा है। इस पूर्णिमा को इतनी श्रेष्ठता प्राप्त है कि इस एक मात्र पूर्णिमा का पालन करने से ही वर्षभर की पूर्णिमाओं का फल प्राप्त होता है। गुरु पूर्णिमा एक ऐसा पर्व है जिसमें हम अपने गुरुजनों, महापुरुषों, माता–पिता एवं श्रेष्ठजनों के लिए कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते है।

आषाढ़ पूर्णिमा जिसे गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं, के दिन से ही गुरु पूजन के कार्यक्रम शुरू हो जाते है। संघ में व्यक्ति विशेष को गुरु न मानकर परम पवित्र भगवाध्वज को गुरु रूप में माना गया है। अधिकतर संगठनों में संस्थापक को ही गुरु मानने की परम्परा समाज में प्रचलित है। गुरु के विषय में कहा गया है –

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति, पूजा मूलं गुरोः पद्म।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यम् मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।

भगवाध्वज को गुरु मान कर संघ ने समाज में एक मर्यादा स्थापित की है। तथा दिशा भी तय की है कि व्यक्ति पूजा नहीं सिद्धान्तों के प्रति तथा तत्व के प्रति समर्पण।

(लेखक सरस्वती शिशुमंदिर मेरठ के पूर्व प्रधानाचार्य हैं)

छत्रसाल पर कविता (आल्हा)

लालकुँवरि क्षत्राणी माता, पिता बहादुर चंपतराय,
छत्रसाल को कौन न जाने, शौर्य-पराक्रम के पर्याय।
रक्षक भारत की धरती का, वीरों की माटी का लाल,
जिसने आँख दिखाई समझो, टूटा उस पर बनकर काल।

योद्धा था बुंदेलखंड का, कभी न देखी जिसने हार,
धूल चटाई हर दुश्मन को, रखा देश से अपने प्यार।
शस्त्र-शास्त्र का मान बढ़ाया, किया काव्य का गौरव-गान,
सुख-सुविधा जनता ने पाई, विद्वानों ने पाया मान।

टक्कर दी औरंगजेब को, छत्रसाल ने जब ललकार,
भारत माँ ने खुद बेटे की, बड़े गर्व से की जयकार।
ऐसे योद्धा की महिमा का, सच्चे मन से करो बखान,
जागो-जागो आज सपूतो, तभी बचेगा हिंदुस्तान।

– डॉ. अंजना सिंह सेंगर

ISSN No. 2581-3528

कानून नहीं, जागरूकता से ही दूर होगा बालश्रम का कलंक

(विश्व बालश्रम दिवस पर विशेष)

स्वाती सिंह

अभी कुछ दिन पहले स्वाती फांउडेशन के एक जागरूकता कार्यक्रम में प्रयागराज गयी थी। वहां से लौटते वक्त कुंडा (प्रतापगढ़) के पास सड़क किनारे एक बच्चे पर नजर पड़ी। उसके हाथ में जूता पालिस व ब्रश थे। बरबस ही हमें गाड़ी रुकवानी पड़ी। मैं, उसकी ओर खिंचती चली गयी। आखिर बचपन जो बर्बाद होता दिख रहा था। ऐसे में दिल का धड़कना, भारत के भविष्य की सोच किसी जागरूक के दिल को ठेस पहुंचा सकती है। वैसा ही मेरे साथ भी हुआ। मैंने बच्चे से पूछा, तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं, उसका जवाब था। वे पंचर की दुकान खोले हुए हैं। मैंने बिना अपना परिचय बताए, ड्राइवर को बोला जरा बच्चे के पिता के पास चलो। पिता के पास जाने पर पता चला कि उनकी आमदनी 30 हजार रुपये प्रतिमाह तक हो जाती है। इसके बावजूद वे बच्चे को स्कूल नहीं भेजते। औपचारिकता के तौर पर स्कूल में प्रवेश करा दिया है, लेकिन वह बच्चा पढ़ाई से ज्यादा समय जूता पालिश करने में लगाता है। मैंने पूछा, भइया आप बच्चे को शिक्षा क्यों नहीं देते। उसका जवाब था, बहन शुरू से ही काम की आदत बनी रहेगी तो वह कभी भूखा नहीं रह सकता। पढ़ाई से क्या होगा। यह देख मैं आश्चर्य में पड़ गयी और पढ़ाई के तमाम फायदे बताकर लखनऊ आ गयी। उसके बाद वह हर दिन स्कूल भेजने व बच्चे को उच्च शिक्षा देने को राजी हो गया।

यह हकीकत बताने का मतलब है कि हम तमाम योजनाएं लाकर, कानून बदलकर बालश्रम को दूर करने में सफल नहीं हो सकते, जब तक हम संस्कृति में बदलाव लाने, लोगों की सोच बदलने का प्रयास नहीं करेंगे। याद करिए, जब दूरदर्शी सोच रखने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खुद झाड़ू उठाकर स्वच्छता अभियान की शुरूआत की तो कुछ लोग आश्चर्य भरी निगाह से देख रहे थे, तो कुछ विरोधियों को उनके अभियान में सहज लोकप्रियता का तरीका दिख रहा था। धीरे–धीरे ही सही आज हर व्यक्ति दुकान या रेहड़ी पर कुछ भी खाने के बाद दोना फेंकने के लिए डस्टबिन की तलाश करता है। सड़क पर गंदगी फेंकने से बचता है। इसके लिए किसी एक व्यक्ति से कहा नहीं गया, सिर्फ जागरूक किया गया। प्रधानमंत्री ने कार्य संस्कृति बदलने की कोशिश की। लोगों को उनके कर्तव्य की याद दिलाई और आज उसकी सफलता सबके सामने है।

वही स्थिति प्रदेश में कार्य संस्कृति को बदलने, धर्म रक्षा के लिए आगे बढ़कर चलने वाली संत परंपरा के महान संत योगी आदित्यनाथ ने स्कूल चलो अभियान को एक उत्सव के रूप में पूरे प्रदेश में मनाने की परंपरा की शुरूआत की। यह कार्य संस्कृति बदलने में मील का पत्थर साबित हो रहा है। समाज में इससे शनै–शनै ही सही लोगों की मानसिकता में बदलाव हो रहा है। इससे बालश्रम के उन्मूलन में भी सहायता मिल रही है और घरेलू कार्य संस्कृति में बदलाव के साथ ही अभिभावक बच्चों को उच्च शिक्षा देने के लिए जागरूक हो रहे हैं। आगे और जागरूकता बढ़ेगी।

यदि बालश्रमिकों की स्थिति देखें तो सबसे अधिक बालश्रमिक अफ्रीका में 7.21 करोड़ हैं। वहीं भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 5 से 14 साल तक के 25.96 करोड़ बच्चों में से 1.01 करोड़ बच्चे बाल श्रमिक थे और करीब 43 लाख बच्चे बाल मजदूरी करते हुए पाये गये थे। यूनिसेफ के अनुसार यह आंकड़ा दुनिया के बाल मजदूरों का 12 प्रतिशत है। सबसे आश्चर्य की बात है कि अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र में भी एक करोड़ बच्चे मजदूरी करते हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि बालश्रम कानून का डर दिखाकर अथवा उच्च स्तर से कम नहीं हो सकता। इसके लिए जागरूकता लाने की आवश्यकता है। जैसे कि दहेज प्रथा को दूर करने के लिए तमाम कानून बने हैं, लेकिन आज भी वह चल रहा है। कानून उसे रोक नहीं सका।

वैसे ही बालश्रम को रोकने के लिए हमारे संविधान में चार अनुच्छेद में प्रावधान किये गये हैं। अनुच्छेद 15 (3) के तहत बच्चों के लिए अलग से कानून बनाने का अधिकार है। वहीं अनुच्छेद 21 में 6 से 14 साल के बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है, वहीं अनुच्छेद 23 बच्चों की खरीद–फरोख्त पर रोक लगता है। वहीं अनुच्छेद–24 चौदह साल के बच्चों को जोखिम भरे काम करने पर प्रतिबंध लगाता है।

इस तरह की तमाम कानूनी धाराओं एवं अनुच्छेदों के बावजूद बालश्रम को रोका नहीं जा सका है। इसका कारण है कि पूर्व की सरकारों में कर्तव्यबोध नहीं रहा। सिर्फ कानून बनाकर अपनी औपचारिकता पूरी करते रहे। उनमें कभी देश की तरक्की का ख्याल नहीं आया। वे सिर्फ राज करने के लिए तात्कालिक लुभावने काम करते रहे। लंबे समय की योजना, देशहित में मानसिकता बदलने की सोच कभी उनमें देखने को मिली ही नहीं। यह तो पहली बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समझा कि लोगों को उनके कर्तव्य का बोध कराओ। भारत का हर व्यक्ति हर तरह का काम करने में सक्षम है। विशेषकर बच्चों के प्रति किस मां–बाप का मोह नहीं होगा। कौन मां–बाप नहीं चाहेगा कि हमारा बच्चा उच्च पदों तक जाए और आगे बढ़ते भारत में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। उसका बालपन उससे दूर न हो जाए और वह अपनी जिंदगी अपने अनुसार जीते हुए समाज कल्याण के लिए काम करे। इस सोच को समझते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आगे बढ़ रहे हैं। देश के हर नागरिक को उसका कर्तव्यबोध करा रहे हैं। अभी तक बहुत कुछ हासिल हो चुका है। जो शेष बचा है, उसमें आगे सफलता निश्चित है। इस बात को जनता भी समझ रही है। विरोधियों की तड़फड़ाहट इसी बात को लेकर है कि जनता समझ चुकी है कि अब उसे छला नहीं जा सकता। वे क्षणिक लोभ में नहीं आने वाले। आमजन अब अपने उज्ज्वल भविष्य को देख रहे हैं।

(लेखिका उत्तर प्रदेश सरकार की पूर्व राज्य मंत्री हैं)

ISSN No. 2581-3528

'प्रेम सदा मन राखिये, मानवता हो धर्म'

अनुपमा अग्रवाल

'सेवा' शब्द सुनने और लिखने में भले ही छोटा हो, परन्तु उसके पीछे का भाव विस्तृत और व्यापक है।सनातन वैदिक धर्म में तन, मन, धन किसी भी प्रकार से असहाय, दीन दुखियों की सेवा को, सही अर्थों में ईश्वर की सच्ची आराधना माना गया है। हिन्दू धर्म ग्रंथों में सेवा की महत्ता का विस्तृत वर्णन मिलता है। वेदों में सेवा को यज्ञ कुण्ड की संज्ञा और स्वयं को समिधा मानकर सेवा में आहूत करने का आह्वान किया गया है। दूसरे शब्दों में, दूसरों के लिए निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य ही सेवा है।

सेवा के इसी भाव को चरितार्थ करते हुए अलीगढ़ निवासी ललित मोहन ने अपने शहर में असहाय और दुर्घटनाग्रस्त लोगों को निःशुल्क एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध कराकर समय पर अस्पताल पहुंचा कर, अभी तक न केवल सैकड़ों लोगों की जान बचाई है बल्कि बिना किसी आर्थिक सहायता के निःस्वार्थ भाव से पूरे परिवार के साथ इस पावन कार्य में सतत रत हैं। पेशे से एक निजी अस्पताल में व्यवस्थाएं संभालने वाले ललित जी के बड़े और छोटे भाई भी उनके इस पुनीत कार्य में उनका पूर्ण सहयोग करते हैं फिर चाहे वो आर्थिक हो या रखरखाव सम्बन्धित। अल्प आय में महँगी चिकित्सा सेवा प्रदान करने के पीछे आपका मुख्य उद्देश्य दुर्घटना में घायल लोगों को तुरंत अस्पताल पहुंचा कर शीघ्रातिशीघ्र उनको स्वास्थ्य लाभ पहुंचाना है ताकि इलाज में देरी की वजह से किसी के भी घर का चिराग बुझने न पाए।

ललित जी को निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा चालू करने का विचार उस समय आया जब एक बार उन्होंने अपने सामने दुर्घटना में घायल व्यक्ति को एम्बुलेंस उपलब्ध न होने की स्थिति में सड़क पर तड़पते हुए मरते देखा। क्योंकि अकसर सरकारी एम्बुलेंस की ढिलाई कहें या लापरवाही और निजी एम्बुलेंस के मुंह मांगे दामों के चलते शहरों में, दुर्घटनाग्रस्त घायलों को त्वरित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती। जिस कारण अक्सर घायलों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। तभी से आपने ये निश्चित किया कि दुर्घटनाग्रस्त लोगों की सहायतार्थ कुछ ऐसा करेंगे जिससे उनकी कीमती जिंदगी को बचाया जा सके। जिसके लिए उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों और

अस्पताल के डॉ. केशव से सम्पर्क कर उनके सम्मुख अपने विचार रख इस पुनीत कार्य को करने का मन बनाया। सर्वप्रथम ललित जी ने 2015 में बैंक से ऋण लेकर कम बजट की एम्बुलेंस तैयार कराई। साथ ही यह निश्चय किया कि वह इस एम्बुलेंस को शहर के आसपास 5 से 10 किमी के दायरे में इस सेवा का लाभ आमजन तक पहुंचाएंगे ताकि सड़क दुर्घटना में घायल लोगों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया जा सके। आमजन तक इस सुविधा का लाभ पहुंचाने के लिए आपने सबसे पहले टोल फ्री नंबर उपलब्ध कराया। निःस्वार्थ भाव से चलने वाली इस निःशुल्क सेवा में एम्बुलेंस का काफिला बढ़कर 15 तक पहुंच चुका है। जिसमें चार प्रकार की एम्बुलेंस शामिल हैं। इसमें सादा से लेकर वेंटिलेटर की सुविधा वाली एम्बुलेंस हैं। वेंटिलेटर वाली एम्बुलेंस विशेष रूप से गम्भीर रूप से घायल मरीजों को दिल्ली ले जाने के लिए कम दामों पर उपलब्ध कराई जाती है। सभी एम्बुलेंस के रखरखाव, डीजल आदि का खर्चा पूरा परिवार मिलकर एक साथ वहन करता है।

आपदा काल में जब कोरोना ग्रस्त मरीजों को अस्पताल ले जाने के लिए सरकारी अस्पतालों की एम्बुलेंस अपर्याप्त थीं और निजी अस्पतालों की एम्बुलेंस मरीजों से मुंह मांगे दाम वसूल रही थीं उस समय आपने न केवल मरीजों को दिन रात निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध कराई बल्कि दवाओं की किट व ग्लब्स को आमजन तक पहुंचाने में शासन–प्रशासन का सहयोग किया। जिस वक्त लोग अपनों के शवों को अस्पताल से लाने व उनका अंतिम संस्कार करने से बच रहे थे ऐसे समय में कोरोना ग्रस्त लाशों को अस्पताल से शमशान घाट तक लाने व अंतिम संस्कार करने तक का आपने जिम्मा उठाया। नर सेवा नारायण सेवा को ध्येय मानने वाले ललित जी बिना किसी बाहरी आर्थिक सहायता के स्वयं अपने व परिवार के बलबूते इस कारवां को आगे बढ़ा रहे हैं। उनके, सेवा के इस अनूठे प्रयास ने न् केवल सैकड़ों दुर्घटना ग्रस्त लोगों को नया जीवन दान दिया बल्कि सेवा के नए रूप को आमजन के समक्ष प्रस्तुत कर यह साबित कर दिया कि जरूरतमंद लोगों को मुफ्त आवश्यक सामग्री बांटने के अलावा लोगों की जिदंगी बचाकर उन्हें नया जीवन देना सबसे बड़ा सेवा कार्य है।

ललित जी ने सेवा के लिए जिस राह को चुना वह आसान कतई नहीं थी। इस कार्य को आरम्भ करने में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। फिर चाहें वो एम्बुलेंस के लिए बैंकों से ऋण पास कराने की हो या आरटीओ में रजिस्ट्रेशन कराने की। यहां तक कि इसके लिए उन्हें अपने मकान को भी बेचना पड़ा। अपने जुनून के लिए, अपनी छोटी सी आय को सेवा में आहूत करने वाले ललित जी इस सेवा कार्य से शहर में सेवा की अनूठी मिसाल पेश कर शुद्ध भाव व सच्चे मन से ईश्वर की आराधना में लीन हैं।

(लेखिका समाजसेवी एवं पत्र लेखिका हैं)

ISSN No. 2581-3528

भारत की पहली महिला पत्रकार हेमन्त कुमारी देवी चौधरानी

डॉ. नीलम कुमारी

विद्या और साध्विता के भूषण से जब नारी अलंकृत होती है तब मैं उसे अंलकृता समझती हूँ; सोने से भूषिता होने से ही अंलकृत नही होती"। विद्या और नारीत्व के गुण को परिभाषित करती 'सुगृहिणी' पत्रिका की ये टैगलाइन भारत की पहली महिला पत्रकार हेमन्त कुमारी देवी चौधरानी की है, जिसने उस समय पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब नारी शिक्षा का अभाव था और देश अंग्रेजों का गुलाम था। ऐसे समय मे जब देश अंग्रेजी हुकूमत के फंदे में था और तब किसी महिला का आगे बढ़कर ना केवल पत्रकारिता में अपनी मजबूत दखल बनाना बल्कि संपादक की जिम्मेदारी तक पहुंच जाना मायने रखता है।

'वर्ष 1888 में हेमन्त कुमारी देवी ने 'सुगृहिणी' नामक स्त्री पत्रिका नागरी भाषा में निकाली थी। हिन्दी नवजागरण काल के इतिहास में किसी स्त्री द्वारा संपादित 'सुगृहिणी' पहली पत्रिका और श्रीमती हेमन्त कुमारी देवी हिन्दी साहित्य इतिहास में पहली स्त्री संपादिका है। ऐसा इसलिये कहा जा रहा है कि श्रीमती हरदेवी की पत्रिका 'भारत भगिनी' सन 1889 में निकली थी। 'सुगृहिणी' पत्रिका का पहला अंक फरवरी 1888 में निकला था। नवजागरण कालीन यह पत्रिका सुखसंवाद प्रेस, लखनऊ में पण्डित बिहारी लाल के द्वारा मुद्रित होती थी। इस पत्रिका में कुल बारह पृष्ठ होते थे। 'सुगृहिणी' का पहला और आखिरी पृष्ट रंगीन होता था।

19वीं सदी के नवजागरण काल की यह बहुत बड़ी घटना थी कि किसी गैर हिंदी भाषी स्त्री ने स्त्रियों के दुख दर्द को सामने लाने के लिये पत्रिका निकाली थी। यह नवजागरण कालीन लेखकों और संपादकों के लिए आश्चर्य की बात थी कि किसी स्त्री ने स्त्रियों के लिए पत्रिका निकाली है।

'सुगृहिणी' पत्रिका के संबंध में भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध लेखक बाबू राधाकृष्ण दास ने बड़ी मार्मिक टिप्पणी की है– 'स्त्री शिक्षा विषयक दूसरी पत्रिका ''सुगृहिणी'' थी। इसे लाहौर के बाबू नवीनचंद्र राय की पुत्री श्री हेमन्त कुमारी देवी सम्पादित करती थीं। इसका जन्म सन् 1888 ई में हुआ। यह बात हिन्दी के लिये नई थी कि एक स्त्री वह भी बंगालिन एक हिन्दी पत्रिका की संपादिका

हो। इसके लेख ब्रह्म समाज के ढंग पर विशेष होते थे।' राधा बाबू कृष्णदास ने 'बालाबोधिनी' को स्त्रियों की पहली पत्रिका माना है। स्त्रियों की तीसरी पत्रिका हरदेवी की 'भारतभगिनी' को माना है।

इस कुशल पत्रकार, संपादक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रधानाचार्य और कुशल प्रशासक हेमंत कुमारी चौधरी का जन्म लाहौर में वर्ष 1868 में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू नवीन चंद्र राय था। जब वह मात्र 7 साल की थी तो उनकी माता का देहांत हो गया था। उनके पिता ने अपनी बेटी को मां की कमी कभी महसूस नहीं होने दी। बाबू नवीन चंद्र राय भी हिंदी के बड़े लेखक और समाज सुधारक थे वह स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के प्रबल समर्थक थे। बाबू नवीन चंद्र राय 19वीं शताब्दी का एक जाना माना नाम है। पंजाब में स्त्री शिक्षा का बीज बोने का श्रेय बाबू नवीन चंद्र राय को ही दिया जाता है। स्त्रियों के लिए नॉर्मल फैमिली स्कूल उन्होंने ही खोला था। हेमन्त कुमारी देवी की शिक्षा–दीक्षा लाहौर, आगरा एवं कोलकाता में हुई। उनका विवाह सिलहट के रामचंद्र चौधरी से 2 नवंबर 1885 में हुआ जो रतलाम रियासत की नौकरी के सिलसिले में रतलाम आ गए थे। उन्हीं के साथ हेमंत कुमारी भी रतलाम आ गई थी। वह मूलतः बांग्ला भाषी थीं परंतु हिंदी भाषा से उन्हें अतिरिक्त अनुराग था। वे रतलाम रियासत की तत्कालीन महारानी को हिंदी पढ़ाने भी जाया करती थीं। उस समय आसपास की महिलाओं की स्थिति को देखकर उन्हें ऐसी पत्रिका की जरूरत महसूस हुई, जो उन्हें जागरूक कर सके। जिस समय उन्होंने पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया था उस समय उनकी आयु मात्र 20 वर्ष थी। इसके दृष्टिगत उन्हें देश की सबसे कम उम्र की महिला संपादक भी कह सकते हैं।

'सुगृहिणी' के प्रथम अंक में उन्होंने संपादकीय में एक विशेष संवाद लिखा था जो महिलाओं के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। जो इस प्रकार है– "ओ मेरी प्रिय बहन, अपने दरवाजें को खोलो और देखो कि कौन आया है? यह आपकी बहन 'सुगृहिणी' है। यह आपके पास इसलिए आई है क्योंकि आप पर अत्याचार हो रहा है, आप अशिक्षित हो और एक बंधन में बंधी हो... इसका स्वागत करो और इसे आशीर्वाद दो। मां तुम्हारी और सुगृहिणी की सहायता करें।"

हेमंत कुमारी देवी अपनी पत्रिका सुगृहिणी में स्त्रियों की समस्याओं से संबंधित लेख छापती थी। सुगृहिणी में 'अवियार चरित्र' शीर्षक से एक लेख छपा था। इस लेख में अवियार नामक विदुषी स्त्री का उदाहरण देकर बताया गया था कि स्त्रियां बौद्धिक दृष्टि से मजबूत अवस्था में थी इसलिए हमें यह भी कहा गया कि अवियार एक विदेशी महिला थी जो कम्बन के समकालीन थी। उसका जन्म नीच कुल में दक्षिण भारत के किसी गांव में हुआ था। हेमंत कुमारी ने शायद यह लेख स्त्रियों को प्रेरणा देने के लिए लिखा होगा इसके अलावा सुगृहिणी में 'गृह चिकित्सा' 'फोटोग्राफी' नाम के दो कॉलम चलते थे। कॉलम में स्त्रियों की बीमारियों और उनके निदान के लिए दवाई बताई जाती थी।

ISSN No. 2581-3528

पत्रिका में स्त्रियों से संबंधित समाचार छापे जाते थे। सन् 1988 में हेमंत कुमारी देवी ने 'यथार्थ लज्जा' लेख लिखकर घूंघट और पर्दा प्रथा का जबरदस्त विरोध किया था। उनका मानना था कि स्त्रियों को पर्दे और घूँघट में बिल्कुल नहीं रखा जाना चाहिए। वो अपनी पत्रिका में लिखती है कि 'नाना अलंकारों से भूषित बालक भी यदि पापाचारी हो जाए तो उसकी सुंदरता नहीं रहती। जिसका हृदय पाप पूर्ण है बाहर के सुंदर कपड़े और घूंघट से उसे क्या फायदा? वह मुंह में अमृत और पेट में विष से भरा हुआ होता है। शारीरिक दोष जिसके संयमित है, इंद्रियां जिसके वश में है, चित्तवृत्ति जिसकी निरुग और मन जिसका प्रसन्न है उसे घूँघट से मुह ढकने का क्या प्रयोजन ? इस लेख में आगे लिखा गया कि जो स्त्री अपने आप की रक्षा करती है, सुरक्षित है, नहीं तो घूंघट काढ़कर घर में बंद रहने से भी वह सुरक्षित नहीं है। इस प्रकार अगर देखा जाए तो हेमंत कुमारी देवी जहां एक ओर सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात कर रही थी, वही दूसरी ओर स्त्री की स्वतंत्रता की लड़ाई भी लड़ रही थी। हेमंत कुमारी देवी की चिंता थी कि स्त्रियों को कैसे शिक्षित किया जाए। वो इस बात को भलीभांति समझ चुकी थी कि स्त्रियों की स्वतंत्रता शिक्षित होने में ही निहित है। इस निमित्त जब हेमंत कुमारी कलकत्ते के वेथुन स्कूल से अपनी शिक्षा प्राप्त कर लाहौर लौटी तब उन्होंने श्रीमती हर देवी के साथ मिलकर 'वनिता बुद्धि प्रकाशनी सभा' की स्थापना की। उन्होंने इस सभा के द्वारा स्त्री शिक्षा के प्रश्न को बड़े जोरदार ढंग से उठाया था। वहीं 1886 में भगिनी समाज की स्थापना भी की और बालिकाओं के लिए एक पुस्तकालय भी खुलवाया। इतना ही नहीं जब हेमंत कुमारी विक्टोरिया कन्या महाविद्यालय की प्रिंसिपल थीं तो वह घर घर जाकर माता–पिता को समझाती थीं कि अपनी कन्याओं को स्कूल के लिए भेजें। हेमंत कुमारी देवी के स्त्री शिक्षा के योगदान में इसी कॉलेज के अध्यापिका ने 1927 में एक लेख लिखा, जिसमें वह कहती है कि 'इस विद्यालय को 1906 में स्थापित किया गया था इस विद्यालय वाटिका में 500 बालिकाएं अठखेलियां करती है विद्यालय के कार्यकर्ता भी प्रसन्न होते हैं।

हेमंत कुमारी देवी का शिक्षा में कितना बड़ा योगदान था इसका अंदाजा राम शंकर शुक्ल रसाल एम ए की इस बात से लगाया जा सकता है कि ''जिस प्रकार भारतेंदु बाबू के समय से खड़ी बोली के गद्य और पद्य में नवीन उत्थान प्रारंभ होता है उसी प्रकार स्त्री साहित्य में हेमंत कुमारी देवी चौधरानी नवोउन्नति का प्रारंभ देखते है। स्त्री शिक्षा की जागृति और उन्नति का श्रेय पंजाब प्रांत में यदि किसी न किसी महिला रत्न को मिल सकता है तो वह इन्ही को है।''

इन्होंने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में जो सबसे बड़ा कार्य किया कि सरकार से प्रार्थना करके हिंदू कन्याओं के लिए सिलहट में बड़े यत्न के बाद एक विद्यालय खुलवाया जो अभी तक है और जिसमें हर साल कन्याएं परीक्षा पास करती हैं। इतना ही नहीं हेमंत कुमारी देवी ने स्त्रियों के स्वास्थ्य को लेकर भी अपनी चिंता व्यक्त की और शिलांग में एक पृथक स्त्री चिकित्सालय स्थापना की मांग की उस समय आप सोच सकते हैं कि प्रथम महिला अस्पताल की मांग करना हेमंत कुमारी देवी के लिए कितना कठिन रहा होगा और इस अस्पताल के लिए उन्हें अंग्रेजों के विरोध का भी सामना करना पड़ा परंतु हेमंत कुमारी देवी ने हार नहीं मानी और स्वयं आसाम के चीफ कमिश्नर की पत्नी के साथ जाकर सारा वृत्तांत निवेदन करके उनसे सहायता मांगी उनके प्रयास से वहां पर स्त्रियों के लिए एक पृथक चिकित्सालय खोला गया।

स्त्री संबंधित समस्याओं के अतिरिक्त सुगृहिणी में समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों पर कुठाराघात करने का कार्य किया गया। सुगृहिणी के उन्नत नारी जीवन (1888) लेख में पुरोहितों और पुजारियों के पाखंड का प्रबल विरोध किया गया इस लेख में लिखा गया कि "रामदेई जाने की तो मेरी भी इच्छा है पर मैं उन दिनों नॉर्मल स्कूल की औरतों को भूगोल पढ़ाती थी इसलिए ना जा सकी। जहां प्रकृति की शोभा और महान जन बसते हों ऐसे तीर्थों पर जाने से धर्म का लाभ तो निश्चय है। पर पुराने तीर्थो में जो हमारे पंडे रहते हैं वो यात्रियों को बड़ी दिक्कत करते हैं मेरी समझ में इन सड़े, आलसी पंडो को दान करना मूर्ख ब्राह्मणों के दान से अधिक हानिकारक है।'' समाज की कुरीतियों पर इससे ज्यादा कुठाराघात और क्या हो सकता है।

हेमंत कुमारी देवी का हिंदी भाषा से बेहद लगाव और अनुराग था। वो अपनी पत्रिका में हिंदी भाषा के पक्ष में माहौल तैयार करती दिखाई देती थी। जब सन् 1888 में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के प्रशासन ने बड़ा अजीबोगरीब निर्णय लिया कि एंट्रेंस की परीक्षा हिंदी और उर्दू की जगह अंग्रेजी भाषा में होगी, तब यूनिवर्सिटी के इस फैसले की चर्चा पूरे देश में हुई थी। हेमंत कुमारी देवी के प्रशासन द्वारा हिन्दी भाषा को हटाए जाने का विरोध किया गया था। इन्होंने कहा था कि हिंदी भाषा में ही यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षा कराई जानी चाहिए, क्योंकि स्त्रियों को अंग्रेजी भाषा नहीं आती है, अंग्रेजी भाषा का ज्ञान ना होने के कारण स्त्रियां प्रवेश पाने से वंचित हो जाएंगी। इस प्रकार हेमन्त कुमारी देवी नवजागरणकाल की महत्वपूर्ण लेखिका और संपादिका थी। इन्होंने स्त्री वैचारिकी की जमीन तैयार कर स्त्री स्वतंत्रता का रास्ता तैयार किया था। 'सुगृहिणी' नवजागरण काल का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस पत्रिका से पहले हिन्दी में कोई ऐसी पत्रिका नहीं थी जिसका संपादन कोई स्त्री करती हो। सुगृहिणी ऐसी पत्रिका थी जो पुरुषवादी सिविल संहिता के खिलाफ लड़ रही थी। यह पत्रिका स्त्रियों को उनकी परम्परा से भी जोड़ती है।

आप सोचिए हेमन्त कुमारी देवी के लिए वह दौर कितना कठिन रहा होगा जब हिन्दी में बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी, राधाचरण गोस्वामी और पंडित देवी सहाय जैसे विद्वान पत्रिका निकाल रहे थे। इन संपादकों के बीच हेमन्त कुमारी देवी ने स्त्रियों की बेहतरी के लिए सुगृहिणी पत्रिका निकाल कर स्त्री वैचारिकी की जमीन तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। हेमन्त कुमारी देवी ने 'सुगृहिणी' का चार–पांच साल तक लगातार संपादन किया था। इन्होंने अंतःपुर (बंग भाषा) पत्रिका का भी तीन साल तक संपादन कार्य किया था। इन पत्रिकाओं के द्वारा इन्होंने घर के भीतर कैद स्त्री की पीड़ा को बाहर लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इसके अलावा हेमन्त कुमारी देवी ने 'आदर्श माता', 'माता और कन्या' और 'नारी पुष्पावाली' किताब लिखकर स्त्री और हिन्दी की सेवा की। आज इस नवजागरण कालीन महान लेखिका के चिंतन और योगदान को सामने लाने की जरूरत है।

(लेखिका किसान पी. जी कॉलेज सिम्भावली हापुड़ (चौ.चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उत्तर प्रदेश में अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष हैं)

ISSN No. 2581-3528

पुस्तक समीक्षा- रामराज्य (RAM RAJYA)

डॉ. मनमोहन सिंह शिशोदिया

गरुड प्रकाशन द्वारा हाल में प्रकाशित, भारतीय रेल अधिकारी श्री गोरखनाथ सिंह राठौड़ द्वारा वर्णित एवं डॉक्टर श्रीमती कंचन सिंह द्वारा लेखनीबद्ध 'रामराज्य' और इसका अंग्रेजी संस्करण 'RAM RAJYA', उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अनछुए पहलुओं को जानने; उनसे प्रेरणा लेने; भय, भूख एवं भ्रष्टाचार खत्म कर त्रेतायुगीन रामराज्य का अहसास कराने के उनके प्रयासों को पाठकों के समक्ष रखने का सफल प्रयास है। यद्यपि कालांतर में अनेकों शासन व्यवस्थाओं का उदय हुआ, तथापि उनको कसौटी पर कसने का मानक आज भी वही रामराज्य है जहां व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण विचार था, जिसमें प्रजा का रक्षण–पोषण कोई व्यक्ति नहीं बल्कि विचार करता था, जिसका वर्णन करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं,

नहीं दरिद्र कोउ, दुखी न दीना।
नहीं कोउ अबुध, न लक्षन हीना।।
दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।

अर्थात् आज के संदर्भ में एक ऐसी शासन व्यवस्था जो, सनातन विचार पर आधारित हो; भय, भूख, भेदभाव एवं भ्रष्टाचार से मुक्त हो; नागरिकों की सुरक्षा, प्रतिष्ठा, सेहत आदि के लिए प्रतिबद्ध हो; बाढ़, सूखा, आतंकवाद, अलगाववाद आदि से निपटने में सक्षम हो; नागरिकों को कला, विज्ञान, तकनीक, शिल्प, व्यवसाय, उद्योग द्वारा आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से युक्त हो। उत्तर प्रदेश की क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप योगी जी ने शासन का ऐसा प्रतिमान विकसित किया है जो देश–दुनिया में सराहा एवं अंगीकृत किया जा रहा है। प्रदेश में अपराधियों एवं माफियाओं के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति अपनाकर कानून की सर्वोच्चता स्थापित करना, अवैध बूचड़खाने बंद करना, बहन–बेटियों के शील एवं सम्मान की रक्षा सुनिश्चित करने के लिए एंटी–रोमियो स्क्वैड बनाना, वीआईपी संस्कृति को खत्म करना, गौमाता की तस्करी रोकना, युवाओं को इंजीनियर, डॉक्टर, दर्जी, शिल्पकार, राज–मिस्त्री, बढ़ई, शेफ जैसे कौशल से परिपूर्ण करना, निवेश आकर्षित करना और व्यापार को आसान बनाना, भविष्योन्मुखी आधारभूत ढांचा तैयार करना, किसानों का कर्ज माफ करना, बिजली किल्लत से छुटकारा दिलाना, भूमिहीनों को भूमि एवं बेघरों को घर को देना, गरीबों एवं बेरोजगारों को खाद्यान उपलब्ध कराना, जनता दरबार में गरीबों एवं वंचितों की समस्याओं का समाधान करना आदि, उत्तर प्रदेश वासियों को रामराज्य का अहसास कराने की दिशा में प्रयास हैं।

वाचक एवं लेखिका का गोरखपुर, गोरक्षनाथ मठ एवं योगीजी से लंबे समय से जुड़ाव होने के कारण पुस्तक में अनेकों ऐसे प्रसंग हैं जो या तो मीडिया की चर्चा नहीं बने अथवा उन्हें नकारात्मक रूप में प्रचारित किया गया। पुस्तक के दस अध्यायों में जन्म से लेकर उ.प्र. में रामराज्य के शिल्पी बनकर उभरते योगीजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावी एवं संक्षिप्त रूप में पाठकों के समक्ष रखा है। पुस्तक में योगीजी के बचपन की आदतों, योग्यताओं एवं प्रेरणास्रोतों के साथ–साथ उनके विराट व्यक्तित्व, सहजता, ज्ञानशीलता, विनम्रता, चिंतनशीलता, प्रेरित करने की अद्भुत क्षमता, जिज्ञासु प्रवृति तथा बौद्धिक प्रामाणिकता की स्पष्ट झलक मिलती है। लेखिका ने योगीजी की तीव्र स्मरण शक्ति, दूरदर्शिता, ईमानदारी, बातचीत में पूर्ण एकाग्रता के साथ विषय के मूल बिंदुओं पर केंद्रित होने, कानून तथा संविधान में पूर्ण होने, सादा जीवन उच्च विचार एवं नैतिकता के साथ कार्यों के निष्पादन करने जैसे प्रभावी गुणों को उनके व्यक्तित्व का अहम हिस्सा बताया है। लेखिका योगीजी की जीवन यात्रा से अनेक शिक्षाएं संजोकर युवाओं एवं राजनीतिज्ञों को देकर रामराज्य का पथ प्रदर्शित करने का प्रयास करती हैं। वर्तमान पीढ़ी को लेखिका साफ संदेश देती हैं कि रामराज्य के प्रणेता प्रभु श्रीराम भले ही त्रेता युग में एक समृद्ध राजपरिवार में जन्मे हों परंतु कलियुग में योगी जी जैसा संघर्ष कर एक सामान्य नागरिक भी उनके जैसी कर्तव्य–परायणता, ईमानदारी, दृढ़ता एवं संकल्पशक्ति जैसे गुणों को आत्मसात कर रामराज्य का नायक बन सकता है। विभिन्न तथ्यों एवं उद्धरणों के माध्यम से लेखिका ने योगीजी को कुशल प्रशासक, अनुशासित राजनेता, और दिव्य शक्तियों से परिपूर्ण ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है जो जिस कार्य को हाथ में लेते हैं वह स्वयं ही सफल हो जाते हैं। ऐसे में पाठक के मन में यक्ष प्रश्न खड़ा हो सकता है कि कर्म बड़ा या भाग्य? पाठक के मन में पनपी दुविधा उसे श्रीकृष्ण के कर्मयोग

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

एवं तुलसीदास दास जी के कर्म के मर्म,

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा।।
सकल पदारथ हैं जग मांही।
कर्महीन नर पावत नाही।।

की गहराई में उतारने की चेष्टा करती दिखती है। पुस्तक से योगीजी के जीवन के विभिन्न निर्णायक मोड सामने आते हैं, (क) अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्य के रूप में गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ जी के मुख्य अतिथि वाले कार्यक्रम में भाषण देना और प्रभावित महंत जी द्वारा आकर मिलने का निमंत्रण दिया जाना, (ख) एम्स में भर्ती महंत अवैद्यनाथ जी से जाकर मिलना और मृत्यु के बाद भी राम–जन्मभूमि रूपी उनके धर्मयुद्ध को जारी रखने की योगीजी के समक्ष इच्छा व्यक्त करना और वहीं से उनके मन में क्रांति का बीजारोपण होना, (ग) महंत अवैद्यनाथ जी का शिष्य बन सन्यास लेना। पुस्तक में योगीजी के माता–पिता द्वारा अजय नाम रखने के पीछे साधारण माता–पिता की तरह ही अपने बेटे को जीवन में सदैव विजयी होने की चाहत का भी वर्णन है। योगीजी द्वारा 'यथा नामे तथा गुणे' की उक्ति को चरितार्थ कर दिखाने को लेखिका ने माता–पिता को बच्चे के नामकरण के वक्त की सोच और बच्चे को अपने कार्यों से उसे साकार करने के लिए दृढ़संकल्पित होने की

ISSN No. 2581-3528

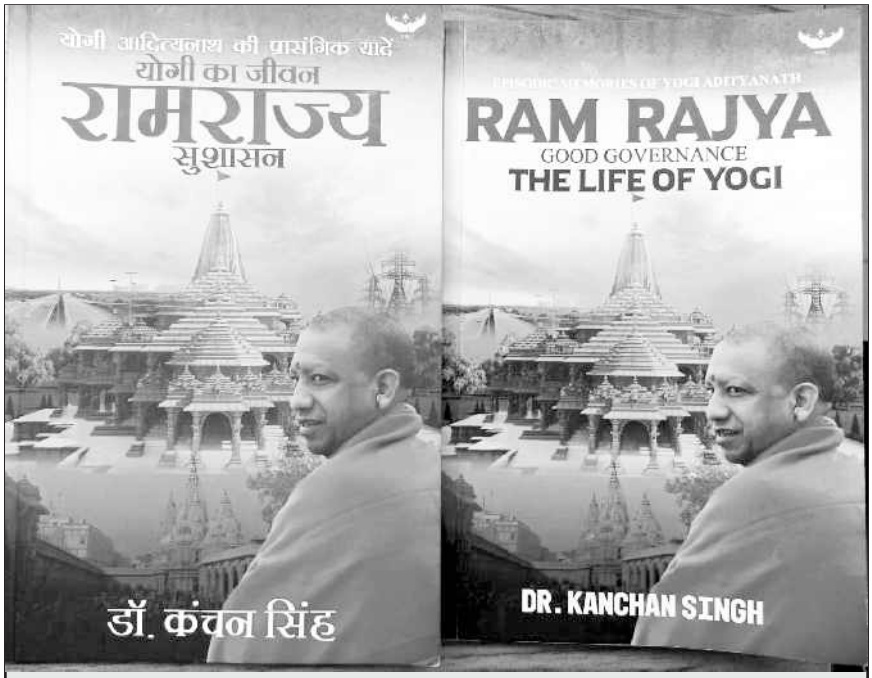

लेखक परिचय

डॉक्टर श्रीमती कंचन सिंह ने 'केदारनाथ सिंह की काव्य भाषा का अध्ययन' विषय पर पीएचडी की है। लेखिका का परिवार गोरखपुर, गोरक्षनाथ मठ एवं योगी जी से लंबे समय से जुड़ा है और उनके घर-परिवार में हर नए कार्य का शुभारंभ श्री गोरक्षनाथ जी के दर्शन के बाद ही किया जाता है। उन्हें योगी आदित्यनाथ जी के बारे में लिखने की प्रेरणा परमहंस योगनन्द जी के अनुयायी अपने दादाजी से मिली।

प्रेरणा दी है। इसके लिए किशोरों एवं युवाओं को योगीजी जैसी आदतों जैसे, सुबह जल्दी उठकर माता–पिता के कार्यों में हाथ बटाना, आज्ञाकारी होना, मृदुभाषी होना, देश एवं समाज को जानने हेतु नियमित समाचार–पत्र/पत्रिका/सनातन साहित्य आदि पढ़ना, प्रकृति के करीब होना, पशु–पक्षियों के साथ समय बिताना तथा गायों की सेवा करने आदि को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया है। विद्यार्थी जीवन से ही योगीजी सामाजिक कार्य, आंदोलन, वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि में भाग लेने के शौकीन थे। अर्थात् दुनिया जिन योगी को आज देख रही है उनके व्यक्तित्व की नीव यही सब आदतें हैं। इसी नीव पर योगीजी के व्यक्तित्व का सतत निर्माण होता रहा है। पुस्तक यह संदेश देने में सफल हुई है कि वर्तमान पीढ़ी, जिस पर अपने संस्कारों से विमुख होने की तोहमत अक्सर लगती है, उसके लिए भी यह एक सीख है। सीख यह भी है कि सनातन संस्कार जीवन के अवरोध नहीं अपितु उसे अधिकाधिक अर्थपूर्ण बनाने के माध्यम हैं।

मुस्लिमों के प्रति सदभाव के अनेकों उदाहरण देते हुए लेखिका ने मीडिया के एक वर्ग द्वारा योगी जी को मुस्लिम विरोधी बताने की कवायद को असत्य, भ्रामक एवं उनके खिलाफ षड्यन्त्र बताया है। उन्होंने अपने परिचित मुस्लिम के बेटे को प्लेटलैटस की व्यवस्था करने तक भूखे रहने, मंदिरों में लकड़ी आदि के काम के लिए कुशलता के आधार पर मुस्लिम कारीगर को चुनने, प्रदेश में सरकारी योजनाओं का लाभ लेने वाला हर तीसरा व्यक्ति मुस्लिम समुदाय से होने, मठ में अनेकों मुस्लिमों द्वारा दुकानें संचालित करने जैसी हकीकत बयां कर योगीजी की सबका साथ सबका विकास, तुष्टीकरण किसी का नहीं की भावना का संदेश पाठकों तक पहुंचाया है। पुस्तक में योगीजी के गरीबों एवं वंचितों के प्रति समर्पण को रेखांकित करते हुए उनके जनता दरबार को सर्वधर्म समभाव का जीता–जागता उदाहरण बताया है। जनता दरबार में यदि कोई प्रभावी/रसूखदार व्यक्ति पहुंचता भी है तो योगीजी गरीब/वंचित को ही इस आधार पर वरीयता देते हैं कि प्रभावी लोग अन्य तरीकों से भी अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते हैं जबकि वंचितों के लिए जनता दरबार ही सर्वसुलभ माध्यम है। इसके पीछे योगीजी की यह सोच निहित है जिसमें वो खुद को ईश्वर का सेवक और जरूरतमंदों की सेवा करना अपना उद्देश्य मानते हैं। योगीजी के जनता दरबार में हर जाति के लोगों के आने, मंदिरों में दलित पुजारी को रखने आदि जैसे तथ्यों को पाठकों के समक्ष रख उन पर जातिवादी होने का आरोप लगाने वाले एजेंडाधारियों की बदनीयती से रूबरू कराया है और उन्हें एक तटस्थ, मानवतावादी एवं राष्ट्र को सर्वोच्च मानने वाले व्यक्ति के रूप में स्थापित किया है। जब तुच्छ लाभों के लिए भी सिफारिश करना एक फैशन बनता जा रहा हो, 2017 के विधानसभा चुनावों में अपनी पार्टी की भारी जीत के बाद भी अपने लिए किसी वरिष्ठ से सिफारिश न करके, लेखिका योगीजी के माध्यम से पाठकों को स्वार्थ के लिए नहीं वरन राष्ट्र के लिए जीने का संदेश देने में सफल हुई हैं। लंबे समय तक लगातार काम करने के बाद भी योगीजी के चेहरे पर थकान नहीं दिखने एवं दैवीय शक्ति के साथ काम करने को उनके नियमित योग, ध्यान एवं अभ्यास का परिणाम बताया गया है। समय के सदुपयोग और ज्ञानवर्धन के उद्देश्य से हमेशा अपने पास पुस्तक रखना, जो कहते हैं उसी को करने में विश्वास करना, गावों में खेल के मैदान और जिम आदि का निर्माण कराना, मुस्लिम बच्चों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ने हेतु मदरसा शिक्षा व्यवस्था में सुधार जैसे कार्य युवाओं के विकास के लिए उनके समर्पण को दर्शाते हैं।

लेखिका ने योगीजी के उन पक्षों को पाठकों के समक्ष रखा है जिनका उन्होंने साक्षात अनुभव किया है। उनके बारे में फैलाए गए भ्रमों जैसे उनका तथाकथित मुस्लिम विरोधी एवं जातिवादी होना आदि को खत्म करने में पुस्तक अहम भूमिका निभाएगी। छोटे–छोटे अध्याय एवं बोलचाल की भाषा के प्रयोग से पाठकों में अगले अध्याय को पढ़ने की जिज्ञासा बढ़ती रहती है। योगीजी की प्रेरणादायी जीवन यात्रा के अनछुए पहुलुओं को जानने में रामराज्य (RAM RAJYA) महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

(लेखक गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा में भौतिकी विज्ञान विभाग में शिक्षक हैं)

ISSN No. 2581-3528

कैसी होनी चाहिए भविष्य के भारत की शिक्षा

मोनिका चौहान

शिक्षा के मामले में भारत आज भले ही कई देशों से पीछे हो लेकिन एक समय था जब हिंदुस्तान शिक्षा का मुख्य केंद्र हुआ करता था। प्राचीन भारत आर्थिक मजबूती के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत आगे था। भारत ने पूरी दुनिया को लिखना पढ़ना सिखाया। कितने ही गणितज्ञ और आविष्कारक भारत में हुए। जिस समय भारत में आयुर्वेद और योग चिकित्सा का विकास हो चुका था उस समय तक अमेरिका और यूरोप में आदिवासी घूमते थे। भारत ने ही सबसे पहले व्यापार को समझा और उसकी शुरुआत की। भारतवर्ष की प्राचीन शिक्षा पद्धति बहुत उच्च कोटि की थी जिसका मुख्य केंद्र तक्षशिला, नालंदा व काशी आदि थे। प्राचीन काल में धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ वैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक ऐसे अनेकों विषयों पर अध्ययन किया जाता था। दुनिया की पहली यूनिवर्सिटी 700 ईसा पूर्व स्थापित हुई। जहां पर आचार्य चाणक्य और पाणिनी, जीवक, कौशल राज प्रसेनजित ने भी शिक्षा प्राप्त की। तक्षशिला में भारत के अतिरिक्त चीन, सीरिया, ग्रीस और बेबिलोनिया के छात्र पढ़ने आते थे। इस विश्वविद्यालय में वेतनभोगी शिक्षक नहीं थे और ना ही कोई निर्धारित पाठ्यक्रम था। छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार अध्ययन कराया जाता था। कहा जाता है कि रुचि वाले विषय का अध्ययन ज्यादा सफलतापूर्वक होता है। यहां लगभग 60 से 64 विषयों का अध्ययन किया जाता था। जिसमें वेद, वेदांत, जिन सूत्र, धम्मपद, अष्टादशविधाएं, दर्शन, व्याकरण, अर्थशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद, ललित कला, हस्त विद्या, राजनीति, शल्यक्रिया, शस्त्रसंचालन, विविध भाषाएं, नृत्य, तन्त्रशास्त्र, मनोविज्ञान, कृषि, भू–विज्ञान, खगोल, सर्पविद्या और गणित आदि की शिक्षा दी जाती थी। इसके अलावा ज्ञान विज्ञान में चिकित्सा से जुड़े शोध कार्य भी किए जाते थे। छठी शताब्दी के अंत में अरब और तुर्की मुस्लिम आक्रांताओं ने इस विश्वविद्यालय और नगर का विध्वंस कर दिया था।

भारत का नालंदा विश्वविद्यालय विश्व में प्रसिद्ध था। यहां भी भारतीय विद्यार्थियों के साथ–साथ कोरिया, मंगोलिया, बुखारा, चीन, जापान व तिब्बत से विद्यार्थी विद्या ग्रहण करने आते थे। नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त सम्राट कुमारगुप्त के शासनकाल के दौरान हुई। यह बहुत ही गौरव की बात है कि प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है। इस विद्यालय में 300 कमरे, 7 बड़े कक्ष और अध्ययन के लिए 9 मंजिला एक विशाल पुस्तकालय था जिसमें 3 लाख से भी अधिक पुस्तकें व ग्रंथ थे। प्रसिद्ध चीनी भिक्षु ह्वेनसांग ने भी 7वीं सदी में नालंदा में शिक्षा ग्रहण की थी। सन् 1199 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को जलाकर पूरी तरह नष्ट कर दिया। कहा जाता है कि यहां के पुस्तकालय में 3 महीने तक आग धधकती रही। विदेशी आक्रांताओं के द्वारा बार–बार भारत के दलन के कारण हमारी वह उच्च शिक्षा धीरे–धीरे राजाओं के द्वारा पोषित न होने के कारण विलुप्त हो गई। हमारे सभी अध्ययन ग्रंथों को विदेशी अपने साथ ले गए।

हम अपनी शिक्षा पद्धति के बारे में पुनर्विचार करें और शिक्षा पद्धति को नए सिरे से तलाशे। थोड़ा ध्यान, थोड़ा योग और ऐसी ही दूसरी चीजें शिक्षा स्तर को बढ़ा सकती हैं। बच्चों की पढ़ाई तकलीफ देह नहीं होनी चाहिए बल्कि शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप होनी चाहिए। हमें ऐसे स्कूलों का निर्माण करना चाहिए जहां हर बच्चा जाना चाहे। ऐसे कई वैज्ञानिक और चिकित्सीय प्रमाण मौजूद हैं जिससे साबित होता है कि अगर हम एक खुशनुमा माहौल में होते हैं और अपनी रूचि के अनुसार काम करते हैं तो हमारा शरीर व दिमाग सर्वश्रेष्ठ तरीके से काम करता है। हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को इस तरह तैयार करना होगा जो हमारी जरूरतों के मुताबिक हो।

शिक्षा की एक ऐसी प्राचीन प्रणाली जो दुनिया के पूर्वी हिस्से से शुरू हुई और आज भी प्रेरणा का जरिया बनी हुई है वह है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली। इस शिक्षा का आधार अनुशासन व मेहनत थे। इसमें गुरु व छात्र का रिश्ता बहुत पवित्र होता था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की शुरुआत वैदिक काल में हुई। शिक्षा के साथ वेद पुराण आदि भी सिखाए जाते थे। जो हमारे धर्म व संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे ले जाने में मदद करते थे। व्यवसायिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया जाता था। गुरुकुल में छात्रों का चयन उनकी प्रतिभा और नैतिक मजबूती के आधार पर किया जाता था। छात्रों को गुरुकुल में कला, साहित्य, शास्त्र और दर्शन की जानकारी देने के साथ ही उन्हें व्यवहारिक हुनर भी सिखाया जाता था जिससे वह अलग–अलग कामों के लिए तैयार होते थे। इससे छात्रों का पूर्ण रूप से विकास होता था। गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य ज्ञान विकसित करना और छात्रों का शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करना होता था। गुरूकुल में पढ़े हुए छात्रों को जीवन के कठिन समय में खुद को दृढ़ता से खड़े रखने में मदद मिलती थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य छात्रों का संपूर्ण विकास, व्यक्तित्व विकास, आध्यात्मिक जागृति, प्राकृतिक और समाज के प्रति जागरूकता, पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान और संस्कृति को आगे बढ़ाना और खुद के जीवन में आत्मसंयम एवं अनुशासन लाना होता था। धर्मशास्त्र व अस्त्र की शिक्षा के साथ–साथ योग साधना व यज्ञ भी गुरुकुल के अभिन्न अंग माने जाते थे। विद्यार्थी हर प्रकार के कार्य को सीखता था और शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात अपना काम अपनी रुचि व गुण के आधार पर चुनता था।

गुरुकुल प्रणाली से आज की वर्तमान शिक्षा प्रणाली बहुत कुछ सीख सकती है। गुरुकुल प्रणाली वर्तमान समय के साथ भी प्रासंगिक है। संपूर्ण शिक्षा पर फोकस करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आज की पीढ़ी का संपूर्ण विकास कर सकती है।

छात्रों को अपनी संस्कृति और समृद्ध ज्ञान परंपरा के बारे में जानकारी होनी चाहिए इसलिए हिंदू ग्रंथों को भी शिक्षा में शामिल किया जाना आवश्यक है। वेद, पुराण, उपनिषद आदि की शिक्षा देकर हिंदू संस्कृति को आगे ले जाना होगा। छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने व उनके हुनर के अनुरूप व्यवसाय और रोजगार चुनने के साथ–साथ बुरी शक्तियों से धर्म को बचाने के लिए छात्रों को नैतिक व धार्मिक शिक्षा देनी होगी।

मैं हमेशा ऐसे भारत का सपना देखती हूं जहां रहने वाला हर एक नागरिक शिक्षित हो और अपने धर्म और संस्कृति को जानने वाला हो। आधुनिक भारत में उच्च प्राचीन शिक्षा पद्धति को आधुनिक पद्धति के रूप में फिर से स्थापित होने का सपना देखती हूं। जिससे हमारे देश के सभी नवयुवक उच्च शिक्षा के द्वारा अपना संपूर्ण विकास कर सकें और सभ्य नागरिक के रूप में देश को आगे ले जा सके।

(लेखिका शिक्षिका हैं)

ISSN No. 2581-3528

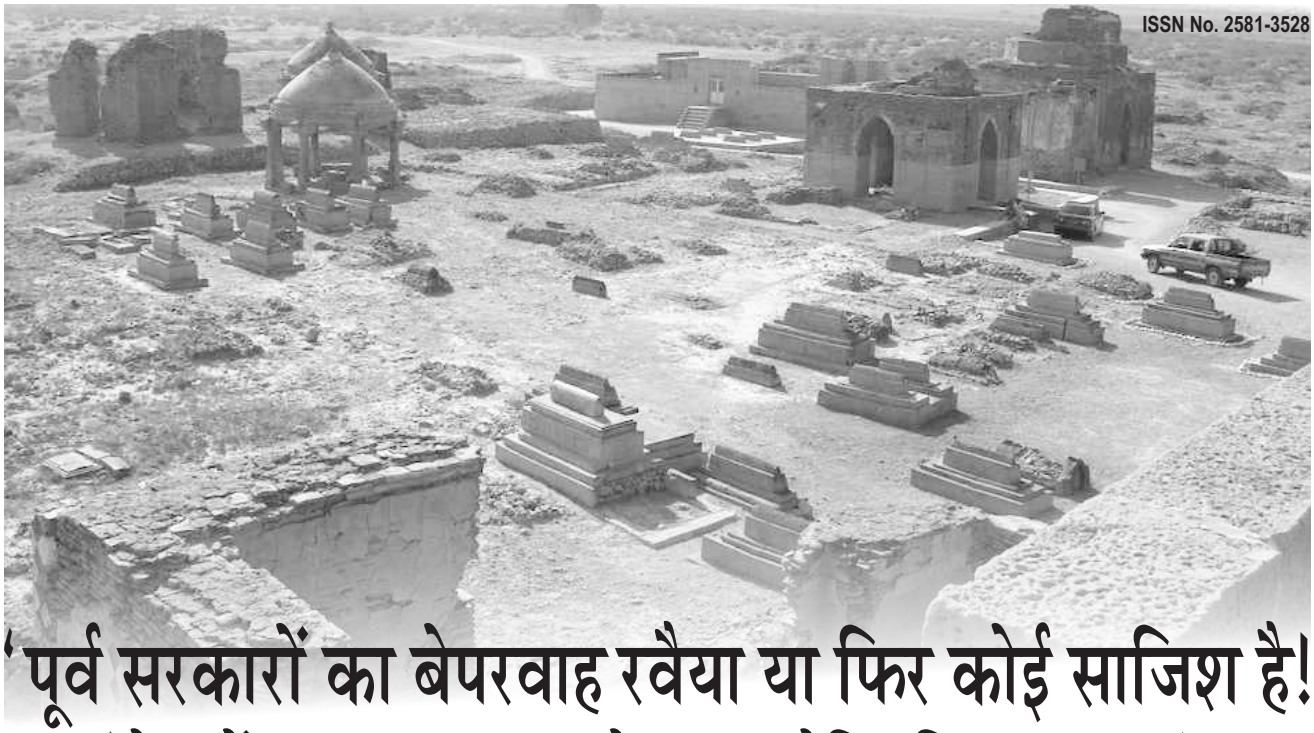

'पूर्व सरकारों का बेपरवाह रवैया या फिर कोई साजिश है!'

'देश में लापता हुए 100 से ज्यादा ऐतिहासिक स्मारक'

प्रतीक खरे

बंगाल विधानसभा चुनाव के समय एक डायलॉग बहुत मशहूर हुआ था। जिसे हम सबने एक बार तो जरूर सुना ही होगा। खेला होबे, खेला–खेला–खेला होबे।

इस डायलॉग के आने के बाद बंगाल में खेला हुआ हो या नहीं लेकिन देश में एक बहुत बड़ा खेला हो गया है। जिससे आज भी बहुत से लोग अनजान हैं। वह खेला हुआ है हमारी संस्कृति के साथ, हमारी धरोहर के साथ। आपको यह सुनकर हो सकता है हैरानी हो लेकिन देश के 100 से ज्यादा ऐतिहासिक स्मारक लापता हो गए या फिर कब्जा कर लिए गए हैं। और हमारी पूर्व की सरकारें सोती रहीं।

हाल के वर्षों में गायब हुए इन ऐतिहासिक स्मारकों की सूची में फरीदाबाद के मुजेसर और कुरुक्षेत्र के शाहाबाद में अकबर के जमाने में बनवाई गई कोस मीनार, अल्मोड़ा के द्वाराहाट इलाके में माता कुटुंबरी मंदिर, दिल्ली के बाराखंबा रोड पर स्थित ईसाई कब्रिस्तान और कोटला इलाके में इंछला वाली गुमटी के नाम से मशहूर छतरी, जम्मू कश्मीर का गुफा मंदिर और आगरा की ऐतिहासिक पुराने शहर की चारदीवारी सिटी वॉल शामिल हुए है।

आपको बता दें कि हाल ही में केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की कई टीमों को देश के अलग–अलग हिस्सों में मौजूद इन कथित रूप से लापता स्मारकों का पता लगाने भेजा था। लेकिन ये सर्वेक्षण दल एक–एक कर खाली हाथ बैरंग लौट रहे हैं और इन सर्वेक्षण टीमों ने लापता हो चुके इन स्मारकों को संरक्षित स्मारकों की सूची से हटाने के लिए सिफारिश भी की है। हालांकि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इन लापता हुए स्मारकों की खोज जारी रखने को कहा है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने 1919 में पुरातात्विक महत्व के संरक्षित स्मारकों की सूची बनाई थी। कुछ स्मारक जो पुराने दस्तावेजों में दर्ज थे, लेकिन समय की मार खाकर या तो लगभग ढह चुके थे या लोगों ने उस पर जबरन कब्जा कर लिया है। उन्हें भूमि राजस्व रिकॉर्ड में मौजूद खसरा संख्या और चौहद्दी के हिसाब से ढूंढ लिया गया। फिर शुरू हुआ अवैध कब्जादारों से स्मारकों की मुक्ति का सिलसिला। लेकिन अभी भी लगभग 100 स्मारक ऐसे हैं, जिन के परिसरों तक सर्वे टीम को जाने ही नहीं दिया गया।

अब से करीब नौ साल पहले 2013 में लेखा महानियंत्रक यानी सीएजी की रिपोर्ट में भी 94 स्मारकों के लापता होने का ब्योरा है। इसके बाद से पुरातत्व निदेशालय ने अपने सभी सर्किल के अधीक्षण पुरातत्वविदों को निर्देश जारी कर इन संरक्षित स्मारकों का सर्वेक्षण कराने को कहा था। महानिदेशालय का निर्देश था कि लापता हुए या अस्तित्व खोने के कगार पर पहुंच गए स्मारकों का पता भूमि राजस्व लेखा विभाग में मौजूद रिकॉर्ड में दर्ज खसरा नंबर और चौहद्दी के आधार पर लगाया जाए। बाद में एसआई ने 2017 में नए सिरे से देशभर में मौजूद पुरातात्विक महत्व के संरक्षित स्मारकों की सूची तैयार करने को कहा। फिर करीब साल भर की कवायद के बाद 2018 में सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी हुई।

रिपोर्ट में बताया गया कि जो 94 स्मारक लापता थे, उनमें से 26 तो अस्तित्व में ही नहीं हैं। यानी वह नहीं मिले। इनमे से 14 स्मारक शहरीकरण की भेंट चढ़ गए। 12 स्मारक बांध और जलाशय के डूब क्षेत्र में आ गए। जबकि 42 स्मारकों का पता तो चला, लेकिन उन पर लोगों ने अवैध रूप से कब्जा कर रखा है। वहां तक सुरक्षित तरीके से टीम को जाने दिया जाए तो सर्वेक्षण और संरक्षण का काम किया जा सकता है।

लेकिन इन सब के बीच सवाल अब भी वही है कि यह पूर्व सरकारों का बेपरवाह रवैया या फिर कोई साजिश है। क्योंकि देश के 100 से ज्यादा ऐतिहासिक स्मारक लापता हो गए या फिर कब्जा कर लिए गए और हमारी सरकारें सोती रहीं। वह क्या कर रहीं थी। कौन लेगा इसकी जिम्मेदारी। **(लेखक युवा पत्रकार हैं)**

ISSN No. 2581-3528

कैसे खेलन जाबो सावन में कजरिया बदरिया घिर आवे ननदी

नीलम भागी

पुरी का प्रधान पर्व होते हुए भी रथोत्सव पर्व भारत में लगभग सभी नगरों में श्रद्धा और प्रेम के साथ मनाया जाता है। जो श्रद्धालु पुरी नहीं जा पाते वे अपने शहर की रथ यात्रा में जरुर शामिल होते हैं। आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि के दिन भगवान जगन्नाथ की यात्रा प्रारंभ होती है जो इस वर्ष एक जुलाई को है। रथ यात्रा एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ अपने भक्तों के बीच में आते हैं। भगवान जगन्नाथ की यात्रा में भगवान श्री कृष्ण, माता सुभद्रा और बलराम की पुष्य नक्षत्र में रथ यात्रा निकाली जाती है। रथयात्रा माता सुभद्रा के भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण और बलराम ने अलग रथों में बैठ कर करवाई थी। सुभद्रा जी के नगर भ्रमण की याद में यह रथयात्रा पुरी में हर वर्ष होती है।

आषाढ़ मास में वर्षा का आगमन होता है तो वृक्षारोपण की शुरुआत करते हैं। इसलिए 1950 से जुलाई के पहले सप्ताह में सरकार देशभर में 'वन महोत्सव'(पेड़ों का त्योहार) का आयोजन करती है। इस दौरान स्कूलों कॉलेजों, प्राइवेट संस्थानों द्वारा पौधारोपण किया जाता है। जिससे लोगों में पेड़ों के प्रति जागरूकता पैदा होती है। वनों का महत्व सामान्य लोगों को समझाना इसका मकसद होता है। बच्चों से वनों के लाभ पर निबंध लिखवाना या वाद–विवाद प्रतियोगिता करवाना ही काफी नहीं है। उन्हें पेड़ों को बचाना, उनका संरक्षण करना भी सिखाना है।

दश कूप सम वापी, दश वापी समोह्रदः।

दशह्रदसमः पुत्रो, दशपुत्रसमो द्रुमः।

दस कुओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है। मत्स्य पुराण का यह कथन हमें पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमारे यहां किसी राजा की महानता का वर्णन करते हैं तो लिखते हैं कि उसने अपने शासन काल में सड़कें बनवाईं थीं और उसके दोनो ओर घने छायादार वृक्ष लगवाए थे। हमारे यहां तो पेड़ों की पूजा की जाती हैं। जैसे वट–सावित्री, तुलसी विवाह, आंवला अष्टमी आदि। अब हमें हरियाली बढ़ाने के लिए ग्रीन स्टेप्स लेने होंगे। सभी के थोड़े थोड़े योगदान से बहुत बड़ा परिवर्तन हो जायेगा। बच्चों को बचपन से ही पर्यावरण से जोड़ना होगा।

जिस उत्साह से वन महोत्सव पर वृक्षारोपण किया जाता हैं उसी तरह उनका संरक्षण भी किया जाना चाहिए। जिन्होंने पौधा लगाया, फोटो खिचाई वे तो पौधे की देखभाल करने आयेंगे नहीं। इसके लिए वहां आसपास रहने वाले नागरिकों को ही देखभाल करनी होगी। कुछ ही समय तक तो!! जैसे जैसे पेड़ बड़ा होगा उसका सुख तो आसपास वालों को ही मिलेगा। इसलिए पेड़ों को बचाना अपनी नैतिक जिम्मेवारी समझना है। नष्ट हुए पेड़ की जगह दूसरा पेड़ लगाना है। कहीं पढ़ा था कि पेड़ों के लिए काम करना, मां प्रकृति की पूजा करना है।

देवशयनी एकादशी 10 जुलाई के दिन से सभी प्रकार के मांगलिक कार्यक्रम, विवाह आदि बंद कर दिए जाते हैं। मान्यताओं के अनुसार इसी दिन से भगवान विष्णु 4 महीनों के लिए योग निद्रा में जाते हैं। चौमासा शुरु हो जाता है और देवी–देवता विश्राम को चले जाते हैं।

11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस बढ़ती आबादी को काबू करने और परिवार नियोजन के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए मनाया जाता हैं। जितना जनसंख्या विस्फोट होगा उतनी बड़ी समस्याएं होंगी लोगों को इससे अवगत कराना है।

13 जुलाई को भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दुओं और बौद्धों द्वारा अपने गुरुओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। यह आध्यात्मिक और शैक्षणिक परम्परा गुरुजनों को समर्पित है।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा तिथि को खास माना जाता है। इस दिन गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है।

विश्व युवा कौशल दिवस की स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 नवम्बर 2014 को की थी। महासभा ने 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल दिवस के रुप में मनाये जाने की घोषणा की। सभी देशों से यह आग्रह किया गया है कि वे अपने देश में युवाओं को अधिक से अधिक कौशल विकास के प्रति जागरुक करें ताकि वे बेहतर अवसरों को तलाश कर रोजगार प्राप्त कर सकें।

22 जुलाई को राष्ट्रीय आम दिवस (जुलाई में चौथा गुरुवार) के रूप में मनाया जाता है। केरल में कन्नूर जिले के कन्नपुरमको'स्वदेशी मैंगो हेरिटेज एरिया' घोषित किया गया है। इस पंचायत विस्तार में यहां आम की 200 से अधिक किस्में उगाई जाती हैं। जिनके बारे में तरह तरह की कहानियां भी प्रचलित हैं। आम तो हमारे लोकगीतों और धार्मिक समारोहों से अटूट रूप से जुड़ा है। कुछ समय मुम्बई में रही। जब भी किसी धार्मिक आयोजन के लिए पूजा की सामग्री खरीदने के लिए गई तो वहीं आम की लकड़ी और तोरण के लिए आम के पत्ते भी मिलें। मेरी भी आम पर आपबीती है।

ISSN No. 2581-3528

हमारे घर के सामने पार्क में दो आम के पेड़ हैं। आम का मौसम आते ही उन पर बौर आता है, साथ ही कोयल की कूक सुनाई देती है। आम से लदे पेड़ बहुत सुन्दर लगते हैं। मैंने भी सामने पार्क में आम्रपाली नस्ल का आम का पौधा लगवाया। पानी देती उसकी देखभाल करती। जिसके घर में भी पूजा होती पंडित जी पूजा के सामान के साथ आम के पत्ते लिखवाते, तो उन्हें मेरा छोटा पेड़ ही नजर आता। पुजारी उसके पत्ते नोचने आ जाते। अगर मैं देख लेती तो तुरंत उन्हें हटाते हुए बड़े आम के पेड़ दिखा कर कहती कि उस पर चढ़के जितने मर्जी पत्ते तोड़ो। ऐसे टोकते हुए मैंने अपना आम, अपनी लम्बाई तक बड़ा कर लिया। कभी कभी पूजा वाले सुबह पत्ते तोड़ लेते। बड़े पेड़ पर चढ़ने की ज़हमत कौन उठाए! पर मेरा पेड़ किसी तरह बचा रहा। मैं कुछ समय के लिए बाहर गई। लौटी तो पेड़ वहां था ही नहीं। मैंने आस पास पता लगाया तो पता चला कि आम चैत्र नवरात्र में कलश स्थापना में उपयोग हो गया। बड़े पेड़ों पर कौन चढ़े! मैंने पार्क में सोलह आम के पौधे लगवा दिए। मेरी देखभाल से वह अच्छी तरह जम गए। एक दिन पानी लेकर पार्क में गई, देखा 14 पौधे गायब! सिर्फ दो पौधे बचे हुए थे। वहां दो बाइयां खड़ी बतिया रहीं थीं। मैंने उनसे पूछा,''यहां से पौधे किसने तोड़े हैं?''उन्होंने जवाब दिया,''जी हमें नहीं पता और चल दीं।''मुझे एक दम याद आया कि आज पहला शारदीय नवरात्र है। घट स्थापना के लिए मेड को कहा होगा कि आम के पत्ते ले आना। वे नौ दस पत्तों वाले आम के पौधे ही निकाल कर ले गईं। दो पौधे बचे तो मैंने उनका चार महीने तक ध्यान रखा। सर्दी की बरसात हुई। आठ दिन तक पानी देने की जरूरत नहीं थी। जब पानी देने गई तो देखा बचे दोनों आम के पेड़ भी गायब! तफ़्तीश करने पर पता चला कि जिनके घर बेटे के जन्मदिन पर श्री सत्यनारायण की कथा थी, वे आम के पौधे निकाल कर ले गए थे पत्तों से बंदनवार बनाने के लिए। मेरे परिवार में जन्मदिन पर पौधा लगाने का रिवाज़ है। अब मैं आम का पौधा लगवाती हूं।

कारगिल विजय दिवस को सभी देशवासी इस युद्ध में शहीद हुए भारतीय जवानों के सम्मान हेतु मनाते हैं। 1999 में कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच चला था। 26 जुलाई को इसका अंत हुआ और भारत विजयी हुआ। भारत में प्रत्येक वर्ष 26 जुलाई को यह दिवस मनाया जाता है।

सावन की शिवरात्रि 27 जुलाई को है। इस दिन शिवजी का गंगाजल से रूद्राभिषेक किया जाता है। श्रावण मास में भगवान शंकर की पूजा का विशेष महत्व है। सावन के पहले सोमवार से शिवभक्त कांवड लेने जा सकते हैं। फिर हरिद्वार या गोमुख से यात्रा आरम्भ होती है। कंधे पर कांवड़ में गंगा जल होता है और ये यात्रा कांवड़ यात्रा कहलाती है। जो कांवड़ लेने जाते हैं वे भगवा वेष में होते हैं। कोई शिवजी का गण बना होता है। सजा हुआ कावंड उठाए कांवड़िए का एक ही नाम होता है 'भोला'। इस यात्रा में भोले कंघी, तेल, साबुन का इस्तेमाल नहीं करते। मार्ग में कांवड़ को धरती से नहीं छूना है। कांवड़ शिविर में उसे टांगते हैं और आराम करते हैं। शिवरात्रि पर जलाभिषेक करने पर ही कावड़ यात्रा सम्पन्न होती है। यात्रा में इनके आपसी पारिवारिक संबंध भी बन जाते हैं।

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस 28 जुलाई को मनाया जाता है। प्राकृतिक संसाधनों के बहुत अधिक दोहन के कारण पर्यावरण को बनाए रखने की जरुरत बहुत अधिक हो गई हैं। जिसके कारण दुनिया भर में अजीबोगरीब मौसम का बदलाव हो रहा हैं। इसलिए इसका उद्देश्य दुनिया को स्वस्थ रखने के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

सिंधारा तीज को हरियाली तीज भी कहते हैं। सावन में आने वाले इस त्यौहार में प्रकृति ने हरियाली की चादर ओढ़ी होती है। इस दिन को भोलेनाथ और माता पार्वती के पुनर्मिलन का दिन माना जाता है। यह महिलाओं का उत्सव है। सावन की बौछारों में हरे भरे पेड़ो पर झूले पड़ जाते हैं। कहीं कहीं यह उत्सव तीन दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन मायके से सिंधारा में घेवर मिठाई, मेहंदी, चूड़ियां आदि सुहाग की चीजें आतीं हैं। दूसरे दिन हरी हरी मेहंदी हाथ पैरों में लगाई जाती है। अगले दिन सौभाग्यवती महिलाएं पकवान बनाती हैं और हरी पोशाक पहने, श्रृंगार करके माता पार्वती की पूजा करती हैं। सास को बायना देकर उनसे आशीर्वाद लेकर सपरिवार भोजन करती हैं। कहीं कहीं पर इससे पहले दिन से निर्जला व्रत रखती हैं। नई बहू को पहले सावन में मैके भेज दिया जाता है। रिवाज़ है कि पहला सावन सास–बहू इक्ट्ठे नहीं रहतीं हैं। तीज पर ससुराल से बहू के लिए सिंधारा जाता है। हमारे लोकगीतों में भी हरियाली, सावन के झूले, रिमझिम वर्षा की फुहारों में झूलती गाती सखियां होती हैं। पहले छोटी आयु में बेटियों की शादी हो जाती थी। हरियाली तीज उत्सव से वह पहला सावन पुरानी सखियों के साथ मना जाती हैं। दक्षिण भारत में पहला आषाढ़ सास–बहू एक साथ नहीं रहतीं हैं। हिंदू धर्म की बहुत बड़ी विशेषता है कि वह सबको धारण ही नहीं करता है, सबके योग्य नियमों की लचीली व्यवस्था भी करता है। महानगरों की कामकाजी महिलाएं अपनी व्यस्तता के कारण और छुट्टी न होने से परिवार में नहीं जा पातीं लेकिन घर में उत्सव जरुर मनाती हैं। जहां तीज महोत्सव का आयोजन किया जाता है वहां पहुंच कर सखियों से मिलन भी हो जाता है। हरियाली धरती का सौन्दर्य है। उसी से हम सबका जीवन संभव है। हम सबका कर्त्तव्य है कि इसकी हरियाली को बनाये रखें।

(लेखिका, पत्रकार, ब्लॉगर एवं ट्रैवलर हैं)

संपादक के नाम पत्र

महोदय,

आपकी मैगजीन अनुभवी एवं बौद्धिक सज्जनों के कार्य द्वारा देश हित और राष्ट्र निर्माण कार्य में अपनी भूमिका निभा रही है। मैं इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज अध्यात्मिक नगर डासना, में पत्रकारिता का एक छात्र हूं, इस पत्र के माध्यम से मैं आपकी मैगजीन के लेखन व पत्रकारिता को प्रोत्साहित करना चाहता हूं। वर्तमान समय में विश्व नीति में बदलाव के कारण भारतीय रणनीति बड़े स्तर पर बदलने लगी है, यह बात आपकी मैगजीन मैं मौजूद पत्रकारिता लेखन ने परिपक्वता के साथ समझाया है। मुझको विशेषकर प्रो. अनिल कुमार निगम जी द्वारा लिखा हुआ लेख 'विवेक और सतर्कता से बनेगा सौहार्दपूर्ण माहौल' अत्यंत पसंद आया। उन्होंने लाउडस्पीकर कानून व कृष्ण जन्मभूमि और ज्ञानवापी मस्जिद जैसे मुद्दों को तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया वह अत्यंत सराहनीय था।

अतः मैं चाहता हूं कि मैं आगे भी आपकी मैगजीन में मौजूद पत्रकारिता का अध्ययन करूं और एक अच्छा पत्रकार बन सकूं।

– सनी राठी

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्रीय बनाम नकली विमर्श

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

इंटरनेट वैश्वीकरण के युग में, एक विचार या विमर्श दुनिया भर में खतरनाक गति से यात्रा करता है। सामाजिक और मुख्यधारा के मीडिया में वैचारिक या धार्मिक विषय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बुद्धिजीवियों, ईमानदार और बेईमान दोनों, ने ब्रेनवॉश करने या विशेष विचार प्रक्रियाओं को लागू करने में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के महत्व को पहचाना, चाहे वह सही हो या गलत, पहले कई कम्युनिस्टों ने सनातन धर्म, भारत के गौरवशाली अतीत, वेदों, पुराणों के खिलाफ और मुगल आक्रमणकारियों की सकारात्मक छवि निर्माण के आख्यान स्थापित करने के लिए इस मंच का आक्रामक रूप से उपयोग किया।

इस प्रकार इन व्यक्तियों द्वारा भारत की अवधारणा, उसकी संस्कृति, सामाजिक–आर्थिक ताने–बाने और सनातन धर्म को नीचा दिखाने हेतु विचार–विमर्श स्थापित किया गया। इनके द्वारा कई लोगों का नकारात्मक तरीके से ब्रेनवॉश किया गया है, जिससे कि राष्ट्र के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए इस्तेमाल की जाने वाली ऊर्जा का उपयोग वास्तव में महान संस्कृति को नष्ट करने, सामाजिक आर्थिक ताने–बाने को नष्ट करने, जाति–आधारित भेदभाव को बढ़ावा देने और अंततः कमजोर करने के लिए किया गया है। इस तरह का विमर्श, बच्चों की हिंसक मानसिकता और लालच को जन्म देता है जिसके परिणामस्वरूप देशभक्ति की भावनाओं से समझौता होता है।

हालांकि देर से ही सही देशभक्त इस खतरे की घंटी से जाग गए और विभिन्न मीडिया पर खुद को व्यक्त करना शुरू कर दिया। फिर भी उनके पास कई मोर्चों पर सही आख्यान के साथ और विभिन्न मुद्दों को संबोधित करने के लिए समझ और अनुपात के साथ उपयुक्त प्रतिक्रिया देने की कमी है। इसके कई कारण हैं। लेकिन मुख्य चिंता एकता की कमी, एक अहंकारी रवैया और किसी विशेष मुद्दे या विषय के बारे में विस्तार से पढ़ने या सीखने में रुचि की कमी है। कभी–कभी राष्ट्र और सनातन धर्म का दृष्टिकोण पहले पायदान पर नही रहता और व्यक्तिगत अहंकार थोड़े लाभ के लिए और अहंकार को संतुष्ट करने के लिए बड़ा बनने की कोशिश करता है।

यह समय स्मार्ट तरीके से, सक्रिय रूप से, विस्तृत योजना के साथ, विभिन्न हितधारकों के बीच उचित समन्वय, और किसी मुद्दे या विषय पर गहन शोध के साथ विमर्श को स्थापित करने या 'भारत की सनातनी विचारधारा' के खिलाफ उठाए गए झूठे आख्यान का जवाब देने का है। इस उद्देश्य के लिए काम करने वाले व्यक्तियों या संगठनों को धर्मी दृष्टिकोण और छवि निर्माण के जुनून से बचना चाहिए।

जब भी समान विचार प्रक्रियाओं वाले लोगों के समूह में कोई चर्चा होती है, तो अधिकांश समय यह एक–दूसरे के लिए घृणा के साथ समाप्त होती है। विषय को साबित करने के अनावश्यक तर्कों के साथ मोड़ दिया जाता है। यह एक तनाव निर्माण अभ्यास की तरह लगता है और रिश्तों को प्रभावित करता है, और अंत में गलत लोगों द्वारा बनाई गई गलत कथा से हार जाता है।

कई विदेशी–वित्त पोषित संगठन या व्यक्ति जो 'भारत के विचार' का विरोध करते हैं, विभिन्न कारणों से ऐसा करते हैं, जिनमें अज्ञानता, स्वार्थ उनके धार्मिक गुरुओं द्वारा गलत शिक्षाएं और सनातन धर्म से घृणा शामिल हैं। महान नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों के इतिहास में हेरफेर किया जाता है, और मुगल और ब्रिटिश आक्रमणकारियों को महान नेताओं के रूप में चित्रित किया जाता है ताकि युवाओं सहित पूरे समाज की मानसिकता को भ्रष्ट किया जा सके। ये भारत–तोड़ने वाली ताकतें कहानियों को गढ़ने में माहिर हैं और समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के मनोविज्ञान की पूरी समझ रखती हैं। झूठी या मामूली विकास की कहानियों को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है कि वे दुनिया के किसी भी हिस्से में कभी नहीं हुई हैं। व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र विकास की कमी के कारण बहुत से लोग फंस जाते हैं।

जब भारत निर्माण बल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यापक शोध और विकास कार्य के माध्यम से सही इतिहास या परिप्रेक्ष्य के साथ विमर्श को स्थापित करने का प्रयास करते हैं, तो भारत तोड़ने वाली ताकतें, अपने मजबूत जोड़–तोड़ दिमाग के साथ, विषय को अपने पक्ष में मोड़ने और लोगों का ध्यान भटकाने के लिए कुछ टिप्पणियां करती हैं। मुख्य विषय से ध्यान हटाने के लिए राष्ट्रीय विचारो के लोग जो गलती करते हैं, वह यह है कि जाल को समझे बिना, वे उसी तरह टिप्पणी का जवाब देते हैं। इस बात से बेखबर कि प्रतिद्वंद्वी मुद्दे को मोड़ने और बिंदु जीतने के लिए फ़सा रहा है।

राष्ट्रप्रेमियों को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे इस तरह की विचलित करने वाली टिप्पणियों से बचना जारी रखें ताकि पाठकों का ध्यान मुख्य पोस्ट पर फिर से केंद्रित हो सके। राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न मुद्दों को एक समान तरीके से संबोधित किया जा सकता है, और बाकी राष्ट्रप्रेमी लोगो को इसे विभिन्न प्लेटफार्मों पर बिना इस सोच के प्रसारित करना चाहिए कि निर्माता या लेखक को लाभ होगा; राष्ट्र प्रथम रवैया प्रबल होना चाहिए।

चिंता का एक अन्य प्रमुख स्रोत कई राष्ट्रवादियों की समझ की कमी और बिना समझे गुस्सा है। चाहे वह किसी राष्ट्रीय विचारो की सरकार का निर्णय हो या राष्ट्र निर्माण के लिए काम करने वाले किसी संगठन का, शीर्ष नेतृत्व का कोई निर्णय या कोई भाष्य या कोई दर्दनाक घटना। बिना यह जाने कि सरकार या संगठन इस मुद्दे पर काम करना जानता है, कड़ी प्रतिक्रिया दी जाती है क्योंकि वे कई मौकों पर अपने आप को साबित कर चुके हैं। यह मजबूत प्रतिक्रिया उन लोगों को प्रभावित करती है जिनकी मानसिकता कमजोर है या जो इस मुद्दे को लेकर भ्रमित हैं। तोड़ने वाली बाहरी ताकतें इस मानसिकता का फायदा उठाती हैं और उसी के अनुसार विमर्श को आकार देती हैं।

सोशल मीडिया पर बौद्धिक युद्ध अधिक जागरूकता, सतर्कता, उद्देश्य की एकता, एक सक्रिय मानसिकता, नकली कथाओं/विमर्श के खिलाफ अच्छी तरह से परिभाषित और सटीक अनुसंधान, बेहतर पढ़ने और सीखने की आदतों और उन लोगों के लिए प्रशिक्षण के साथ लड़ा जाना चाहिए जो खुद को प्रभावी ढंग से व्यक्त करना चाहते हैं। हमने युद्ध के मैदान में कई लड़ाइयाँ जीती हैं। अब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बौद्धिक युद्ध जीतने का समय आ गया है।

(लेखक ब्लॉगर एवं शिक्षाविद हैं)

ISSN No. 2581-3528

उत्तर प्रदेश में अब बहेगी धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन विकास की बयार

मृत्युंजय दीक्षित

प्रदेश में दोबारा योगी सरकार का गठन होते ही प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपनी कैबिनेट के मंत्रियों के साथ प्रदेश के समग्र विकास का खाका तैयार करने में व्यस्त हो गए हैं तथा प्रतिदिन किसी न किसी विभाग की आगामी सौ दिनों की कार्ययोजना को अंतिम रूप और दिशा निर्देश दे रहे हैं।

मुख्यमंत्री के रूप में योगी आदित्यनाथ के पहले कार्यकाल में भी प्रदेश में धार्मिक–सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के लिए बहुत सी योजनाएं प्रारंभ की गयी थीं, जिनमें अब नए आयाम जोड़कर उनका कायाकल्प और विस्तार किया जा रहा है।

पिछले कार्यकाल में 'एक जिला, एक पर्यटन केंद्र योजना' का आरम्भ हुआ था किन्तु कोविड महामारी सहित कई बाधाओं के कारण यह धरातल पर नहीं उतर सकी। इस योजना को अब धरातल पर उतारा जायेगा। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के समस्त धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पटल पर छा जाएंगे। इससे युवाओं को रोजगार के नये अवसर भी मिलेंगे तथा स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा और प्रदेश की नयी वैश्विक पहचान भी बनेगी। योगी सरकार आने के बाद से अयोध्या में दीपावली के अवसर पर भव्य दीपोत्सव तथा मथुरा– वृंदावन में भव्य होली का आयोजन किया जा रहा है, कांवड़ यात्रा पर जाने वाले यात्रियों पर पुष्पवर्षा हो रही है। प्रदेश में तीर्थस्थलों के विकास के लिए व्यापक योजनाएं बनी हैं जिनके धरातल पर उतरने का समय आ गया है।

योगी सरकार ने अगले सौ दिनों में पर्यटन सम्बन्धी 145 परियाजनाओं का लोकार्पण करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। आगामी सौ दिनों में जनजातीय संग्रहालय का शिलान्यास, अयोध्या में रामायण विश्वविद्यालय के लिए भूमि चयन, प्रयागराज के पांडुलिपि पुस्तकालय में पांडुलिपि रिसोर्स सेंटर की स्थापना का लक्ष्य पूरा करने का संकल्प लिया जा चुका है। योगी जी के नेतृत्व में दोबारा सरकार आने के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जब अयोध्या पहुंचे तब उन्होंने अयोध्या पहुंचकर वहां के सभी मठ–मंदिरों व धर्मशालाओं को टैक्स फ्री कर एक बहुत बड़ा उपहार दिया है। योगी जी की घोषणा के चलते अयोध्या आने वाले सभी रामभक्त श्रद्धालुओं को सस्ती सुविधाएं मिल सकेंगी। बहुत दिनों बाद रामनवमी के अवसर पर अयोध्या में होने वाले राम जन्मोत्सव का दूरदर्शन पर सीधा प्रसारण किया गया।

पर्यटन संस्कृति धर्मार्थ कार्य सूचना और भाषा विभाग ने अपनी योजना का प्रस्तुतीकरण कर दिया है। प्रस्तुतीकरण को देखने के बाद मुख्यमंत्री ने रामायण परंपरा की कल्चरल

मैपिंग कराने का निर्देश भी दिया है। राम वनगमन पथ पर रामायण वीथिकाओं का निर्माण कराया जायेगा। रामायण सर्किट, बुद्ध सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, शक्तिपीठ सर्किट, कृष्ण ब्रज सर्किट, बुंदेलखंड सर्किट, महाभारत सर्किट, सूफी कबीर सर्किट, क्राफ्ट सर्किट, स्वतंत्रता संग्राम सर्किट, जैन सर्किट के काम जल्द पूरा करने के लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं।

श्रद्धालुओं और पर्यटकों की सुविधा के लिए एकीकृत मंदिर सूचना प्रणाली विकसित की जायेगी। इसके तहत मंदिरों का विवरण, इतिहास, रूट मैप आदि की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध हो सकेगी।

सबसे बड़ी बात यह है कि आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रदेश के सभी 75 जिलों के समृद्ध इतिहास से परिचय कराने के लिए 75 पुस्तकों का प्रकाशन कराया जायेगा। प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में गौरव–गैलरी की स्थापना करने पर बल दिया गया है। इस गैलरी में विश्वविद्यालय से संबंधित क्षेत्र के महापुरूषों और ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ी तमाम सामग्री और साहित्य को संग्रहित किया जायेगा। प्रदेश के समग्र विकास का संदेश देने के लिए प्रयागराज, मथुरा, गोरखपुर और वाराणसी में भजन संध्यास्थल का भी निर्माण कराया जायेगा। लखनऊ में महाराज बिजली पासी के किले पर लाइट एंड साउंड शो की शुरूआत आगामी सौ दिनों में कराने का लक्ष्य रखा गया है।

तीर्थयात्रा तथा पर्यटन को सुगम बनाने के लिए प्रदेश के सभी धार्मिक केंद्रो को रेल व हवाई उड़ानों के माध्यम से जोड़ा जा रहा है। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अवस्थापना का विकास किया जा रहा है।

विगत कार्यकाल में योगी सरकार ने 24 जनवरी को उत्तर प्रदेश दिवस की शुरूआत की थी। अब उसी तरह हर जिले का स्थापना दिवस या जिला महोत्सव आयोजित किया जायेगा। यह महोत्सव हर गांव और हर शहर में आयोजित होगा। जब हर गांव व हर शहर का स्थापना दिवस मनाया जायेगा तो वह दिन गौरव बोध का दिन होगा जिससे न सिर्फ हर्ष एवं उल्लास का वातावरण बनेगा अपितु स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक कलाकारों को मंच भी प्राप्त होगा। अयोध्या, मथुरा, काशी, प्रयागराज में एक नयी पर्यटन संस्कृति विकसित हो चुकी है जिसका अब प्रदेश के हर गांव व शहर में विस्तार किया जायेगा और सभी लोग अपने सही व असली इतिहास व संस्कृति से परिचय प्राप्त कर सकेंगे। अयोध्या में हर वर्ष आयोजित होने वाला दीपपर्व इस बात का उदाहरण है कि कैसे कोई एक उत्सव एक जिले को एक सूत्र में बांध देता है।

पर्यटन के विकास से एक जनपद एक उत्पाद को भी नए अवसर मिलेंगे और वोकल फॉर लोकल की परिकल्पना भी जमीनी स्तर पर सशक्त होगी। **(लेखक स्तम्भकार हैं)**

पत्रिका के जून अंक की समीक्षा

केशव संवाद पत्रिका का जून माह का अंक फूलों के एक गुलदस्ते की तरह विभिन्न विषयों को अपने में समाहित करता हुआ काफी प्रभावशाली सिद्ध हुआ। पत्रिका के पहले लेख में वरिष्ठ पत्रकार और मीडिया अध्यापक प्रो (डॉ.) अनिल निगम ने हिन्दू और मुस्लिम समुदायों में आपसी समझ और सतर्कता से आने वाले सौहार्दपूर्ण माहौल की चर्चा की है। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट विष्णु जैन जी ने समान नागरिक संहिता की आवश्यकता के विभिन्न आयामों पर विस्तार से बताया है। तीसरे लेख में वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार श्री प्रमोद भार्गव ने ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वेक्षण के आलोक में मंदिर और मस्जिद के ऐतिहासिक पहलुओं पर बात की है। वहीं वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो. अखिलेश मिश्रा ने श्रीलंका के आर्थिक संकट के कारणों पर अपने लेख में प्रकाश डाला है। प्रो (डॉ.) हरेन्द्र सिंह ने भारत की प्राचीन आध्यात्मिक विरासत कश्मीर के मार्तण्ड मंदिर के इतिहास और महत्व की विस्तार से व्याख्या की है। अर्थशास्त्र की विद्वान वरिष्ठ शिक्षाविद् (डॉ.) प्रियंका सिंह ने वैश्विक शांति के लिए सर्व स्वीकार्य अग्रदूत बनकर उभरते भारत की भूमिका की वैश्विक मंच पर बढ़ती स्वीकारता पर अपनी अंतर्दृष्टि डाली है। सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता श्री प्रशांत त्रिपाठी जी ने अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों में भारत के बढते प्रभाव की चर्चा की है।

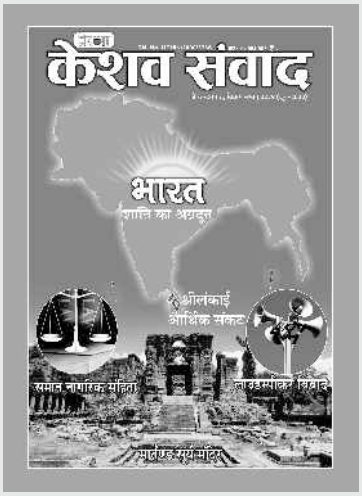

वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. सौरभ मालवीय ने समान नागरिक संहिता के मुस्लिम महिलाओं को मिलने वाले लाभ और सम्मान की बात की है। कश्मीर के पत्थरबाजों के बढ़ते आतंक के मुद्दे को अपने लेख में उठाया है वरिष्ठ पत्रकार अनिता चौधरी ने। वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया ने योगीराज में आदर्श शासन का प्रतिमान बनते उत्तर प्रदेश के विकास की बात की है। वहीं डॉ. प्रताप निर्भय सिंह ने हिन्दू आस्था के प्रति हिंसा पर सेक्युलर खेमे के मौन रहने पर सवाल उठाए हैं। आईआईटी दिल्ली में सीनियर साइंटिस्ट डॉ. आनंद मधुकर ने रुस-यूक्रेन युद्ध के पर्यावरणीय खतरों पर चर्चा की है। एक अन्य लेख में लेखिका मोनिका चौहान जी ने हिन्दी भाषा पर होने वाली राजनीति की व्याख्या की है। युवा पत्रकार प्रतीक खरे ने लाउडस्पीकर के साथ जुड़ी राजनीति के निहितार्थ निकाले हैं। वहीं लेखिका नीलम भागी जी ने योग और संगीत के तनाव दूर करने में योगदान का विश्लेषण किया है। स्वतंत्र पत्रकार आशीष कुमार अंशू ने गोरखनाथ मंदिर परिसर में प्रवेश करते समय पीएसी जवानों पर हमला करने वाले मुर्तजा की साजिश खोलने का प्रयास किया है। वहीं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. वेद प्रकाश शर्मा ने अपने लेख में देश के वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण किया है। साथ ही पत्रिका में अप्रैल-मई की मीडिया सुर्खियों को भी स्थान मिला है।

- संयोजन : अमित शर्मा

जिला सहकारी बैंक लि0 बुलन्दशहर

बैंक की स्थापना 22 अक्टूबर, 1906 में हुई थी, बैंक का कार्यक्षेत्र जनपद बुलन्दशहर व जनपद गौतमबुद्धनगर की जेवर व सदर तहसील तक है। बैंक अपनी 28 शाखाओं व 167 पैक्स समितियों के माध्यम से कृषकों को न्यूनतम ब्याज दर (3 प्रतिशत) की दर से अल्पकालीन फसली ऋण सुविधा उपलब्ध करा रही हैं तथा बैंक के द्वारा ग्राहकों को आर. टी. जी. एस./ एन. ई. एफ. टी ., ए . टी . एम . डेबिट कार्ड, रूपै, केसीसी कार्ड आदि सुविधायें प्रदान की जा रही हैं। बैंक के द्वारा विविधीकरण योजनांतर्गत यथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय योजना वेतनभोगी सहकारी समितियों के माध्यम से ऋण की सुविधा, स्वरोजगार क्रेडिट कार्ड, पी. एम. स्वनिधि योजना, फर्मों की सी. सी. लिमिट आदि सुविधायें प्रदान की जा रही हैं । बैंक की 28 शाखायें पूर्णत: सी. बी. एस. प्लेटफार्म पर कार्य कर रही हैं।

(देवेन्द्र शर्मा)
अध्यक्ष
जिला सहकारी बैंक लि. बुलन्दशहर

1	**निजी पूंजी - बैंक की वर्ष 2017-18 में निजी पूंजी अंकन 11597.03 लाख थी जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर अंकन 16276.33 लाख हो गयी है । इस प्रकार निजी पूंजी में अंकन 4679.30 लाख की वृद्धि हुई है।**
2	**जमा निक्षेप** - बैंक का वर्ष 2017-18 में जमा निक्षेप अंकन 53260.82 लाख था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर अंकन 78861.32 लाख हो गया है। इस प्रकार जमा निक्षेप में अंकन 25600.50 लाख की वृद्धि हुई है।
3	**बारोइंग** - बैंक की वर्ष 2017-18 में बारोइंग अंकन 19265.27 लाख थी जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर अंकन 39238.70 लाख हो गयी है। इस प्रकार बारोइंग में अंकन 19973.43 लाख की वृद्धि हुई है।
4	**लगा ऋण एवं अग्रिम** - बैंक का वर्ष 2017-18 में लगा ऋण एवं अग्रिम अंकन 53950.60 लाख था जो वर्ष 2021-22 में बढकर अंकन 63307.60 लाख हो गया है। इस प्रकार लगा ऋण एवं अग्रिम में अंकन 9357.00 लाख की वृद्धि हुई है।
5	**शुद्ध लाभ** - बैंक का वर्ष 2017-18 में शुद्ध लाभ अंकन 219.70 लाख था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर अंकन 373.48 लाख हो गया है। इस प्रकार शुद्ध लाभ में अंकन 153.78 लाख की वृद्धि हुई है।
6	**कार्यशील पूंजी** - बैंक की वर्ष 2017-18 में कार्यशील पूंजी अंकन 86329.74 लाख थी जो वर्ष 2021-22 में बढकर अंकन 136934.95 लाख हो गयी है। इस प्रकार कार्यशील पूंजी में अंकन 50605.21 लाख की वृद्धि हुई है।
7	**विनियोजन** - बैंक का वर्ष 2017-18 में विनियोजन अंकन 22098.40 लाख था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर अंकन 58978.23 लाख हो गया है। इस प्रकार विनियोजन में अंकन 36879.83 लाख की वृद्धि हुई है।
8	**पैक्स वसूली** - बैंक की वर्ष 2017-18 में पैक्स वसूली अंकन 75.25 प्रतिशत थी जो पैक्स वसूली में लगातार वृद्धि हुई है।
9	**नाबार्ड रेटिंग** - बैंक की नाबार्ड रेटिंग वर्ष 2017-18 व वर्ष 2019-20 में 'A' श्रेणी में रही है ।
10	**सांविधिक रेटिंग** - बैंक की सांविधिक रेटिंग वर्ष 2017-18 से वर्ष 2021-22 तक 'A' श्रेणी में रही है।

(वरुण यादव)
सचिव/मुख्य कार्यपालक अधिकारी
जिला सहकारी बैंक लि. बुलन्दशहर

MADE IN INDIA
Darvi
WHEN RELIABILITY REALLY COUNTS
• MSME, NSIC And ISO 9001:2008 Certified
• A Leading National Level Electro-optical Equipment Manufacturer
• Expert In Security, Surveillance And Maintenance Needs Of Our Clients
THERMAL VISION DEVICES
THERMOGRAPHY DEVICES
DAY OPTICAL DEVICES
NIGHT VISION DEVICES
TAK
TAK TECHNOLOGIES PVT. LTD.
(An ISO 9001:2008 Certified Company)
A-68 & 69, Sector-80, Noida – 201305, Uttar Pradesh, India
Phone: +91–120-4279676/78 Fax: +91-120-4279677
Email : sales@tak-technologies.com
www.tak-technologies.com